जन-जन की वाणी...

हिन्दी दैनिक

# सोन वर्षा वाणी

आरा, औरंगाबाद एवं दुमका से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

• रजि नं. - BIHHIN/2017/72765 • आरा • सोमवार • 5 जनवरी 2026 • वर्ष 10 • अंक 241 • पृष्ठ 12

मूल्य ₹ 2.00

## 2036 ओलंपिक की मेजबानी की तैयारी में पूरी मजबूती से जुटा भारत : प्रधानमंत्री

एजेंसी, वाराणसी

2014 में सत्ता में आने के बाद से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश में खेलों को बढ़ावा देने में लगातार जुटे है। वे सभी खेलों के खिलाड़ी से हमेशा ही निजी तौर पर पीएमओ अपने आवास बुलाकर विजेता टीम के खिलाड़ी या फिर नहीं जीत सके खिलाड़ियों से भी मुलाकात करते है। इस कड़ी में एक बड़ा कदम उठाते हुए पीएम मोदी ने कहा है कि भारत पूरी मजबूती के साथ 2036 ओलंपिक की मेजबानी की तैयारी कर रहा है। वाराणसी में शुरू हुई 72वीं सीनियर राष्ट्रीय वॉलीबॉल चैंपियनशिप के उद्घाटन समारोह से ऑनलाइन जुड़कर प्रधानमंत्री मोदी ने खेलों के क्षेत्र में बीते साढ़े 11 वर्षों में हुए बड़े बदलावों को बताया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बीते एक दशक में भारत ने 20 से अधिक बड़े अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी की है। इसमें फीफा अंडर-17 विश्व कप, हॉकी विश्व कप जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 2030 के राष्ट्रमंडल खेल भी भारत में आयोजित किए जाएंगे, जो देश की खेल क्षमता और बुनियादी ढांचे की मजबूती को दिखाते है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 2030 के राष्ट्रमंडल खेल भारत में होने वाले हैं और भारत पूरी मजबूती से 2036 के ओलंपिक की मेजबानी की भी तैयारी में जुटा है। इसके पीछे हमारा प्रयास है कि देश के ज्यादा से ज्यादा खिलाड़ियों को खेलने के अधिक से अधिक मौके मिलें। उन्होंने दिया कि बड़े आयोजनों से खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव मिलता है, जो उनके प्रदर्शन को नई ऊंचाइयों तक ले जाता है।

इस मौके पर खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज भारत 'रिफॉर्म एक्सप्रेस' पर सवार है। देश का हर क्षेत्र और विकास की हर परिभाषा इससे जुड़ रही है और खेल भी इसका अहम हिस्सा हैं। उन्होंने बताया कि खेलों के क्षेत्र में सरकार ने व्यापक सुधार किए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम और 'खेलो भारत नीति 2025' का जिक्र करते हुए कहा कि इन सुधारों से सही प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिलेगा। इससे खेल संगठनों में पारदर्शिता बढ़ेगी और युवाओं को खेल व शिक्षा दोनों में एक साथ आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा, एक ओर हम मजबूत बुनियादी ढांचा और वित्त पोषण का तंत्र तैयार कर रहे हैं, वहीं युवाओं को बेहतर अनुभव देने पर भी लगातार काम कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि एक समय था जब खेलों को लेकर सरकार और समाज दोनों में उदासीनता थी और बहुत कम युवा खेल को करियर के रूप में अपनाते थे। लेकिन बीते दशक में यह सोच बदली है और अब खेलों को लेकर देश में सकारात्मक माहौल बना है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज देश इसलिए आगे बढ़ रहा है क्योंकि हर नागरिक और हर वर्ग 'इंडिया फर्स्ट' की भावना को लेकर काम कर रहा है। उन्होंने कहा, स्वच्छता से लेकर डिजिटल पेमेंट तक, 'एक पेड़ मां के नाम' से लेकर विकसित भारत अभियान तक हम इसलिए प्रगति कर रहे हैं क्योंकि देश का हर व्यक्ति सामूहिक चेतना के साथ राष्ट्र के लिए काम कर रहा है।

## अनिरुद्धाचार्य का हमला : लोग इन्हें सुपर स्टार बनाते है, जबकि इनका दिल बांग्लादेशियों के लिए धड़कता

एजेंसी, वृंदावन

बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान की टीम कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) द्वारा बांग्लादेशी खिलाड़ी मुस्तफिजुर रहमान को 9 करोड़ में खरीदने के बाद बवाल तेज हुआ है। विरोध प्रदर्शन के बाद बीसीसीआई ने केकेआर को बांग्लादेशी खिलाड़ी को टीम से बाहर करने का आदेश दिया है। वहीं, अब इस मामले पर वृंदावन के मशहूर कथावाचक अनिरुद्धाचार्य महाराज ने अपना विरोध दर्ज करते हुए पूरे बॉलीवुड पर निशाना साधा है। बॉलीवुड को लेकर कथावाचक अनिरुद्धाचार्य ने कहा, बॉलीवुड के लोग खुद को भगवान समझते हैं। उन्हें लगता है कि वे जो भी करें, कोई उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकता क्योंकि बॉलीवुड बहुत ताकतवर है। क्योंकि उनके पास पैसों की कोई कमी नहीं है, इसलिए फिल्मी सितारों में घमंड भरा है कि कोई उन्हें छू नहीं सकता। वे खुलेआम गुटखा और शराब का प्रचार करते हैं। वे समाज को अनैतिकता की शिक्षा देते हैं। वे सिगरेट, गुटखा और जुआ को बढ़ावा देते हैं। क्या सच में कोई उन्हें रोक पाया है? किसने उन्हें नुकसान पहुंचाया है? आप और मेरे जैसे आम लोग क्या कर सकते हैं? बीसीसीआई के फैसले पर अनिरुद्धाचार्य महाराज ने कहा, हम यहां कहते हैं, सह खेलती, खड़ी सखा। जो आपके साथ खेलता है, आपके साथ खाता है, वही मित्र है। हमारा मित्र कौन है? जो हमारे हिंदुओं को जलाता है, जो हमारे सनातनियों को दिनदहाड़े जिंदा मारता है। उन्होंने कहा कि आज ही मैंने एक घटना सुनी कि एक बच्चे को पीट-पीटकर मार डाला गया। जो हमारे हिंदुओं से इतनी नफरत करते हैं, जो हमारे सनातनियों से इतनी नफरत करते हैं, हम उनके साथ क्रिकेट क्यों खेलें? जो खरीददारी कर रहे हैं, उस शख्स से ये सवाल होना चाहिए।

## यूपी में नदियों में वाटर मेट्रो के संचालन की तैयारी में योगी सरकार

**एजेंसी, लखनऊ।** उत्तर प्रदेश में यातायात के एक नए युग की शुरुआत होने वाली है। योगी सरकार में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने हाल ही में कोच्चि मेट्रो के विशेषज्ञों के साथ बैठक कर गोमती नदी में वाटर मेट्रो के संचालन की तकनीकी पर चर्चा की। यह परियोजना मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट का हिस्सा है, जो प्रदेश में जल परिवहन के साथ-साथ पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को भी नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। योगी सरकार की योजना केवल लखनऊ तक सीमित नहीं है। गोमती में सफल परीक्षण के बाद राज्य के अन्य प्रमुख जल निकायों में भी विस्तार दिया जाएगा, जिसमें मथुरा से यमुना नदी पर आगरा तक, गोरखपुर में रामगढ़ ताल, बलिया में सुरहा ताल और गंगा नदी में भी वाटर मेट्रो संचालन की योजना को आगे बढ़ाया जाएगा। तकनीकी पहलू और बुनियादी ढांचा वाटर मेट्रो महज एक नाव नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक से लैस परिवहन व्यवस्था होगी। परियोजना को धरातल पर उतारने से पहले कई जटिल तकनीकी और पर्यावरणीय अध्ययन किए जा रहे हैं।

## गोवा में बिना लाइसेंस के हो रहा था नाइट क्लब का संचालन

**एजेंसी, पणजी।** गोवा के एक नाइट क्लब में हुए अग्निकांड की मजिस्ट्रेट जांच रिपोर्ट सामने आ गई है। जांच में साफ हुआ है कि यह नाइटक्लब न केवल अवैध था, बल्कि अधिकारियों की मिलीभगत से मौत का जाल बनकर चल रहा था। नाइटक्लब का निर्माण एक सॉल्ट पैन (नमक के मैदान) के बीच में किया गया था। मौजूदा कानूनों और कोस्टल जोन रेगुलेशन (सीआरज़ेड) के तहत ऐसी जमीन पर किसी भी तरह का निर्माण पूरी तरह प्रतिबंधित है। क्लब का ट्रेड लाइसेंस 31 मार्च 2024 को ही खत्म हो चुका था। इसके बावजूद, यह दिसंबर 2025 तक अवैध रूप से चलता रहा। पंचायत ने इसे न तो सील किया और न ही अन्य विभागों को इसकी जानकारी दी। लाइसेंस के मूल दस्तावेजों में हाथ से लिखकर हाउस नंबर और बार एंड नाइटक्लब जैसे शब्द बाद में अलग स्याही से जोड़े गए थे। आवेदन फाइल से बिल्डिंग प्लान और लैंड रिकॉर्ड जैसे जरूरी दस्तावेज गायब थे। जिस लाइसेंस को जारी करने में महीनों लगते हैं, उसे दिसंबर 2023 में आवेदन मिलने के महज 5 दिनों के भीतर मंजूरी दे दी गई।

## 'आफ्टर पार्टी' के बाद महिला मैनेजर से किया गैंगरेप, आरोपी गिरफ्तार

**एजेंसी, जयपुर।** राजस्थान के उदयपुर जिले के सुखेर थाना क्षेत्र में एक महिला मैनेजर से गेंगरेप का मामला सामने आया। यह मामला 'आफ्टर पार्टी' जैसे शब्दों के पीछे छिपे खतरनाक सच को उजागर करता है। महिला मैनेजर द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर के मुताबिक, पीड़िता एक निजी कंपनी में मैनेजर के पद पर कार्यरत है। 20 दिसंबर को कंपनी के सीईओ की बर्थडे और न्यू ईयर पार्टी का आयोजन शोभागपुरा स्थित एक होटल में किया गया था। पीड़िता रात करीब 9 बजे पार्टी में पहुंची। पार्टी देर रात तक चली और करीब 1:30 बजे कार्यक्रम औपचारिक रूप से समाप्त हुआ। पार्टी में कंपनी के सीईओ के साथ महिला एग्जीक्यूटिव हेड और उसका पति भी मौजूद थे। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि पार्टी के दौरान देर रात उसकी तबीयत बिगड़ने लगी और वह बेहोशी जैसी हालत में आ गई। इसी बीच कुछ लोग उसे घर छोड़ने की बात करने लगे, लेकिन तभी महिला एग्जीक्यूटिव हेड ने 'आफ्टर पार्टी' का प्रस्ताव रखा और उसे उसमें शामिल होने के लिए कहा। एफआईआर के अनुसार, रात करीब 1:45 बजे पीड़िता को कार में बिठाया गया। कार में पहले से ही सीईओ और महिला एग्जीक्यूटिव हेड का पति मौजूद था। तीनों ने उसे घर छोड़ने का भरोसा दिलाया।

## बाहुबली मुन्ना शुक्ला की बिगड़ी तबीयत, आईजीआईएमएस में कराया गया भर्ती

एजेंसी, पटना

पटना के बेऊर जेल में बंद बाहुबली विजय कुमार शुक्ला उर्फ मुन्ना शुक्ला की तबीयत अचानक बिगड़ गई है। उन्हें पटना के इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (आईजीआईएमएस) में भर्ती किया गया है। मुन्ना शुक्ला बृजबिहारी हत्याकांड मामले में फिलहाल जेल में बंद है। जेल अधीक्षक के अनुसार, मुन्ना शुक्ला को आंख के रेटिना से जुड़ी परेशानी हुई थी। इसी कारण उन्हें भागलपुर जेल से पहले बेऊर जेल शिफ्ट किया गया और बाद में बेहतर इलाज के लिए आईजीआईएमएस में भर्ती कराया गया। उनका मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया जाना है और डॉक्टरों की निगरानी में इलाज जारी है। करीब 15 दिन पहले मुन्ना शुक्ला ने आंख में दर्द की शिकायत की थी। इसके बाद भागलपुर में

उनका प्राथमिक इलाज कराया गया, लेकिन स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने मुन्ना शुक्ला को पटना रेफर करने की सलाह दी। इसके बाद जेल प्रशासन ने उन्हें पटना शिफ्ट किया। पूर्व मंत्री बृज बिहारी प्रसाद हत्याकांड में मुन्ना शुक्ला सजायाफ्ता है। इस मामले में उच्च न्यायालय ने उन्हें दोषी करार देते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई थी।

## ट्रेनों में अब बायोडिग्रेडेबल थाली में मिलेगा खाना

एजेंसी, नई दिल्ली

भारतीय रेलवे एक बड़ा बदलाव करने वाला है। आईआरसीटीसी ने वंदे भारत, बेंगलुरु राजधानी और शताब्दी के लिए एक नई पहलू शुरू की है। इन ट्रेनों में अब स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल बायोडिग्रेडेबल थाली का इस्तेमाल होगा। वंदे भारत, शताब्दी और बेंगलुरु राजधानी ट्रेन में अब लोग प्लास्टिक प्लेट की जगह बायोडिग्रेडेबल थाली में खाना दिया जाएगा। इससे हर महीने 50,000 से ज्यादा थालियों में 300 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक की बचत की होगी। दरअसल आईआरसीटीसी लगातार ट्रेन में प्लास्टिक मुक्त परिसर बनाने पर काम कर रही है। इसी कदम को आगे बढ़कर अब भारतीय रेलवे प्लास्टिक प्लेट में खाना सर्व करना भी बंद करने वाली है।

## भीषण ठंड के चलते पटना में कक्षा आठ तक के सभी स्कूल 08 जनवरी तक बंद

एजेंसी, पटना

बिहार में ठंड का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। राजधानी पटना सहित कई जिलों में जारी कड़ाके की ठंड और लगातार गिरते तापमान को देखते हुए जिला प्रशासन ने छात्रों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए बड़ा फैसला लिया है। पटना जिलाधिकारी ने आदेश जारी कर जिले के सभी निजी एवं सरकारी विद्यालयों (प्री-स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र सहित) में कक्षा 8 तक की सभी शैक्षणिक गतिविधियों पर आगामी 8 जनवरी तक के लिए अस्थायी रूप से रोक लगा दी है। पटना जिलाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम की ओर से जारी

आदेश में स्पष्ट किया गया है कि यह रोक भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा-163 के तहत लगाया गई है। आदेश के मुताबिक कक्षा 8 तक की पढ़ाई पर 8 जनवरी तक रोक रहेगी। कक्षा 8 से ऊपर की कक्षाओं की शैक्षणिक गतिविधियां सुबह 10:30 बजे से शाम 3:30 बजे के बीच ही संचालित की जा सकेंगी। जिला प्रशासन ने स्कूल प्रबंधन को निर्देश दिया है कि वे आदेश के अनुरूप अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों को पुनर्निर्धारित करें और इसका सख्ती से पालन सुनिश्चित करें। हालांकि, आदेश में यह भी साफ किया गया है कि प्री-बोर्ड या बोर्ड परीक्षाओं के लिए संचालित विशेष कक्षाएं और परीक्षाएं इस प्रतिबंध से मुक्त रहेंगी। यानी जिन कक्षाओं या छात्रों की बोर्ड परीक्षाएं प्रस्तावित हैं, उनके लिए परीक्षा संबंधी गतिविधियां यथावत जारी रह सकेंगी। प्रशासन का कहना है कि इस छूट का उद्देश्य छात्रों की शैक्षणिक क्षति को न्यूनतम रखना है, जबकि सामान्य कक्षाओं में पढ़ने वाले छोटे बच्चों को ठंड से बचाया जा सके।

## यमन के मसले पर सउदी अरब और यूएई में तनातनी

एजेंसी, गल्फ

खाड़ी देश सऊदी अरब और यूएई दोनों एक दूसरे के दुश्मन बनते दिख रहे हैं। यमन के मसले पर इन दोनों देशों में तनातनी चल रही है। मंगलवार को सऊदी अरब ने यमन में यूएई से जुड़े हथियारों की खेप पर हवाई हमला कर दिया। यमन के दक्षिणी बंदरगाह शहर मुकल्ला पर सऊदी की आर्मी ने बमबारी की। हालात इस कदर हो गए हैं कि यमन की सऊदी समर्थित सरकार ने यूएई की सेना को देश छोड़ने के लिए 24 घंटे का अल्टीमेटम दे दिया है। इसके बाद यूएई ने भी अपनी सेना को वापस बुला लिया। यूएई के रक्षा मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा है कि वह यमन से अपनी बची सैन्य मौजूदगी को भी खत्म कर देगा। यूएई जब से अस्तित्व में आया, तभी से सऊदी अरब उसका समर्थक रहा है।

## त्रिशूर रेलवे स्टेशन की पार्किंग में भीषण आग: 200 से अधिक दोपहिया वाहन जलकर राख

एजेंसी, त्रिशूर

केरल के त्रिशूर रेलवे स्टेशन पर रविवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हुआ, जिसमें प्लेटफॉर्म नंबर 2 के पास स्थित पार्किंग स्टैंड में भीषण आग लग गई। इस अग्निकांड में पार्किंग में खड़े 200 से अधिक दोपहिया वाहन पूरी तरह जलकर खाक हो गए। सुबह करीब 6:45 बजे लगी इस आग ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया, जिससे पूरे स्टेशन परिसर और आसपास के इलाकों में अफरा-तफरी और दहशत का माहौल बन गया।

घटनास्थल पर मौजूद लोगों के अनुसार, आग पार्किंग के एक हिस्से से शुरू हुई और वाहनों में ईंधन मौजूद होने के कारण लपटें तेजी से फैलती गईं। आमतौर

पर इस पार्किंग क्षेत्र में 500 से अधिक मोटरसाइकिलें और स्कूटर खड़े रहते हैं। आग की तीव्रता इतनी अधिक थी कि कुछ ही मिनटों में करोड़ों रुपये की संपत्ति स्वाहा हो गई। सूचना मिलते ही दमकल और बचाव दल की गाड़ियां मौके पर पहुँचीं। दमकलकर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद लगभग आधे घंटे में आग पर काबू पाया, हालांकि तब तक भारी नुकसान हो चुका था। आग बुझने के काफी देर बाद तक इलाके में घना धुआं छाया रहा, जिससे यात्रियों को सांस लेने में कठिनाई हुई। इस हादसे का सबसे दुखद पहलू उन यात्रियों के लिए रहा जो रोजाना ट्रेन से सफर करते हैं और अपने वाहन स्टेशन पर पार्क करके जाते हैं।

## 56 इंच का है तो पाकिस्तान में छिपे 26/11 के मास्टर माइंड को उठा लाना चाहिए: ओवैसी

एजेंसी, नई दिल्ली

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को अमेरिकी सेना द्वारा हिरासत में लिए जाने और उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका ले जाए जाने की घटना ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के साथ-साथ भारत के घरेलू राजनीतिक गलियारों में भी हलचल पैदा कर दी है। इस वैश्विक घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोला है। मुंबई में आयोजित एक जनसभा के दौरान ओवैसी ने अमेरिकी कार्रवाई का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री को सीधे तौर पर चुनौती दी।

ओवैसी ने अपने संबोधन में कहा कि यदि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सेना वेनेजुएला जैसे देश में घुसकर वहां के राष्ट्रपति को पकड़कर अमेरिका ला सकती है, तो भारत सरकार को भी ऐसी ही दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री के 56 इंच के सीने वाले बयान पर कटाक्ष करते हुए कहा कि भारत को पाकिस्तान में छिपे उन आतंकवादियों के खिलाफ इसी तरह की कार्रवाई करनी चाहिए जो 26/11 के मुंबई आतंकी हमलों के मास्टरमाइंड हैं।

ओवैसी ने मसूद अजहर और लश्कर-ए-तैयबा जैसे संगठनों का नाम लेते हुए कहा कि यदि ट्रंप अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए दूसरे देश में सैन्य ऑपरेशन कर सकते हैं, तो भारत सरकार को भी पाकिस्तान जाकर इन अपराधियों को उठाकर लाना चाहिए। यह राजनीतिक बयानबाजी उस सैन्य अभियान के बाद शुरू हुई है जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति ने शनिवार को वेनेजुएला पर एक बड़े हमले की पुष्टि की। अमेरिकी सेना ने राजधानी काराकास और उसके आसपास के क्षेत्रों में तीव्र ऑपरेशन चलाया, जिसके परिणामस्वरूप निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस को हिरासत में ले लिया गया।

## वेनेजुएला पर कार्रवाई ड्रग्स या डेमोक्रेसी की नहीं, यह तेल को लेकर ट्रंप की दबंगई

- अमेरिका की पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने की राष्ट्रपति ट्रंप की आलोचना

एजेंसी, वाशिंगटन

वेनेजुएला पर अमेरिका ने हमला करने के बाद राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हिरासत में लिया है। अमेरिकी फोर्स मादुरो को लेकर न्यूयॉर्क पहुंच गई है और अब वहां उनके खिलाफ आपराधिक मुकदमा चलाया जाएगा। वेनेजुएला के खिलाफ इस तरह की कार्रवाई को लेकर अमेरिका की पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की जमकर आलोचना की। हैरिस ने ट्रंप की कार्रवाई को गैरकानूनी,

खतरनाक और राष्ट्रीय हित के बजाय राजनीतिक महत्वाकांक्षा से प्रेरित बताया। एक्स पर पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने चेतावनी दी कि इस कदम से इलाके में अस्थिरता का खतरा है और साथ ही अमेरिकी लोगों की जान और संसाधन भी दांव पर लग सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कमला हैरिस ने जनता को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए एक्स पर लिखा- वेनेजुएला में डोनाल्ड ट्रंप के कामों से अमेरिका सुरक्षित, मजबूत या सस्ता नहीं बनता है। भले ही मादुरो एक क्रूर और तानाशाह है, लेकिन इससे ये बात नहीं बदलती कि यह गैर-कानूनी और बेवकूफी भरा कदम था। हमने यह पहले भी देखा है कि सत्ता बदलने या तेल के लिए की जाने वाली लड़ाइयां ताकत से शुरू होती हैं, लेकिन बाद में अराजकता में बदल जाती हैं और अमेरिकी परिवार इसकी कीमत चुकाते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे कामों के लिए जनता का समर्थन कम मिलता है। अमेरिकी लोग यह नहीं चाहते हैं, और वे झूठ बोले जाने से थक चुके हैं। हैरिस ने तर्क दिया कि ऑपरेशन के पीछे की वजह को जानबूझकर तोड़-मरोड़कर पेश की गई है। हैरिस ने कहा कि यह ड्रग्स या डेमोक्रेसी के बारे में नहीं है। यह तेल और ट्रंप की दबंगई है। अगर उन्हें इनमें से किसी की भी परवाह होती, तो वे किसी दोषी ड्रग ट्रैफिकर को माफ नहीं करते या मादुरो के साथियों के साथ डील करते हुए वेनेजुएला के जायज विपक्ष को नजरअंदाज नहीं करते।

## संक्षिप्त समाचार

### सत्तरकटैया : लालगंज में जलाए गए अलाव, ग्रामीणों ने ली राहत की सांस

**सहरसा।** कड़ाके की ठंड और पछुआ हवाओं के कारण जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है।गिरते तापमान और भीषण शीतलहर को देखते हुए सहरसा जिला प्रशासन अब एक्शन मोड में है। इसी क्रम में जिला पदाधिकारी के निर्देशानुसार सत्तरकटैया प्रखंड के अंतर्गत बारा पंचायत के लालगंज ग्राम वार्ड संख्या 12 में जनहित को ध्यान में रखते हुए अलाव की व्यवस्था की गई है। लालगंज स्थित पाठक दरवाजा के निकट सार्वजनिक स्थल पर प्रशासन द्वारा अलाव जलवाया गया। जैसे ही अलाव की लपटें उठीं, आसपास के ग्रामीणों और राहगीरों की भारी भीड़ वहां जमा हो गई। हाड़ कंपाने वाली ठंड से ठिठुर रहे बुजुर्गों और बच्चों ने अलाव तापकर राहत महसूस की। स्थानीय ग्रामीणों ने जिला प्रशासन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस भीषण ठंड में अलाव ही एकमात्र सहारा है। वहीं दूसरी ओर जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शीतलहर के प्रकोप को देखते हुए जिले के सभी महत्वपूर्ण चौक-चौराहों, अस्पतालों और सार्वजनिक स्थलों पर अलाव की निरंतर व्यवस्था की जा रही है। जिलाधिकारी दीपेश कुमार के आदेशानुसार आगामी सात जनवरी तक दसवीं तक के सभी निजी एवं सरकारी स्कूल में पठन पाठन कार्य स्थगित रहेगा। अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में अलाव की उपलब्धता की निगरानी करें ताकि कोई भी व्यक्ति ठंड की चपेट में न आए।प्रशासन ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे अत्यंत आवश्यक होने पर ही घर से बाहर निकलें और गर्म कपड़ों का प्रयोग करें। विशेषकर बुजुर्गों और बच्चों के प्रति अतिरिक्त सावधानी बरतने की सलाह दी गई है।

### सिमरी बख्तियारपुर : नगर परिषद की योजनाओं में नियमों की अनदेखी

**सहरसा।** नगर परिषद सिमरी बख्तियारपुर में इन दिनों विकास योजनाओं के नाम पर सरकारी नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। "राम नाम की लूट है, लूट सको तो लूट" की तर्ज पर यहाँ कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जहाँ पारदर्शिता का नामोनिशान नहीं है। कार्यस्थल पर सूचना पट (योजना बोर्ड) गायब होने से आम लोगों को न तो बजट का पता है और न ही कार्य की गुणवत्ता का। भौरहा वार्ड संख्या 09 में रेलवे ढाला से गांव की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर पुराने सोलिंग को उखाड़ने का काम चल रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, करीब 24 लाख की लागत से यहाँ पीसीसी सड़क का निर्माण होना है। यह कार्य 'रविन्द्र ट्रेडर्स' को मिला है, जिसने कथित तौर पर 35 प्रतिशत कम दर पर टेंडर लिया है। सूचना पट न होने से ग्रामीण इस बात को लेकर आशंकित हैं कि इतनी कम दर पर ठेकेदार कार्य की गुणवत्ता से समझौता करेगा। बरहकुरबा वार्ड संख्या 08 में कलमी इंस्टीट्यूट की ओर जाने वाली सड़क पर नाला निर्माण का कार्य हो रहा है। बताया जा रहा है कि यह कार्य नगर परिषद के माध्यम से किया जा रहा है। यहां भी योजना से संबंधित जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है।पारदर्शिता की कमी पर चिंता

सरकारी नियमों के अनुसार, किसी भी निर्माण कार्य स्थल पर एक सूचना पट लगाना अनिवार्य होता है, जिस पर परियोजना का नाम, लागत, ठेकेदार का नाम और कार्य पूरा होने की समय-सीमा जैसी जानकारी अंकित होती है। सिमरी बख्तियारपुर नगर परिषद क्षेत्र में कई विकास कार्यों में इस नियम का पालन नहीं किया जा रहा है, जिससे परियोजनाओं की पारदर्शिता पर सवाल उठ रहे हैं। इस संबंध में नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी रामविलास दास ने बताया कि

"सभी ठेकेदारों को यह निर्देश दिया गया है कि वे कार्य स्थल पर अनिवार्य रूप से सूचना पट लगाएं। यदि कहीं सूचना पट नहीं पाया जाता है, तो इसकी जांच की जाएगी और संबंधित ठेकेदारों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।" स्थानीय नागरिक उम्मीद कर रहे हैं कि प्रशासन द्वारा पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम उठाए जाएंगे और सभी विकास कार्यों की जानकारी सार्वजनिक की जाएगी।

### आयुष हत्याकांड : सात महीने बाद भी पुलिस के हाथ खाली

**सहरसा।** सत्तर कटैया प्रखंड के सिहौल गांव के होनहार छात्र आयुष कुमार की हत्या के सात महीने बीत जाने के बाद भी न्याय न मिलने से आक्रोशित परिजनों ने अब आर-पार की लड़ाई का मन बना लिया है। स्थानीय पुलिस की कार्यशैली से असंतुष्ट पीड़ित परिवार पिछले तीन दिनों से सिहौल में आमरण अनशन पर बैठा है। अनशन पर बैठी आयुष की माता नीतू कुमारी ने सिसकते हुए कहा, "मेरे इकलौते बेटे को हमसे छीने सात महीने हो गए, लेकिन प्रशासन अब तक अंधेरे में तीर चला रहा है। समय पर न्याय न मिलना एक और अन्याय है।" उन्होंने जिला प्रशासन से दोषियों की अविलंब गिरफ्तारी की गुहार लगाई है। मृतक के पिता अंशु मिश्रा ने स्थानीय जांच प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा कि अब उन्हें बिहार पुलिस या स्थानीय प्रशासन पर भरोसा नहीं रह गया है। सच्चाई सामने लाने के लिए इस पूरे मामले की सीबीआई से उच्चस्तरीय जांच कराई जानी चाहिए। अनशन स्थल पर पहुंचे सामाजिक कार्यकर्ता टिंकू मैथिल ने इस स्थिति को लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि एक लाचार मां-बाप को अपने बेटे के न्याय के लिए जान की बाजी लगानी पड़ रही है, जो प्रशासन की विफलता का प्रमाण है। अनशन स्थल पर आयुष के समर्थन में मुन्ना सिंह, पप्पू सिंह, मिंटू सिंह, अंकुश वत्स, पिक्कू मिश्रा, नीरज झा, छोटू सिंह और नयन सिंह सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक मामले का खुलासा नहीं होता और दोषियों को सजा नहीं मिलती, यह आंदोलन जारी रहेगा।

### भागवानपुर में कुश्ती दंगल का भव्य आगाज

### महिला और पुरुष पहलवानों के दांव -पेंच देख झूम उठे दर्शक

**बनमा ईटहरी (सहरसा)।** प्रखंड के भागवानपुर गांव में पौषी पूर्णिमा के पावन अवसर पर दो दिवसीय भव्य कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रविवार को प्रतियोगिता के पहले दिन अखाड़े में पहलवानों की जोर-आजमाइश देखने के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा। आलम यह था कि दूर-दराज के इलाकों से आए कुश्ती प्रेमियों की भीड़ से पूरा खेल परिसर खचाखच भरा नजर आया। दंगल प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन पूर्व प्रखंड प्रमुख रमेश चंद्र यादव, ईटहरी मुखिया प्रतिनिधि पवन यादव, मेला कमेटी के अध्यक्ष रामचंद्र यादव एवं सत्यनारायण यादव ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर अतिथियों ने कहा कि कुश्ती हमारी प्राचीन संस्कृति का हिस्सा है और ऐसे आयोजनों से ग्रामीण प्रतिभाओं को मंच मिलता है।

**महिला पहलवानों ने जीता दिलः** मैदान में उस समय रोमांच चरम पर पहुंच गया जब पुरुष पहलवानों के बाद महिला पहलवानों ने अखाड़े में कदम रखा। अपनी फुर्ती, तकनीक और गजब के आत्मविश्वास के साथ जब महिला पहलवानों ने विरोधियों को पटखनी दी, तो पूरा अखाड़ा तालियों और नारों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।दर्शकों ने महिला सशक्तिकरण के इस रूप की जमकर सराहना की।

**ग्रामीण खेल संस्कृति को मिल रहा बढ़ावाः** आयोजन समिति के सदस्यों ने बताया कि इस दंगल का मुख्य उद्देश्य युवाओं में खेलों के प्रति रुचि जगाना और स्थानीय खेल संस्कृति को जीवित रखना है। उद्घाटन सत्र के दौरान पूर्व मुखिया राजकुमार रंजन, पैक्स अध्यक्ष बिजेंद्र यादव, सुभाष कुमार, चंदन कुमार, डॉ. बालकिशोर सिंह सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। आयोजकों के अनुसार, प्रतियोगिता के दूसरे दिन और भी कड़े और रोमांचक मुकाबले होने की उम्मीद है, जिसके लिए विशेष तैयारी की गई है।

# जलवायु परिवर्तन के दौर में किसानों का सशक्तिकरण, नाबार्ड और महिला विकास समिति की अनूठी पहल

निज संवाददाता। रजौली

भविष्य की खेती और पर्यावरण के बदलते मिजाज को देखते हुए रजौली क्षेत्र के किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण ज्ञानवर्धक 'प्रदर्शन परिभ्रमण कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), पटना द्वारा प्रायोजित और महिला विकास समिति, चमरबिगहा (रजौली) के मार्गदर्शन में संचालित 'जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम' के अंतर्गत यह आयोजन संपन्न हुआ। इस विशेष पहल के तहत ग्राम पंचायत फरका बुजुर्ग के अंतर्गत आने वाले विभिन्न गांवों जैसे फरका बुजुर्ग, बिराज, चमरबिगहा, धामुचक और अम्बातारी के कुल 120 प्रगतिशील किसानों को एक दिवसीय 'प्रदर्शन परिभ्रमण सह प्रशिक्षण कार्यक्रम' के लिए चुना गया। इन सभी किसानों को सुरक्षित वाहनों के माध्यम से कौआकोल स्थित 'कृषि विज्ञान केंद्र, शेखोदेउरा' ले जाया गया, जहां उन्हें आधुनिक खेती की व्यावहारिक जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित इस प्रशिक्षण के दौरान कृषि जगत के जाने-माने वैज्ञानिकों, जिनमें डॉ. रविकान्त चौबे, डॉ. रौशन कुमार, डॉ. अनिल कुमार और सुमिताभ रंजन शामिल थे, इन्होने किसानों के साथ सीधा संवाद किया। परिभ्रमण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को विभिन्न फसलों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधारोपण की वैज्ञानिक विधियों तक की बारीकियां समझाईं। कार्यक्रम का मुख्य केंद्र 'मृदा व जल संरक्षण एवं क्षमता विकास' रहा, जिसके अंतर्गत किसानों को जल संवर्धन और कुशल सिंचाई प्रणालियों के महत्व से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान समय

किसानों को जलवायु परिवर्तन के बारे में जानकारी देते नाबार्ड के लोग

में जैविक खेती ही एकमात्र विकल्प है, इसीलिए किसानों को जैविक खाद के निर्माण, अजोला उत्पादन और गौ-मूत्र के उपयोग के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित कीटनाशकों के निर्माण व प्रयोग का सजीव प्रदर्शन भी दिखाया गया।

प्रशिक्षण सत्र के दूसरे चरण में आधुनिक कृषि यंत्रों और तकनीकों की विस्तृत जानकारी मुहैया कराई गई ताकि किसान अपनी क्षमता का विकास कर कृषि लागत को कम और मुनाफे को बढ़ा सकें। इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में महिला विकास समिति की सचिव लीला कुमारी ने मुख्य भूमिका निभाई। उनके साथ संस्था के कार्यक्रम प्रभारी सह लेखापाल अनिल कुमार, वरिष्ठ कार्यकर्ता शंकर दयाल सिंह और क्रियान्वयन समिति के अध्यक्ष रामलखन राजवंशी ने भी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित किया। कार्यक्रम के समापन पर सचिव गोपाल सिंह, गंगोत्री देवी और जनार्दन प्रसाद सहित कई गणमान्य लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर किसानों का उत्साहवर्धन किया और इस सफल कार्यक्रम के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

## सरौनी मुखिया ने सैकड़ों जरूरतमंदों के बीच किया कम्बल का वितरण

निज संवाददाता। कौआकोल

प्रखण्ड के सरौनी पंचायत भवन में रविवार को सरौनी पंचायत के मुखिया पंकज कुमार यादव के द्वारा सैकड़ों गरीब व असहाय लोगों के बीच कंबल का वितरण किया गया। सादे समारोह में शिविर लगाकर मुखिया ने पंचायत के विभिन्न गांवों के 500 से अधिक जरूरतमंद लोगों को कंबल मुहैया कराया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी उनके द्वारा निजी खर्च से जरूरतमंदों के बीच कम्बल का वितरण किया गया। भीषण ठंढ में कम्बल पाकर लोगों के चेहरे खिल उठे एवं लोगों ने मुखिया के प्रति आभार जताया। मौके पर मौजूद समाजसेवी विकास सम्राट उर्फ विकास यादव ने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। उन्होंने इस कार्य के लिए मुखिया पंकज यादव की सराहना भी किया। मौके पर सुधीर यादव, सुरेश प्रसाद यादव, मुंद्रिका यादव, दानीलाल पंडित, शमीम अंसारी, मंटू यादव, विकास पण्डित, रामजतन कुमार, रौशन मियां आदि मौजूद थे।

## मोहीउद्दीनपुर में आपदा पीड़ितों हेतु विधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

निज संवाददाता। वारिसलीगंज

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार, नई दिल्ली एवं बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना के निर्देश के आलोक में विद्वान प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, नवादा सुश्री शिल्पी सोनीराज के मार्गदर्शन तथा श्री धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार, नवादा के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार, नवादा द्वारा दिनांक 04 जनवरी 2026 को वारिसलीगंज प्रखंड के मोहीउद्दीनपुर ग्राम पंचायत स्थित सामुदायिक भवन परिसर में आपदा पीड़ितों को विधिक सहायता एवं उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन जिला विधिक सेवा प्राधिकार, नवादा के लीगल एड डिफेंस कॉन्सिल श्री अमन जैन, पी०एल०वी० श्री अश्विनी कुमार, मोहीउद्दीनपुर ग्राम पंचायत के मुखिया एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।अपने संबोधन में लीगल एड डिफेंस कॉन्सिल श्री अमन जैन ने बताया कि आपदा पीड़ितों को विधिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु विधिक सेवा प्राधिकार का गठन नालसा के निर्देशानुसार किया गया है। उन्होंने कहा कि आपदा पीड़ितों के लिए जिला प्रशासन के सहयोग से विधिक सेवा प्राधिकार के माध्यम से मुआवजा एवं अन्य कानूनी सहायता का प्रावधान है, जिसका लाभ पात्र आपदा पीड़ित प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने उपस्थित जनप्रतिनिधियों से अपील की कि वे अपने-अपने क्षेत्र के आपदा पीड़ितों को विधिक सेवा प्राधिकार से जोड़ने में सहयोग करें, ताकि उनका किसी भी प्रकार का शोषण न हो सके तथा उन्हें उनके विधिक अधिकारों की समुचित जानकारी मिल सके।

कार्यक्रम के दौरान प्रखंड के पदाधिकारी, कर्मचारी, ग्राम पंचायत मोहीउद्दीनपुर के मुखिया प्रभु प्रसाद लीगल एड डिफेंस कॉन्सिल श्री अमन जैन एवं पी०एल०वी० श्री अश्विनी कुमार ने वर्तमान समय में आम जनमानस को कानून की जानकारी उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उपस्थित जनप्रतिनिधियों से आग्रह किया गया कि वे क्षेत्र के आपदा पीड़ितों एवं जरूरतमंदों को कानूनी सहायता उपलब्ध कराने में सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

# बंगाली बाजार आरओबी निर्माण का विधायक ने किया निरीक्षण

निज संवाददाता। रसहरसा

शहर की लाइफलाइन माने जाने वाले बंगाली बाजार रेलवे ढाला पर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के कार्य में तेजी आ गई है। रविवार को स्थानीय विधायक ई. आई. पी. गुप्ता ने निर्माण स्थल का औचक निरीक्षण किया और चल रहे कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्माण की गुणवत्ता से कोई समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस मौके पर राजद नेता रंजीत यादव, ई. कौशल यादव, गोपाल साह सहित कई स्थानीय कार्यकर्ता और गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

**30 पिलर का फाउंडेशन तैयार, कार्य जोरों परः** विगत तीन महीनों से श्री खाटू श्याम कंस्ट्रक्शन द्वारा आरओबी का निर्माण कार्य युद्धस्तर पर चलाया जा रहा है। अब तक आरओबी के लिए निर्धारित 30 पिलर का फाउंडेशन तैयार हो चुका है, जबकि मनोहर उच्च विद्यालय के समीप एक पिलर की ढलाई का कार्य

### गुणवत्ता और विस्थापन के मुद्दे पर दी चेतावनी

भी पूर्ण कर लिया गया है। विधायक ने मनोहर स्कूल से लेकर बंगाली बाजार, शंकर चौक और डीबी रोड तक पैदल मार्च कर वस्तुस्थिति देखी।

**विस्थापित होने के डर से सहमे व्यवसाई, विधायक ने दिया भरोसाः** निरीक्षण के दौरान स्थानीय व्यवसायियों ने अपनी चिंताएं विधायक के सामने रखीं। दुकानदार गोपाल कुमार सहित अन्य व्यापारियों ने कहा कि वे जाम से मुक्ति के लिए ब्रिज निर्माण का स्वागत करते हैं, लेकिन उनके सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। व्यवसायियों ने मांग की कि विस्थापित होने वाले दुकानदारों को कम से कम 5 फीट की जगह मुहैया कराई जाए। इस पर विधायक गुप्ता ने आश्वासन देते हुए कहा, "छोटे व्यापारियों को उजड़ने नहीं दिया जाएगा। उनके परिवार के भरण-पोषण के लिए हर संभव सहयोग सुनिश्चित किया जाएगा।"

**नई तकनीक और जमीन अधिग्रहण पर विधायक के तीखे बोलः** विधायक श्री गुप्ता ने निरीक्षण के बाद कहा कि वे निर्माण प्रक्रिया में और बेहतरी की गुंजाइश तलाश रहे हैं। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि जमीन अधिग्रहण के लिए करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, जबकि यदि आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल होता, तो आधी राशि में ही बिना किसी अधिग्रहण के पुल तैयार किया जा सकता था। उन्होंने अधिकारियों और ठेकेदारों को सख्त लहजे में कहा कि गुणवत्ता के मामले में उन्हें कोई 'सेट' नहीं कर सकता।

**यातायात व्यवस्था सुचारू करने पर जोरः** निर्माण कार्य के कारण शहर में लग रहे भीषण जाम पर चिंता व्यक्त करते हुए विधायक ने कहा कि निर्माण अवधि के दौरान वैकल्पिक मार्ग की सख्त आवश्यकता है। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि लोगों को परेशानी से बचाने के लिए जल्द से जल्द सुगम वैकल्पिक रास्ते सुनिश्चित किए जाएं।

## खलिहान में चप्पल पहन कर जाने से उपजा विवाद, लोहे की खंती से सिर पर हमला, जांच में जुटी पुलिस

अस्पताल में घायल का इलाज करते चिकित्सक व पुलिस बल

निज संवाददाता। रजौली

थाना क्षेत्र के फरका बुजुर्ग पंचायत के मोहकामा गांव में बीते शनिवार की देर शाम धान के खलिहान में चप्पल पहनकर जाने से उपजे विवाद में दो महिलाओं ने एक पुरुष के सिर पर लोहे की खंती से वार कर दिया।इस घटना में पुरुष लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा।परिजनों द्वारा डायल 112 की टीम को सूचना देकर बुलाया गया।डायल 112 की टीम एवं परिजनों की सहायता से घायल व्यक्ति को इलाज हेतु अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया।अस्पताल में ड्यूटी में रहे चिकित्सक डॉ. अनुज कुमार ने बताया कि घायल व्यक्ति की पहचान मोहकामा गांव निवासी पारहो यादव के पुत्र शंकर यादव के रूप में हुई है।घायल व्यक्ति के सिर में गम्भीर चोटें आई है,जिसका प्राथमिक इलाज कर जरूरी सुई व दवाई दिया गया है।वहीं अस्पताल परिसर में मौजूद घायल शंकर यादव की पत्नी रेखा देवी ने बताई उसके खेत में बने धान के खलिहान में गांव के ही मनोहर यादव की पत्नी रुबिया देवी और मां मीणा देवी चप्पल पहनकर आई थी,जिसे हमारे पति द्वारा मना किया गया।इसी को लेकर विवाद हुआ और रुबिया देवी ने लोहे की खंती से सिर पर मारकर गम्भीर रूप से घायल कर दिया।पीड़ित शंकर यादव ने कहा कि घटना को लेकर लिखित शिकायत थाना को दिया गया है।इस संबंध में थानाध्यक्ष सह इंस्पेक्टर रंजीत कुमार ने बताया कि पीड़ित द्वारा आवेदन प्राप्त हुआ है।पुलिस मामले की पड़ताल में जुटी हुई है।

## नवादा इप्टा का 19वां जिला सम्मेलन एक फरवरी को

निज संवाददाता। कौआकोल

प्रखण्ड के पांडेयगंगौट गांव में रविवार को वरिष्ठ रंगकर्मी नरेंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से नवादा इप्टा का 19 वां जिला सम्मेलन एक फरवरी 2026 को गया सिंह स्मृति धर्मशाला,पांडेयगंगौट में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि इप्टा के 19 वां जिला सम्मेलन में जिसमें जिले के दर्जनों प्रतिनिधि, साहित्यकार, कलाकार और रंगकर्मी शामिल होंगे। वरिष्ठ साहित्यकार व संस्कृतिकर्मी नरेंद्र प्रसाद सिंह ने कहा कि इप्टा हमेशा से अपनी कलात्मक प्रदर्शनों से जनता की आवाज बनती रही है। उन्होंने कहा कि इप्टा सम्मेलन के माध्यम से जनता के बीच में भाईचारे का पैगाम स्थापित करेगा। बैठक को संबोधित करते हुए सचिव चन्द्रमौलि कुमार ने कहा कि यह सम्मेलन लोक संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन की एक महत्वपूर्ण कड़ी होगी। वक्ता उत्तम कुमार ने बताया कि कौआकोल की धरती सांस्कृतिक-साहित्यिक व स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधाओं की भूमि रही है। मौके पर बैठक में रत्नेश राज, सूर्यदेव शर्मा, मनोज कुमार, रामदेव राम, भूषण सिंह, रामनरेश कुमार, सहदेव पासवान, आनंद किशोर राज, रामाश्रय महाराज सहित अन्य लोग मौजूद थे।

## शिक्षक अधिकारों के पुरोधा और जननायक ब्रजनन्दन शर्मा का निधन, शिक्षक जगत में शोक की लहर

निज संवाददाता। रजौली

बिहार के शिक्षक आंदोलन के आधार स्तंभ और पुराने शिक्षकों को उनके सम्मान एवं अधिकारों की प्राप्ति हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले महान नेता ब्रजनन्दन शर्मा 4 जनवरी 2026 को पंचतत्व में विलीन हो गए। उनके निधन की सूचना मिलते ही न केवल नवादा जिले के रजौली प्रखंड में, बल्कि संपूर्ण बिहार प्रदेश के शिक्षक जगत में शोक की गहरी लहर दौड़ गई। जैसे ही यह समाचार शिक्षकों तक पहुंचा, पुराने और नए सभी वर्गों के शिक्षकों के साथ-साथ शिक्षक प्रतिनिधियों की आँखें अपने प्रिय नेता के बिछड़ने के गम में नम हो गईं।रजौली प्रखंड के वरिष्ठ शिक्षक नेता अजित कुमार ने उनके योगदान को याद करते हुए भावुक स्वर में कहा कि आज बिहार के शिक्षकों ने अपना एक सच्चा संरक्षक खो दिया है। शिक्षक नेता ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि वर्ष 1994 और 1999 बैच तक के शिक्षकों को सरकार से उनके उचित अधिकार दिलाने में ब्रजनन्दन शर्मा की भूमिका ऐतिहासिक और अतुलनीय रही है। वह एक ऐसे विरल व्यक्तित्व

> ♦ वह एक ऐसे विरल व्यक्तित्व थे, जिन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद भी विश्राम को त्याग कर अंतिम समय तक शिक्षक समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए खुद को झोंक दिया था

थे, जिन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद भी विश्राम को त्याग कर अंतिम समय तक शिक्षक समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए खुद को झोंक दिया था।

उनकी सक्रियता और संघर्ष का ही परिणाम है कि आज विभिन्न श्रेणियों के शिक्षक राज्यकर्मी के दर्जे सहित कई अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों का लाभ उठा पा रहे हैं।ब्रजनन्दन शर्मा का संपूर्ण जीवन शिक्षक समाज के प्रति कृतज्ञता और सेवा का एक जीवंत उदाहरण रहा है। उनके संघर्षों के कारण ही आज हजारों परिवार सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं। उनके निधन को बिहार के शैक्षणिक और सामाजिक इतिहास में एक ऐसी अपूरणीय क्षति माना जा रहा है, जिसकी भरपाई निकट भविष्य में संभव नहीं दिखती। वे न केवल एक नेता थे, बल्कि हर उस शिक्षक के लिए प्रेरणापुंज थे जो अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना चाहता था। उनके जाने से जो रिक्तता पैदा हुई है, उसे केवल उनके पदचिन्हों पर चलकर ही कम किया जा सकता है।इस दुःखद घड़ी में रजौली के शिक्षक नेता अजित कुमार ने एक औपचारिक बयान जारी कर बिहार प्रदेश के समस्त प्रधानाध्यापकों, प्रधान शिक्षकों और सभी कोटि के शिक्षकों से एक विशेष अपील की है। उन्होंने विनम्र प्रार्थना की है कि कल, सोमवार 5 जनवरी को विद्यालय के चेतना सत्र के दौरान एक विशेष शोक सभा का आयोजन किया जाए। इस सभा के माध्यम से न केवल शिक्षक, बल्कि छात्र भी उस महान आत्मा को अपना सम्मान अर्पित करें, जिन्होंने शिक्षा और शिक्षकों की मर्यादा के लिए आजीवन संघर्ष किया। ऐसा करके ही शिक्षक समाज अपने इस महान जननायक के प्रति आंशिक रूप से अपना ऋण उतार पाएगा। पूरा शिक्षक समाज आज उन्हें अपनी सादर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके महान कार्यों को इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में दर्ज मानता है।

## संक्षिप्त समाचार

### सहरसा : छह किलो गांजा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार, मोटरसाइकिल व मोबाइल बरामद

**सहरसा।** बिहार में नशाबंदी कानून को सख्ती से लागू करने के लिए मद्यनिषेध एवं उत्पाद विभाग द्वारा चलाए जा रहे सघन जांच अभियान के तहत सहरसा पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। विभाग ने रविवार को छापेमारी कर छह किलो गांजा के साथ दो युवकों को रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से तस्करी में प्रयुक्त एक टीवीएस अपाचे मोटरसाइकिल और मोबाइल फोन भी जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार, उत्पाद निरीक्षक संजीत कुमार के नेतृत्व में टीम रविवार को शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गश्ती पर थी। इसी दौरान गंगजला ढाला रेलवे रैक पॉइंट के पास संदिग्ध अवस्था में एक मोटरसाइकिल पर सवार दो युवकों को रुकने का इशारा किया गया। तलाशी लेने पर उनके पिट्ठू बैग से छह किलो अवैध गांजा बरामद हुआ। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान विक्रम कुमार, पिता कपिलदेव भगत, निवासी- बटराहा (वार्ड संख्या 36), सहरसा एवं सुरेंद्र कुमार, पिता बिंदेश्वरी ठाकुर, निवासी- भपटियाही, जिला सुपौल के रूप में हुई है। उत्पाद निरीक्षक संजीत कुमार ने बताया कि दोनों अभियुक्तों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की सुसंगत धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। इस सफल छापेमारी टीम में एएसआई अविनाश कुमार, एएसआई बौआ लाल राय सहित उत्पाद विभाग के अन्य सशस्त्र बल शामिल थे। विभाग ने स्पष्ट किया है कि नशे के कारोबार के खिलाफ इस तरह का अभियान आगे भी जारी रहेगा।

### सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का विधायक ने किया औचक निरीक्षण

**सौरबाजार/सहरसा।** सामुदायिक स्वास्थ केंद्र का शनिवार रात सहरसा विधायक इंद्रजीत प्रसाद गुप्ता ने औचक निरीक्षण किया। स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे विधायक ने निरीक्षण के क्रम में स्वास्थ केंद्र के मरीजों से विभिन्न जानकारी ली। इसके साथ ही पंजीयन काउंटर, दवा वितरण कक्ष, प्रसव कक्ष का निरीक्षण किया। दवा का स्टॉक की जानकारी लेकर ओपीडी संचालन कि स्थिति को भी जांचा गया। उन्होंने सबसे पहले ओपीडी में बैठकर मरीजों से बातचीत की और इलाज, दवाओं की उपलब्धता तथा अन्य सुविधाओं के बारे में डाक्टरों से विस्तार जानकारी लिये। मरीजों ने अपनी समस्याएं साझा करते हुए चिकित्सकों की कमी की ओर भी ध्यान दिलाया। विधायक ने प्रसूति वार्ड, इमरजेंसी, दवा वितरण कक्ष और स्वास्थ्य केंद्र परिसर के सभी वार्डों का निरीक्षण किया। उन्होंने साफ-सफाई व्यवस्था पर विशेष कर स्वास्थ्यकर्मियों को आवश्यक दिशा - निर्देश दिए। विधायक ने गरीब लोगों को कंबल वितरण किए तथा दवाई काउंटर वाले रूम में जाकर निरीक्षण किए। निरीक्षण के बाद विधायक इंद्रजीत प्रसाद गुप्ता ने अस्पताल कर्मियों से संसाधनों और संचालन व्यवस्था के बारे में जानकारी लेते हुए स्पष्ट कहा कि किसी भी परिस्थिति में मरीजों की सेवा में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना सरकार और प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है, और इसके लिए सभी कर्मचारियों को पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य करना होगा। निरीक्षण के दौरान चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे। इसके अलावे पूरे स्वास्थ केंद्र में स्वच्छता को सख्ती बरतने का निर्देश दिया गया। मौके पर उपस्थित राजद नेता रंजीत यादव, पप्पू भगत ,अवधेश यादव, सुनील यादव, शंभू यादव, श्रीकांत यादव, अरविंद यादव, मो हासिम, प्रेमचंद साह, रौशन यादव, विरेन्द्र कुमार, मुकेश यादव, नीरज कुमार अन्य सैकड़ों लोग मौजूद थे।

# पेंशनरों की समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग, विधायक ने दिया आश्वासन

निज संवाददाता। मसौढ़ी

नगर मुख्यालय के रामनगर मोहल्ला स्थित पेंशनर भवन में रविवार को बिहार पेंशनर समाज, शाखा मसौढ़ी द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पेंशनर समाज के अध्यक्ष अर्जुन प्रसाद ने की, जबकि संचालन प्रो. सुबोध कुमार सिन्हा ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक अरुण मांझी, पूर्व मुख्य पार्षद पंकज प्रभु एवं स्थानीय वार्ड पार्षद उर्वशी कुमारी द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया।

सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए पेंशनर समाज के सचिव रमाकांत रंजन किशोर ने कहा कि पेंशनर समाज बुद्धिजीवियों का एक सशक्त संगठन है, जिसमें विभिन्न सरकारी संस्थाओं से सेवा निवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उन्होंने बताया कि मसौढ़ी स्थित पेंशनर भवन का निर्माण वर्ष 2010-11 में हुआ था, जिसकी भूतल की निचली सतह अब काफी जर्जर हो चुकी है। बैठक में पेंशनर समाज की ओर से स्थानीय विधायक से पेंशनर भवन की मरम्मत कर उसके सौंदर्यीकरण के साथ-साथ एक पुस्तकालय की स्थापना की मांग की गई। इसके अलावा बैंकों में वृद्धजनों एवं दिव्यांगों के लिए विशेष काउंटर की व्यवस्था करने की मांग भी रखी गई, ताकि पेंशनरों को अनावश्यक कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

सम्मान समारोह के दौरान पेंशनर समाज ने यह संकल्प भी लिया कि संगठन के सभी सदस्य प्रत्येक माह कम से कम एक पौधा लगाएंगे, जिससे पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया जा सके। इस अवसर पर पेंशनर समाज की ओर से मुख्य अतिथि विधायक अरुण मांझी को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। विधायक अरुण मांझी ने पेंशनरों को संबोधित करते हुए कहा कि पेंशनर समाज की सभी जायज मांगों को पूरा करने का हर संभव प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वे केवल विधायक के रूप में नहीं, बल्कि मसौढ़ी के बेटे के रूप में सेवा करेंगे। साथ ही उन्होंने आश्वासन दिया कि बैंकों में पेंशनरों, वृद्धजनों एवं दिव्यांगों के लिए विशेष काउंटर की व्यवस्था को लेकर संबंधित अधिकारियों से शीघ्र बातचीत की जाएगी। इस मौके पर बिहार पेंशनर समाज, शाखा मसौढ़ी के उपाध्यक्ष श्यामनंदन सिंह, दिनेश चंद्रवंशी, युगल किशोर सिंह, सुरेश प्रसाद, उपेंद्र पंडित, अजय कुमार सहित कई अन्य सदस्य एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

## नशे में युवक ने पत्नी पर किया चाकू से हमला, थाने के गेट पर परिजनों का हंगामा

निज संवाददाता। मसौढ़ी

मसौढ़ी थाना परिसर उस समय अफरा-तफरी का केंद्र बन गया, जब एक नशेड़ी युवक के परिजनों ने थाने के गेट पर जमकर हंगामा किया। मामला पत्नी पर चाकू से हमला करने का बताया जा रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मसौढ़ी थाना क्षेत्र के मणिचक मोहल्ला निवासी सतेंद्र कुमार के पुत्र सन्नी कुमार ने नशे की हालत में अपनी पत्नी पर चाकू से हमला कर उसे घायल कर दिया। घटना के बाद परिजनों ने आरोपी युवक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

परिजनों का आरोप है कि पुलिस अभिरक्षा के दौरान आरोपी युवक फरार हो गया, जिसके बाद वे थाने के गेट पर विरोध जताने लगे। हंगामे के कारण कुछ समय के लिए थाना परिसर में तनावपूर्ण स्थिति बनी रही। इस संबंध में सतेंद्र कुमार ने बताया कि उनका पुत्र लंबे समय से नशे का आदी है और इसी हालत में उसने अपनी पत्नी पर हमला किया। उन्होंने कहा कि आरोपी को खुद पुलिस को सौंपा गया था, लेकिन बाद में उसके फरार होने की सूचना मिली।

वहीं थानाध्यक्ष विवेक भारती ने बताया कि पत्नी पर चाकू से हमला किए जाने की सूचना मिली थी। आरोपी युवक नशे की हालत में था और उसे पुलिस अभिरक्षा में लिया गया है। मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस का कहना है कि पूरे घटनाक्रम की जांच की जा रही है और दोषी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

## बिहटा में फ्लोर मिल हादसा: काम के दौरान गिरने से मजदूर की मौत, मालिक फरार

निज संवाददाता। पटना

बिहटा थाना क्षेत्र के खेदलपुरा गांव के समीप स्थित एक फ्लोर मिल में काम के दौरान हुए हादसे में एक मजदूर की जान चली गई। घटना तिरुपति बालाजी फ्लोर मिल की है, जहां शनिवार देर रात ड्यूटी के दौरान मजदूर अचानक गिर पड़ा और गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक की पहचान पालीगंज थाना क्षेत्र के लालगंज सेहरा गांव निवासी सुदेश्वर यादव के पुत्र रितेश कुमार के रूप में हुई है। बताया गया कि रितेश बीते छह वर्षों से उक्त फ्लोर मिल में हेल्पर के रूप में कार्यरत था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मिल में काम के दौरान रितेश अचानक असंतुलित होकर नीचे गिर गया। साथ काम कर रहे अन्य मजदूरों ने उसे तत्काल बिहटा स्थित ईएसआईसी अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही इलाके में अफरा-तफरी मच गई। घटना के बाद फ्लोर मिल के मालिक और वहां मौजूद अन्य कर्मचारी मौके से फरार हो गए।

मृतक के भाई सनी कुमार ने बताया कि सुबह फोन के जरिए उन्हें हादसे की जानकारी मिली। सूचना मिलने के बाद परिवार के लोग बिहटा थाना पहुंचे और पुलिस के साथ फ्लोर मिल गए, लेकिन वहां कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति मौजूद नहीं था। इसके बाद पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए दानापुर अस्पताल भेज दिया। सनी कुमार ने कहा कि रितेश अपने परिवार का एकमात्र सहारा था। उसके चार छोटे बच्चे हैं, जो अब बेसहारा हो गए हैं। उन्होंने फ्लोर मिल प्रबंधन से मुआवजा देने की मांग की है, ताकि परिवार का भरण-पोषण हो सके। बिहटा थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि फ्लोर मिल में मजदूर की मौत की सूचना मिलने पर पुलिस और एफएसएल की टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू की गई है। शव का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। थानाध्यक्ष के अनुसार, फिलहाल मृतक के परिजनों की ओर से कोई लिखित आवेदन प्राप्त नहीं हुआ है। आवेदन मिलने के बाद नियमानुसार आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

## रूपसपुर ओवरब्रिज पर दर्दनाक हादसा, हाईवा से टकराई इनोवा क्रिस्टा, युवक की मौत

निज संवाददाता। पटना

दानापुर के रूपसपुर ओवरब्रिज पर शनिवार देर रात तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला। हाईवा और इनोवा क्रिस्टा कार की भीषण टक्कर में कार चालक की मौत हो गई। हादसा इतना भयावह था कि इनोवा क्रिस्टा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और चालक कार के अंदर ही फंस गया। मृतक की पहचान जगदेव पथ निवासी 22 वर्षीय निकेत आनंद के रूप में हुई है। गंभीर रूप से घायल अवस्था में उसे पटना के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया प्राप्त जानकारी के अनुसार रूपसपुर ओवरब्रिज पर एक हाईवा आगे की ओर जा रहा था। इसी दौरान पीछे से तेज गति में आ रही इनोवा क्रिस्टा ने हाईवा में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर के बाद ओवरब्रिज पर अफरा-तफरी मच गई और देखते ही देखते लोगों की भीड़ जमा हो गई। बताया जा रहा है कि हादसे के समय कार में मृतक के कुछ दोस्त भी सवार थे, जो दुर्घटना के बाद मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही रूपसपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। थानाध्यक्ष शशि भूषण सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम ने काफी प्रयास के बाद क्षतिग्रस्त कार से चालक को बाहर निकाला और एम्बुलेंस की मदद से अस्पताल भेजा। हादसे की जानकारी मिलते ही मृतक के परिजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त हाईवा को जब्त कर लिया है और उसके चालक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। मामले की जानकारी आगे की कार्रवाई के लिए यातायात थाना को भी दे दी गई है। मृतक के भाई नवीन कुमार ने शास्त्रीनगर थाना में लिखित आवेदन देकर किसी भी प्रकार की कानूनी कार्रवाई और पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया है। इस हादसे ने एक बार फिर शहर में तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने के खतरे को उजागर कर दिया है। देर रात ओवरब्रिज पर हुए इस हादसे के बाद कुछ समय तक यातायात भी प्रभावित रहा। पुलिस मामले से जुड़े सभी पहलुओं की जांच में जुटी हुई है।

## पटना के खुशरूपुर में 3 अपराधी गिरफ्तार

निज संवाददाता। पटना

राजधानी में अपराध और अवैध शराब कारोबार पर नकेल कसने के लिए चल रहे अभियान के तहत पटना पुलिस को एक अहम सफलता मिली है। खुशरूपुर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर धोवा नदी के किनारे छापेमारी कर हथियारों से लैस तीन अपराधियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का मानना है कि सभी आरोपी किसी बड़ी वारदात की फिराक में एकत्र हुए थे। खुशरूपुर थानाध्यक्ष संजीव कुमार सिंह को शनिवार देर रात सूचना मिली थी कि लोदीपुर टॉल प्लाजा के समीप धोवा नदी किनारे कुछ अपराधी और शराब कारोबार से जुड़े लोग हथियारों के साथ जमा हैं। सूचना में आशंका जताई गई थी कि ये लोग किसी गंभीर अपराध या अवैध गतिविधि को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। सूचना को गंभीरता से लेते हुए थानाध्यक्ष के नेतृत्व में एक विशेष पुलिस टीम गठित की गई और तत्काल इलाके की घेराबंदी कर छापेमारी शुरू की गई। पुलिस टीम को देखते ही बदमाशों में अफरा-तफरी मच गई, लेकिन सतर्कता के चलते तीनों को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया। पकड़े गए आरोपियों की पहचान कायमपुर गांव निवासी कुंदन कुमार (22), रहीश कुमार (21) और संतोष कुमार (25) के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान पुलिस ने इनके पास से दो देशी कट्टा, पांच जिंदा कारतूस और तीन फायर किए गए खोखे बरामद किए हैं। फतुहा एसडीपीओ-2 संजीव कुमार ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्तों में कुंदन कुमार और रहीश कुमार पहले से खुशरूपुर थाना कांड संख्या 522/25 में नामजद हैं। ताजा बरामदगी के आधार पर खुशरूपुर थाना में कांड संख्या 07/26 दर्ज कर शस्त्र अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार, यह कार्रवाई अपराधियों और अवैध शराब नेटवर्क पर करारा प्रहार है। गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ के आधार पर गिरोह के अन्य सदस्यों, हथियारों के स्रोत और संभावित आपराधिक योजनाओं की जांच की जा रही है। इस छापेमारी अभियान में थानाध्यक्ष संजीव कुमार सिंह के साथ पीएसआई अशोक कुमार, एएसआई संजय कुमार सिंह सहित खुशरूपुर थाना के सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

## अपराधी के घर से देसी कट्टा बरामद

निज संवाददाता। पालीगंज (पटना)

### आरोपी कोहरे का फायदा उठाकर फरार

पटना पश्चिमी क्षेत्र में अपराध नियंत्रण को लेकर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत दुल्हिनबाजार थाना पुलिस ने एक बड़ी आपराधिक साजिश को समय रहते नाकाम कर दिया है। गुप्त सूचना के आधार पर की गई छापेमारी में पुलिस ने एक अपराधी के घर से अवैध हथियार और जिंदा कारतूस बरामद किया है। हालांकि, छापेमारी के दौरान आरोपी कोहरे का फायदा उठाकर फरार होने में सफल रहा। पटना पश्चिम सिटी एसपी भानु प्रताप सिंह ने बताया कि दुल्हिनबाजार थाना पुलिस को सूचना मिली थी कि थाना क्षेत्र के डुमरी गांव निवासी सोनू कुमार के पास अवैध हथियार मौजूद है और वह किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की तैयारी में है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए थानाध्यक्ष के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। पुलिस टीम ने आरोपी के घर पर अचानक छापेमारी की, जहां तलाशी के दौरान एक देसी कट्टा और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। एसपी के अनुसार, छापेमारी के समय इलाके में घना कोहरा छाया हुआ था और अंधेरा भी बढ़ रहा था। इसी का फायदा उठाकर आरोपी सोनू कुमार पुलिस को चकमा देकर मौके से फरार हो गया। फिलहाल उसकी गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर लगातार छापेमारी की जा रही है। पुलिस आरोपी के आपराधिक इतिहास की भी गहनता से जांच कर रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह पहले किन-किन मामलों में संलिप्त रहा है। पटना पश्चिम सिटी एसपी ने बताया कि पूरे पश्चिमी पटना क्षेत्र में ऑपरेशन जखीरा के तहत अवैध हथियारों की बरामदगी और अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस का स्पष्ट संदेश है कि अपराध और अपराधियों के खिलाफ किसी भी स्तर पर कोई ढील नहीं दी जाएगी। इसी क्रम में पालीगंज थाना पुलिस ने भी गुप्त सूचना के आधार पर हत्या के एक मामले में वर्षों से फरार चल रहे आरोपी अखिलेश मोची को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस उससे पूछताछ कर उसके नेटवर्क और अन्य मामलों में संलिप्तता की जानकारी जुटा रही है।

### कड़ाके की ठंड से बच्चों की सुरक्षा को लेकर सख्त हुआ प्रशासन

## पटना में कक्षा 8 तक के स्कूल 8 जनवरी तक बंद

निज संवाददाता। पटना

बिहार में जारी शीतलहर और लगातार गिरते तापमान ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। राजधानी पटना समेत कई जिलों में सुबह-शाम गलन और ठंड का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है। इसी को देखते हुए जिला प्रशासन ने छात्रों, खासकर छोटे बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए बड़ा और सख्त निर्णय लिया है। पटना जिला दंडाधिकारी त्यागराजन एस.एम. के आदेश के अनुसार जिले के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों में कक्षा 8 तक की शैक्षणिक गतिविधियों पर अस्थायी रूप से रोक लगा दी गई है। इस आदेश में प्री-स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र भी शामिल हैं। यह आदेश 4 जनवरी 2026 से प्रभावी होगा और 8 जनवरी 2026 तक लागू रहेगा। जिला प्रशासन की ओर से जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि यह प्रतिबंध भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा-163 के तहत लगाया गया है। प्रशासन का कहना है कि अत्यधिक ठंड और शीतलहर से छोटे बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है, जिसे देखते हुए यह एहतियाती कदम उठाया गया है। हालांकि, कक्षा 9 से ऊपर के विद्यार्थियों के लिए पूर्ण रूप से स्कूल बंद नहीं किए गए हैं। इन कक्षाओं की शैक्षणिक गतिविधियां अब सुबह 10:30 बजे से दोपहर 3:30 बजे के बीच ही संचालित की जा सकेंगी। पहले यह समय सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक था, जिसे अब ठंड को देखते हुए संशोधित किया गया है। जिला प्रशासन ने सभी स्कूल प्रबंधन को निर्देश दिया है कि वे आदेश के अनुरूप अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों का पुनर्निर्धारण करें और इसका सख्ती से पालन सुनिश्चित करें।

**प्री-बोर्ड और बोर्ड परीक्षाएं रहेंगी जारी:** आदेश में यह भी साफ किया गया है कि प्री-बोर्ड और बोर्ड परीक्षाओं से संबंधित कक्षाएं और परीक्षाएं इस प्रतिबंध से मुक्त रहेंगी। यानी जिन छात्रों की बोर्ड परीक्षाएं प्रस्तावित हैं, उनकी तैयारी और परीक्षा संबंधी गतिविधियां पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जारी रह सकेंगी। प्रशासन का मानना है कि इससे छात्रों की शैक्षणिक क्षति को न्यूनतम रखा जा सकेगा।

# राजीवनगर में लूट की साजिश नाकाम, डायल 112 की तत्परता से दो बदमाश गिरफ्तार, पिस्टल बरामद

निज संवाददाता। पटना

राजीवनगर इलाके में चेन स्नैचिंग और मोबाइल लूट की लगातार बढ़ रही घटनाओं के बीच पुलिस को अहम सफलता हाथ लगी है। शनिवार को डायल 112 की टीम ने हॉलिडे होम के समीप लूट की योजना बना रहे दो बदमाशों को दबोच लिया। पकड़े गए आरोपियों के पास से एक पिस्टल भी बरामद की गई है।

**लूट की नीयत से सड़क किनारे खड़े थे बदमाश:** पुलिस के अनुसार, शनिवार को हॉलिडे होम के पास दो युवक संदिग्ध हालत में सड़क किनारे खड़े थे। इसी दौरान नेपाली नगर रोड नंबर-3 स्थित चंद्र बिहार कॉलोनी निवासी गंगाधर कुमार वहां से गुजर रहे थे। बदमाशों ने उन्हें रोककर पिस्टल के बल पर मोबाइल छीनने का प्रयास किया, लेकिन गंगाधर किसी तरह मौके से भाग निकले। आगे बढ़ने पर उन्हें घुड़दौड़ मोड़ के पास सीआरपीएफ कैंप के समीप गश्त कर रही डायल 112 की टीम दिखाई दी। गंगाधर ने पुलिस वाहन को रोककर पूरी घटना की जानकारी दी।

**पुलिस को देखते ही भागने लगे बदमाश:** सूचना मिलते ही डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस वाहन को देखते ही दोनों बदमाश भागने लगे। पुलिसकर्मियों ने पीछा कर एक युवक को मौके पर पकड़ लिया, जबकि दूसरा भागने में सफल रहा। एसडीपीओ लॉ एंड ऑर्डर-2 मुहिबुल्ला अंसारी ने बताया कि पकड़े गए युवक की तलाशी लेने पर उसके पास से एक पिस्टल बरामद हुई। पूछताछ में उसने अपना नाम नीरज कुमार बताया।

**निशानदेही पर दूसरा आरोपी भी गिरफ्तार:** नीरज कुमार की निशानदेही पर पुलिस ने उसके साथी आर्यन उर्फ राहुल राज को घुड़दौड़ मोड़ इलाके से गिरफ्तार कर लिया। दोनों को राजीवनगर थाना लाया गया, जहां आगे की कार्रवाई की जा रही है।

**डायल 112 टीम की सतर्कता से टली वारदात:** इस कार्रवाई में डायल 112 के सिपाही पीटीसी उदय सिंह की सूझबूझ और तत्परता की अहम भूमिका रही। उनके आवेदन पर राजीवनगर थाना में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अब दोनों आरोपियों के आपराधिक इतिहास की जांच कर रही है।

## संक्षिप्त समाचार

### मारपीट की सम्भावना होने पर चार लोगों को पुलिस ने एसडीएम कोर्ट के समक्ष किया प्रस्तुत

**राजपुर।** आपसी विवाद में दो पक्षों के बीच मारपीट की प्रबल संभावना एवं विधि व्यवस्था भंग होने की स्थिति में शनिवार को स्थानीय पुलिस ने क्षेत्र के सखरा टोला निवासी चार लोगों को हिरासत में ले एसडीओ कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया गया. जानकारी देते हुए थाना अध्यक्ष उलुम सलमा ने बताया कि शिवशंकर सिंह,रमेश सिंह,मुन्ना सिंह एवं ललन सिंह को विधि व्यवस्था भंग किये जाने एवं मारपीट किए जाने की प्रबल सम्भावना को देखते हुए बॉड हेतु एसडीओ कोर्ट भेजा गया.

### काराकाट पुलिस ने दो आरोपियों को किया गिरफ्तारः ट्रैक्टर टायर चोरी और पुराने मामले में हुई कार्रवाई

**काराकाट /रोहतास।** रोहतास जिले के काराकाट थाना क्षेत्र में पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया। इसके बाद दोनों को जेल भेज दिया गया। यह कार्रवाई पुलिस के छापामारी अभियान के तहत की गई है। थाना अध्यक्ष विवेक कुमार ने बताया कि पहला मामला ट्रैक्टर टायर चोरी से संबंधित है। काराकाट थाने में दर्ज कांड संख्या 272/25 के आरोपी ओम प्रकाश सिंह उर्फ नन्हक सिंह को पुलिस ने मझरियां गांव से गिरफ्तार किया। ओम प्रकाश सिंह जंगी सिंह के पुत्र हैं। आरोपी ओम प्रकाश सिंह पर दुकान पर लगे ट्रैक्टर के टायर चुराने का आरोप था। उसे गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से जेल वारंट जारी होने के बाद उसे जेल भेज दिया गया। दूसरा मामला वर्ष 2024 के पुराने कांड संख्या 276/24 से जुड़ा है। इस मामले में फरार चल रहे आरोपी अनिल कुमार सिंह को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया। अनिल कुमार सिंह कुरुर गांव निवासी जमुना यादव के पुत्र हैं। न्यायालय के निर्देश पर उन्हें भी जेल भेज दिया गया है। थाना अध्यक्ष विवेक कुमार ने कहा कि पुलिस टीम लगातार सक्रिय है और शेष फरार अपराधियों को भी जल्द ही पकड़ लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि गश्ती को और तेज कर दिया गया है ताकि आपराधिक गतिविधियों पर प्रभावी ढंग से अंकुश लगाया जा सके। विवेक कुमार ने आमजन से अपील की कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना पुलिस को दें, जिससे अपराध नियंत्रण में मदद मिलेगी। रोहतास पुलिस जिले को अपराधमुक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। स्थानीय लोगों ने इन पुलिस कार्रवाइयों की सराहना की है।

### मोथा पैक्स हुआ डिफाल्टर मुक्त, होगी धान की खरीद

**काराकाट /रोहतास।** प्रखंड के डिफाल्टर रहे पांच पैक्सों में एसे मोथा पैक्स द्वारा बकाया राशि जमा कर देने से धान खरीद के लिए चयन की प्रक्रिया प्रशासनिक स्तर पर शुरू कर दी गई है। बाकी चार पैक्सों को दूसरे पैक्स से टैग करने की अनुशंसा बीसीओ द्वारा की गई है। प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी राजकुमार के अनुसार मोथा, बुढ़वल, सोनवर्षा, अमौना व सकला पैक्स डिफाल्टर हैं। इनमें मोथा पैक्स अध्यक्ष कामेश्वर सिंह के द्वारा बकाया राशि जमा कर अनापत्ति प्रमाण पत्र भी उपलब्ध करा दिया गया है। चयन की प्रक्रिया पूरी होते ही धान खरीद की स्वीकृति मिल जाएगी। साथ ही कैश क्रेडिट भी हो जाएगा। शेष डिफाल्टर पैक्स को अन्य संचालित पैक्सों के साथ टैग करने की अनुशंसा कर जिलाधिकारी से की गई है।मोथा पैक्स के किसानों ने पैक्स अध्यक्ष कामेश्वर सिंह को धन्यवाद दिया है जिनके कारण डिफाल्टर से मुक्त हुआ

### बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजनंदन शर्मा का निधन, शिक्षकों में शोक की लहर

**मोतिहारी।** बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजनंदन शर्मा के असामयिक निधन से प्रदेश भर के शिक्षकों में गहरा शोक व्याप्त है। उनके निधन की खबर मिलते ही शिक्षक संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षा जगत से जुड़े लोगों ने गहरी संवेदना व्यक्त की है।परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार की राज्य एवं जिला कार्यकारिणी के सदस्यों ने दिवंगत नेता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इसे शिक्षक समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया है।महासंघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नवनीत कुमार एवं प्रदेश संगठन महामंत्री शिशिर कुमार पांडेय ने संयुक्त रूप से शोक व्यक्त करते हुए कहा कि "ब्रजनंदन शर्मा जी आजीवन शिक्षकों के अधिकार, सम्मान और हितों के लिए संघर्षरत रहे। उनका जाना शिक्षक आंदोलन के लिए एक गहरी क्षति है, जिसकी भरपाई निकट भविष्य में संभव नहीं है।वहीं प्रदेश अध्यक्ष (शारीरिक शिक्षक प्रकोष्ठ) अशोक कुमार एवं प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने अपने शोक संदेश में कहा कि "स्व. ब्रजनंदन शर्मा जी एक सरल, संघर्षशील और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता थे। उन्होंने संगठन को मजबूती देने के साथ-साथ शिक्षकों की आवाज़ को मजबूती से सरकार तक पहुँचाया। उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

### चोकर लदे ट्रक में बने तहखाने से 100 पेटी विदेशी शराब बरामद।चालक गिरफ्तार, गया जेल

**मोतिहारी।** उत्पाद थाना मधुबन को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। गुप्त सूचना के आधार पर पकड़ीदयाल थाना क्षेत्र स्थित ढाका रोड पर छापेमारी कर चोकर लदे छह चक्का ट्रक के अन्दर बने विशेष तहखाने से करीब 100 पेटी कुल मात्रा 864 लीटर 4800 पीस टेट्रा पैक आफिसर च्वाइस बरामद किया है। वहीं चालक गोपालगंज जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के बलहां बैकुंठपुर गांव निवासी अनिल कुमार को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया है। उक्त जानकारी सहायक आयुक्त मद्यनिषेध नीरज कुमार ने दी है। उन्होंने बताया कि सूचना मिली थी कि एक चोकर लदे ट्रक पर भारी मात्रा में विदेशी शराब लोडकर भाया पकड़ीदयाल होते हुए ढाका की ओर जाने वाली है। सूचना पर उत्पाद थाना मधुबन के थानाध्यक्ष शिवेंद्र कुमार के नेतृत्व में एक टीम गठित कर कार्रवाई की गयी। जहां यह सफलता हाथ लगी। सहायक आयुक्त मद्यनिषेध श्री कुमार ने बताया कि गिरफ्तार चालक के विरुद्ध उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।वहीं टीम कारोबारी को चिन्हित करने में जूट गयी है। छापेमारी में थानाध्यक्ष श्री कुमार के अलावे एएसआई संजय सिंह, जुल्फेकार अंसारी, सिपाही उपेन्द्र पासवान, लवली कुमारी, मिनी कुमारी, गृहरक्षक दिपेंद्र कुमार,व बाला लखिन्दर सहनी शामिल थे।

### भोपतपुर थाना पुलिस ने चोरी की बाइक की बरामद

**कोटवा।** भोपतपुर थाना पुलिस ने चोरी की एक मोटरसाइकिल बरामद की है ।केसरिया थाना द्वारा शराब कांड में न्यायिक हिरासत में भेजे गए गजेंद्र यादव पिता स्व. दसई राय निवासी बेलवा डीह टोला बझीया, थाना कल्याणपुर के पास से एक चोरी की मोटरसाइकिल संबंधित मामला सामने आया है। सूचना के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू की, जिसमें गजेंद्र यादव के कब्जे से एक टीवीएस मोटरसाइकिल बरामद की गई। मोटरसाइकिल का रजिस्ट्रेशन नंबर BR0M 9065 बताया गया है।जांच के दौरान वाहन का चेचिस नंबर घिसा हुआ पाया गया। वहीं एचएचडी मशीन से जांच करने पर इंजन नंबर में भी भिन्नता पाई गई, जिससे वाहन के चोरी का होने की पुष्टि हुई। भोपतपुर थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल को विधिवत जप्त कर लिया है। इस संबंध में आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।थानाध्यक्ष विकास कुमार ने बताया की मामले की गहन जांच जारी है और अन्य संलिप्त लोगों की भी तलाश की जा रही है।

# ग्रामीणों ने श्रमदान से बनाया कच्ची सड़क

- **योजना से कार्य नहीं होने पर ग्रामीणों ने श्रमदान से बनाया कच्ची सड़क**
- **जनप्रतिनिधियों के उदासीनता के कारण ग्रामीणों ने श्रम दान देकर बनाया कच्ची सड़क**

**निज संवाददाता। बिक्रमगंज (रोहतास)**

जनप्रतिनिधियो नेताओं और सरकार के उदासीनता से त्रस्त होकर बिक्रमगंज प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत जोन्ही पंचायत के गोटपा गांव के ग्रामीणों ने गांव से मुख्य सड़क तक खुद श्रमदान कर कच्ची सड़क बना दी। ग्रामीण युवक गुड्डू कुमार सिंह, टुकटुक सिंह मनोज कुमार सिंह अनिल कुमार सिंह ने बताया कि बीते कई सालों से गांव से बाहर जाने का रास्ता खराब है छात्र नौजवान बच्चे बूढ़े गांव से बाहर के सड़कों के सहारे लगभग 7 किलोमीटर घूम कर गांव के बाहर से रास्ता तय कर अपना जीवन यापन कर रहे है इसी रास्ते से होकर छात्रों को विद्यालय जाना तथा अपनी जरूरत को पूरा करना होता है। पंचायत के मुखिया सहित अन्य जनप्रतिनिधियो तथा नेताओं से कई बार गुहार लगाने, समस्या को बताने के बाद भी समस्या का हल नहीं हुआ। अंत में गांव के सैकड़ो लोगों ने चंदा इकट्ठा कर और श्रमदान देकर गांव से मुख्य सड़क तक लगभग 1 किलोमीटर का कच्ची सड़के बनाई। उन्होंने बताया कि कच्ची सड़क बनाने से सैकड़ो लोगों को फायदा मिलेगा बच्चे नौजवान सभी इस सड़क से लाभ उठाएंगे। ग्रामीणों ने पंचायत के मुखिया , विधायक, सांसद पर गंभीर आरोप लगाया ।

उन्होंने कहा कि चुनाव जीतने के बाद पंचायत के इस गांव में कोई भी कार्य नहीं हुआ है और ना ही कभी घूमने आते हैं। इस कच्ची सड़क को बन जाने से काराकाट, बिक्रमगंज, आदि गांव में जाने का रास्ता आसान हो गया। सड़क बनने से पहले जहां 7 किलोमीटर का रास्ता तय करना पड़ता था अब वह दूरी महज एक किलोमीटर का हो गया है। कच्ची सड़क बन जाने से गांव के बच्चे बूढ़े महिलाएं काफी खुश नजर आए। बताते चले की मिट्टी भरने का लगभग एक लाख रुपए का खर्चा गांव वालों ने खुद चंदा इकट्ठा करके लगाया है। मौके पर अनिल कुमार संतोष कुमार अशोक कुमार नितेश कुमार चंदन कुमार मन्नू यादवआदि ग्रामीण मौजूद रहे।

# धान अधिप्राप्ति को ले हुई बैठक

**सरकार के महत्त्वकाछी योजनाओं में एक धान अधिप्राप्ति है**

**निज संवाददाता। काराकाट / रोहतास**

काराकाट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत मोथा पैक्स कार्यकारणी समिति की धान अधिप्राप्ति को ले हुई बैठक सरकार के महत्त्वकाछी योजनाओं में एक धान अधिप्राप्ति है । धान बिक्री को ले किसान बेहाल है अपरिहार्य कारणों बस मोथा पैक्स का बैठक लेट से हुई बैठक की अध्यक्षता मोथा पैक्स अध्यक्ष कामेश्वर सिंह ने की । वही बैठक में सभी कार्यकारणी सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई । उपस्थित सदस्य धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि पैक्स का काम लेट से सुरु होने के कारण पैक्स के किसान काफी परेशान हैं जल्द से जल्द चालू कर किसान का धान खरीदी की जाए और सरकार समर्थन मूल्य किसानों को मुहाया कराई जाय ।

मौके पर उपस्थित सदस्यों ने अपनी सहमति देते हुवे धान अधिप्राप्ति के लिए प्रस्ताव पारित किया गया मौके पर उपस्थित सदस्य संजीव कुमार सिंह ,कृष्ण कांत गुप्ता ,समसून खातून ,निर्मला देवी, रीता देवी ,कुमारी डेजी वर्मा, रामावतार राम , आनंद पांडेय, पिंकी देवी के आलावा सबकी सदस्य उपस्थिति हुए ।

## बिक्रमगंज में अपहर्ता के चंगुल से भागा बच्चा, परिजनों ने ली राहत की सांस

**निज संवाददाता। बिक्रमगंज /रोहतास**

शहर के नगर परिषद कार्यालय के पास शहर के गुलजारबाग निवासी अनवर मियां के 12 वर्षीय पुत्र सकिल को एक बाइक सवार पिता को झांसे में लेकर बच्चे को अपने बाइक पर बैठा कर फरार हो गया। बच्चे को लेकर भागने का अहसास होने पर सब्जी विक्रेता और वहां उपस्थित लोगों में कोहराम मच गया। लोगों ने इस संबंध में पुलिस को सूचना दी। अभी पुलिस या शहरवासी उस अपहरण कर्ता का पीछा करते तभी बच्चा दौड़ते हाफते हुए वहां उपस्थित हो गया। बच्चा ने बताया कि मौका पाकर उसके बाइक से कूद गया और शोर मचाने लगा तो अपहर कर्ता बाइक लेकर भाग निकला। बताया जाता है कि एक बाइक सवार युवक नगर परिषद के पास फूटपाथ पर स्थित एक चप्पल दुकान से चप्पल लिया, फिर सब्जी दुकानदार अनवर मियां से सब्जी लिया। पैसा देने के नाम पर बोला कि इस बच्चे को लेकर जाते है मोड़ पर हमारा एक आदमी है, उससे पैसा लेकर दे दूंगा। बच्चे को अपने बाइक पर बैठा कर चला गया। जब कुछ देर तक बच्चा नहीं लौटा तो लोग खोजबीन करने लगे। मोड़ पर तथा आसपास देखे तो कहीं पर बच्चा दिखाई नहीं दिया। तो लोग बेचैन हो गए। इस संबंध में पुलिस को सूचना दिये। बाइक सवार का पीछा करने को सोच हीं रहे थे, इसी बीच बच्चा दौड़ते हाफते हुए वहां आ गया। बच्चे को पाकर लोग राहत की सांस ली। थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि बच्चे के अपहरण कर लिए जाने की सूचना किसी ने मोबाइल से दी। पुलिस अपहरण कर्ता का पीछा करने अभी निकल हीं रही थी कि बच्चा भाग कर आ गया। हालांकि बाइक सवार की हुलिया की जानकारी लेकर पुलिस बहुत दूर तक गई, लेकिन कहीं उसका कोई पता नहीं चल सका।

# आग लगी की घटना में पशु जले

**निज संवाददाता। नासरीगंज (रोहतास)**

नासरीगंज थाना क्षेत्र के अतिमि पंचायत के ग्राम मेदनीपुर फेकन टोला में शनिवार देर रात्रि गौशाला में लगी भीषण आग में आधे दर्जन पशु जलकर झुलस गये हैं। उक्त गौशाला उक्त गांव के चार भाइयों चंदन कुमार, लालजी कुमार, रोहित कुमार, और राहुल कुमार की संयुक्त रूप से थी जिसमें सबकी अलग अलग दुधारू पशु रहा क़रतीं थीं। घटना के सम्बंध में भुगतभोग़ियों ने बताया कि शनिवार रात्रि सभी पशुओं को चारा, भोजन देकर सभी खेत में पटवन के लिए गये थे तभी मध्य रात्रि गौशाला में आग लगने की सूचना पर पहुंचे तो मड़ई का गौशाला धुधू कर जल रहा था और उसमें बंधी सभी पशु आग की लपटों से घिरी थी। आनन फानन में ग्रामीणों के सहयोग से पम्पिंग सेट व चापा कल से आग बुझाने को ले घण्टो प्रयास किया गया, तब जाकर आग पर काबू पाया गया। तब तक पूरा गौशाला जल कर राख हो गया। सभी मवेशी झुलस कर कराह रही थीं। भुगतभोगियों ने बताया कि चार दुधारू भैंसे, तीन बड़ी पाड़ी जिसमें कुछ गर्भवती भी थीं सभी भयानक रूप से झुलस गई हैं। जिनके बचने की कम संभावना है।

इसके साथ गौशाले में रखा अनाज, राशन, बिछावन आदि जलकर नष्ट हो गया है। सूचना पर पशुपालन विभाग के चिकित्सक ने पशुओं का प्राथमिक उपचार किया है। चिकितस्कों के अनुसार सभी आग से झुलसे मवेशियों की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। पशुपालको द्वारा आग लगी की सूचना सीओ को दी गई। सीओ के निर्देश पर राजस्व कर्मी रंजन कुमार ने घटनस्थल पर पहुंचकर क्षतिपूर्ति की आकलन किया। पशुपालक भुगतभोगी किसानों ने बताया कि उक्त आगलगी में उनकी पशुओं के झुलस जाने से उनके आगे रोजी रोटी के लाले पड़ गए हैं। चारों सहोदर भाइयों की अलग अलग पशुएँ थीं, जिसके दूध बेच कर वे अपने परिजनों की जीविका चलाते थे। उक्त घटना के बाद सभी बिल्कुल असहाय हो गये हैं। उन्होंने बताया कि उनकी कुछ पशु गर्भवती भी थीं जो आजकल में बच्चा देने वाली थीं। कुल मिलाकर लगभग तीन से चार लाख की क्षति उन्हें हुई है, जिससे उनपर दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। आग लगने का कारण का पता नहीं चल पाया है। सूचना पर पहुंचे सरपंच संघ के पूर्व जिलाध्यक्ष धीरेंद्र सिंह, पूर्व पैक्स अध्यक्ष विमलेश उर्फ टुन्ना सिंह, मुखिया निशु देवी, पैक्स अध्यक्ष साबित देवी ने भुगतभोगी पशुपालक किसानों को यथाशीघ्र क्षतिपूर्ति हेतु मुआबजा राशि देने की मांग करते हुए कहा है कि चारों अत्यंत गरीब परिवार से सम्बंध रखते हैं। किसी प्रकार पशुओं का दूध बेचकर व दूसरे खेतों में मजदूरी कर अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। सीओ अंचला कुमारी ने बताया कि क्षतिपूर्ति को ले उनके द्वारा आकलन कराया जा चुका है। पशुपालकों के द्वारा आवेदन नहीं दिया गया है। आवेदोपरांत क्षतिपूर्ति मुआबजा को ले विधि सम्मत अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

## जनता दरबार में सीओ ने जमीनी संबंधित कई मामलों का किया निष्पादन

**निज संवाददाता। राजपुर**

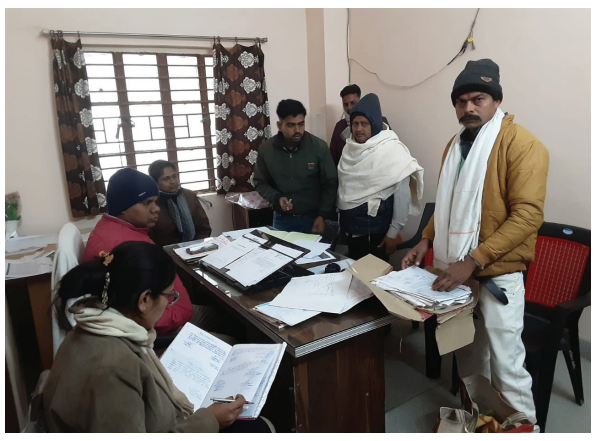

क्षेत्र अंतर्गत रैयतों के भूमि विवाद मामलों के निष्पादन को लेकर जनता दरबार के दौरान शनिवार को अंचलाधिकारी पिंटू कुमार ने अंचल कार्यालय में रैयतों के साथ बैठक की.जिस दौरान आपसी जमीनी विवाद एवं दुसरे अन्य रैयतों के साथ विवाद का समाधान निकालने का प्रयास किया गया.

जानकारी देते हुए अंचलाधिकारी ने बताया कि रोतवां गांव निवासी नरेंद्र कुमार बनाम राजकुमार सिंह, सियांवक गांव निवासी संता देवी बनाम अनिल पासवान, कुझी गांव निवासी ब्रजकिशोर दुबे बनाम राजन बारी के जमीनी विवाद की सुनवाई हुई.इन सभी लोगों को पूर्व के आवेदन के आलोक में शनिवारीय बैठक के दौरान उपस्थित होने के लिए नोटिस दिया गया था.इनकेके बीच भूमि विवाद मामले का आपसी समझौता से निपटारा का प्रयास किया गया.बैठक के दौरान कोई नाया मामला नहीं दर्ज हुआ.प्रतिदिन प्राप्त होने वाले आवेदनों के सुनवाई हेतु कई अन्य पुराने मामलों से सम्बंधित रैयतों को अगले बैठक के दौरान उपस्थित होने के लिए नोटिस निर्गत किया गया है.

वहीं गत बैठक में प्राप्त आवेदनों के आलोक में नोटिस पर बुलाये गये रैयतों के कागजात की जांच की गई.रैयतों का बयान दर्ज करते हुए आगे की कार्रवाई के लिए सम्बंधित कर्मी को अंचलाधिकारी ने निर्देशित किया.मौके पर राजपुर थाना पुलिस पदाधिकारी आशा कुमारी, बघैला पुलिस पदाधिकारी,अंचल कर्मी अमीत कुमार,संदीप कुमार समेत कई अन्य रैयत मौजूद रहे.

# जयंती समारोह में फुले दंपति को भारत रत्न की मांग

**निज संवाददाता। रोहतास**

**सासाराम (रोहतास)।** जिला मुख्यालय सासाराम के कुराइच स्थित प्रिंस मैरिज हॉल में रविवार को भारत की प्रथम अध्यापिका सावित्रीबाई फुले की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। माली मालाकार कल्याण समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में रोहतास जिले के विभिन्न प्रखंडों से सैकड़ो की संख्या में माली समाज के लोग उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं संचालन समिति के अध्यक्ष संतोष भंडारी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत सावित्रीबाई फुले एवं ज्योतिबा फुले के तेल चित्र पर पुष्प अर्पण से किया गया। उपस्थित लोगों ने एक स्वर में माता सावित्रीबाई फुले एवं उनके पति महान सचेतक ज्योतिबा फुले को भारत रत्न की मांग को रखा। इसके लिए चरणबद्ध आंदोलन करने की बातें लोगों ने की। मुख्य वक्ता चेनारी प्रखंड अंतर्गत सिकरौल पंचायत के मुखिया ललू भगत ने कहा कि भारत में जब शिक्षा का घोर अभाव था और कथित सामाजिक संरचना से समाज में विसंगतियां उत्पन्न थी उस क्रम में फुले दंपति ने शोषित वंचितों की आवाज बने।

विषम परिस्थिति में माता सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा का अलख जगाया और नारी शक्ति पर बल दिया। अन्य वक्ताओं ने भी माता सावित्रीबाई फुले एवं ज्योतिबा फुले के संघर्षों को समारोह में रखने का काम किया। वही अध्यक्ष संतोष भंडारी ने समाज के उत्थान पर चिंता प्रकट करते हुए लोगों को बच्चों को शिक्षित करने, संगठित करने एवं संस्कारवान बनाने पर बल दिया। वक्ताओं में गौरी शंकर माली, अधिवक्ता जयराम प्रसाद,उपेंद्र भगत, हंस लाल भगत, सीताराम माली, बृजनंदन सैनी, डॉक्टर कमलेश भगत, रुद्र भगत, संजय माली एवं सीताराम भगत सहित कई लोग शामिल थे। धन्यवाद ज्ञापन अनिल माली द्वारा किया गया।

## नाट्य निर्देशक आर.टी. राजन की 12वीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

**निज संवाददाता। सहरसा**

स्थानीय सुपर बाजार स्थित संत लक्ष्मीनाथ गोंसाईं कला भवन के परिसर में रविवार को शशि सरोजनी रंगमंच सेवा संस्थान द्वारा प्रख्यात नाट्य निर्देशक आर.टी. राजन की 12वीं पुण्यतिथि पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले के रंगकर्मियों ने अपने गुरु की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। संस्थान के सचिव वन्दन वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा में वक्ताओं ने आर.टी. राजन के योगदानों को रेखांकित किया। वन्दन वर्मा ने कहा कि राजन जी ने कोसी जैसे क्षेत्र में हिंदी रंगमंच को न केवल स्थापित किया, बल्कि एक नया इतिहास रचा। उन्होंने युवा रंगकर्मियों की ऐसी पौध तैयार की, जो आज विभिन्न स्तरों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। उनकी सबसे बड़ी काबिलियत यह थी कि वे बेहद सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े और भव्य प्रोडक्शन तैयार कर लेते थे।

**क्षेत्रीय संस्कृति और कला के प्रति समर्पणः** श्रद्धांजलि सभा में कहा गया कि आर.टी. राजन ने कभी भी विपरीत परिस्थितियों से समझौता नहीं किया। बिना किसी आधुनिक नाट्य संस्थान से औपचारिक शिक्षा लिए, उन्होंने रंगमंच की दुनिया में अपनी ऐसी धमक बनाई कि उनकी कला बड़े महानगरों की चकाचौंध पर भारी पड़ने लगी थी। उन्होंने क्षेत्रीय संस्कृति को भी रंगमंच पर प्रमुखता से स्थान दिया। नाट्य निर्देशक कुन्दन वर्मा के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कलाकार शामिल हुए।

श्रद्धासुमन अर्पित करने वालों में सुदर्शन कुमार, राहुल गौरव, सालवी शर्मा, सुन्दरम प्रजापति, राज कुमार, सज्जन कुमार रंजन, निभाष कुमार, सत्यम कुमार, मयंक कुमार, सौरव कुमार, अन्नू प्रिया, उत्कर्ष राज और ज्ञानेश कुमार सहित कई अन्य रंगकर्मी शामिल थे। सभी उपस्थित कलाकारों ने आर.टी. राजन के बताए मार्ग पर चलते हुए कला और रंगमंच की सेवा करने का संकल्प लिया।

## आगामी 26 जनवरी को आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर समीक्षात्मक बैठक

**निज संवाददाता। सासाराम /रोहतास**

जिलाधिकारी रोहतास उदिता सिंह की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित डीआरडीए सभागार में आगामी 26 जनवरी 2026 को आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में गणतंत्र दिवस समारोह के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन हेतु संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 26 जनवरी की सुबह प्रभातफेरी निकाली जाएगी, जिसके नोडल पदाधिकारी जिला शिक्षा पदाधिकारी होंगे। मुख्य समारोह स्थल न्यू फजलगंज स्टेडियम, सासाराम में सुबह 09:00 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा। समारोह के दौरान जीविका, समारोह में आपदा प्रबंधन सहित विभिन्न विभागों की आकर्षक झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी। साथ ही कार्यक्रम के क्रम में 1001 लोगों के बीच पर्चा वितरण किया जाएगा।

जिलाधिकारी महोदया ने स्वच्छता एवं सजावट को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए संबंधित पदाधिकारियों को समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। महादलित टोलों एवं पंचायत सरकार भवनों में भी विधिवत ध्वजारोहण सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए। स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान का विशेष प्रावधान रखा गया है।

नगर आयुक्त, सासाराम को शहर की सभी स्ट्रीट लाइटों पर तिरंगा लाइटिंग कराने तथा आरसीडी के अभियंता को सभी जेब्रा क्रॉसिंग को रंग-रोगन कर दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया। वहीं, शाम 05:00 बजे फजलगंज स्थित मल्टीपर्पस हॉल, सासाराम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जिलाधिकारी महोदया ने सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ दायित्वों का निर्वहन करते हुए समारोह को भव्य, अनुशासित एवं जन-भागीदारी के साथ संपन्न कराने का निर्देश दिया।

## संक्षिप्त समाचार

### सरकारी स्कूल की अनियमितताओं का विरोध करना पड़ा महंगा, बदउवा गांव में वृद्ध से मारपीट

**गयाजी।** जिले के फतेहपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत बदउवा गांव में रविवार को एक वृद्ध व्यक्ति के साथ मारपीट की घटना सामने आई है। इस घटना में घायल हुए वृद्ध की पहचान गांव निवासी उमा प्रसाद सिंह के रूप में हुई है। मारपीट के बाद ग्रामीणों की मदद से उन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फतेहपुर में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार किया गया। उमा प्रसाद सिंह ने बताया कि वे गांव स्थित सरकारी विद्यालय में लंबे समय से चल रही कथित अनियमितताओं का लगातार विरोध कर रहे थे। उनका आरोप है कि विद्यालय संचालन को लेकर वे कई बार सवाल उठा चुके हैं, जिससे कुछ लोग नाराज चल रहे थे। रविवार को इसी विवाद को लेकर गांव के ही रामानंद सिंह, मनोरमा देवी, भोला सिंह और पूजा कुमारी ने उन पर हमला कर दिया। हमले में उमा प्रसाद सिंह के सिर और हाथ में गंभीर चोटें आईं। घटना के समय मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने बीच-बचाव कर किसी तरह वृद्ध को बचाया। घटना के बाद घायल अवस्था में उमा प्रसाद सिंह को सीएचसी फतेहपुर ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार किया। इलाज के बाद उनकी स्थिति स्थिर बताई जा रही है। इस संबंध में पीड़ित ने फतेहपुर थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि सरकारी स्कूल को लेकर दोनों पक्षों के बीच पहले से विवाद चला आ रहा है। इस मामले में पूर्व में भी दोनों ओर से शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं। थाना प्रभारी ने बताया कि रविवार की घटना को लेकर शिकायत के आधार पर मामले की जांच शुरू कर दी गई है। जांच के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। घटना के बाद गांव में तनाव का माहौल बना हुआ है, हालांकि स्थिति फिलहाल नियंत्रण में बताई जा रही है।

### मारपीट की घटनाओं पर शेरघाटी पुलिस सख्त, दो मामलों में चार आरोपी गिरफ्तार

**शेरघाटी।** शेरघाटी थाना क्षेत्र में मारपीट की अलग-अलग घटनाओं पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। रविवार को की गई इस कार्रवाई के बाद सभी आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस की इस कार्रवाई से क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को लेकर सख्ती और सक्रियता साफ तौर पर देखने को मिली है। थानाध्यक्ष मोहन कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के चट्टी मोहल्ला में पूर्व में हुई मारपीट की घटना को लेकर पुलिस लगातार जांच कर रही थी। जांच के क्रम में रविवार को छापेमारी अभियान चलाया गया, जिसमें तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान महेंद्र चौधरी, संजय चौधरी और राजीव कुमार के रूप में हुई है। इन तीनों पर आपसी विवाद को लेकर मारपीट करने का आरोप है। पुलिस द्वारा आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद तीनों को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। वहीं, शेरघाटी थाना क्षेत्र के गढ़ मोहल्ला में भी आपसी विवाद को लेकर मारपीट की एक अलग घटना सामने आई थी। इस मामले में पुलिस ने मिंटू यादव नामक युवक को गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष के अनुसार, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया और आरोपी को हिरासत में लिया। पूछताछ के दौरान आरोप सही पाए जाने के बाद मिंटू यादव को भी न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस का कहना है कि दोनों मामलों में आगे की कानूनी कार्रवाई नियमानुसार की जा रही है। थानाध्यक्ष मोहन कुमार ने स्पष्ट किया कि शेरघाटी थाना क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना पुलिस की प्राथमिकता है। मारपीट, आपसी विवाद और कानून हाथ में लेने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी और ऐसे मामलों में किसी तरह की ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

### स्टेशन परिसर में हुआ भव्य आयोजन

**सहरसा।** मानवता की सेवा को सर्वोपरि मानते हुए मारवाड़ी युवा मंच, सहरसा शाखा द्वारा शनिवार की रात एक सराहनीय पहल की गई। मंच की ओर से स्थानीय स्टेशन परिसर में 'सेवा की रसोई' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके तहत लगभग 300 असहाय और जरूरतमंद लोगों को सम्मानपूर्वक शुद्ध और ताजा भोजन (पूरी-सब्जी) कराया गया। इस विशेष सेवा शिविर का आयोजन समाजसेवी गोपाल दहलान के सौजन्य से किया गया। उनकी श्रद्धा और भक्ति भाव से प्रेरित इस योगदान की संगठन ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। मंच के पदाधिकारियों ने कहा कि गोपाल जी के इस दान और समर्पण से पूरा संगठन गौरवान्वित महसूस कर रहा है। उनके इस कदम ने न केवल सैकड़ों लोगों की भूख मिटाई, बल्कि समाज के अन्य वर्गों को भी सेवा के मार्ग पर चलने की नई प्रेरणा दी है। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रांतीय सहायक मंत्री विकास खेतान ने किया। इस सेवा कार्य में मंच के अध्यक्ष आदित्य मित्तल, उपाध्यक्ष नितेश अग्रवाल व आनंद अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुमित केजरीवाल, सह सचिव मनीष पचेरिया, और सह कोषाध्यक्ष विनय दारुका ने सक्रिय भूमिका निभाई। इनके साथ ही विक्रम अग्रवाल, राकेश परसूरामपुरिया, दीक्षित खेतान, आनंद भीमसेरिया, रोहित तुलस्यान, विपुल दहलान, गिरधारी दहलान और राहुल सलामपुरिया सहित मंच के तमाम सदस्य देर रात तक सेवा में जुटे रहे।

### जमुई के स्टेज पर नन्ही आराध्या का जलवा

**सहरसा।** जमुई शहर के महावीर वाटिका में आयोजित 'बिहार स्टेट सिंगिंग एंड डांस कंपटीशन' में सहरसा की नन्ही परी आराध्या ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। अपनी बेहतरीन नृत्य कला से आराध्या ने न केवल जजों को प्रभावित किया, बल्कि वहां मौजूद दर्शकों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। महावीर चौक निवासी प्रसिद्ध व्यवसायी राजकुमार गुप्ता की पौत्री और अभिषेक गुप्ता की पुत्री आराध्या की इस उपलब्धि से परिवार में हर्ष का माहौल है। आराध्या ने बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ संगीत और कला में गहरी रुचि दिखाई है। स्टेज पर उनके शानदार प्रदर्शन को देखते हुए आयोजकों ने उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत कर सम्मानित किया। आराध्या की इस सफलता पर उनके दादा-दादी, माता-पिता और शुभचिंतकों ने उन्हें आशीर्वाद दिया है। परिजनों का कहना है कि आराध्या शुरू से ही कला के प्रति समर्पित रही है और यह पुरस्कार उसकी मेहनत का परिणाम है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने आराध्या के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उसकी कला की जमकर सराहना की।

# गया की 30 वंचित बस्तियों में एक साथ लगे निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

निज संवाददाता। गयाजी

स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर गयाजी सेवा भारती और नेशनल मेडिकोस ऑर्गनाइजेशन (NMO) ने समाज के अंतिम पायदान तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने की दिशा में एक बड़ी पहल की। रविवार को गया महानगर की 30 दलित और वंचित सेवा बस्तियों में एक साथ निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर और दवा वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट था—ऐसे लोगों तक चिकित्सा सुविधा पहुंचाना, जो आर्थिक और सामाजिक कारणों से इलाज से वंचित रह जाते हैं। आयोजन की शुरुआत भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। इसके बाद स्वामी विवेकानंद के सेवा, राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण से जुड़े विचारों को साझा किया गया इन स्वास्थ्य शिविरों में कुल 2550 लोगों की चिकित्सकीय जांच की गई। सामान्य सर्दी-खांसी, बुखार, त्वचा रोग, पेट संबंधी बीमारियों सहित अन्य आम रोगों की दवाएं मौके पर ही निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं।

गंभीर बीमारियों से पीड़ित मरीजों को बेहतर इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। कई झुग्गी और वंचित इलाकों में यह पहला मौका था, जब इतने बड़े स्तर पर एक साथ स्वास्थ्य जांच की सुविधा उपलब्ध कराई गई। इससे स्थानीय लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला और लोगों ने इस पहल को सराहा।

सेवा भारती के पदाधिकारी प्रमोद भदानी और राजेश कुमार ने बताया कि जिले में पिछले एक पखवारे से भीषण ठंड और कोल्ड डे की स्थिति बनी हुई है। ऐसे मौसम में सामान्य लोग तो किसी तरह व्यवस्था कर लेते हैं, लेकिन झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोग सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। ठंड से बीमार पड़ने के बावजूद उन्हें समय पर इलाज नहीं मिल पाता। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए सेवा भारती ने वंचित बस्तियों में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाने का निर्णय लिया, ताकि जरूरतमंदों को राहत मिल सके।

सेवा भारती की ओर से बताया गया कि माड़नपुर बाइपास स्थित दशरथ मांझी छात्रावास परिसर में पिछले एक वर्ष से हर रविवार नियमित रूप से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर और दवा वितरण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह सेवा अभियान भविष्य में भी निरंतर जारी रहेगा। इस आयोजन में NMO की ओर से अध्यक्ष डॉ. अभय सिम्बा, कार्यकारी अध्यक्ष और वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. प्रमोद कुमार सिन्हा सहित कुल 125 डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दीं। डॉक्टरों की टीम ने पूरे समर्पण भाव से मरीजों की जांच की और उन्हें आवश्यक परामर्श दिया। स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम सेवा, समर्पण और सामाजिक जिम्मेदारी का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया।

# नालंदा में महिला का हत्यारा पुलिस गिरफ्त से दूर

निज संवाददाता। नालंदा

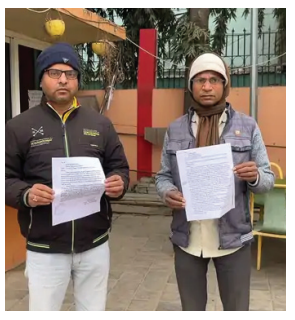

नालंदा के वेना थाना क्षेत्र के पूराजीत गांव में दीपावली के दौरान महिला की हत्या हुई थी। इस मामले में ढाई महीने बीत जाने के बाद भी पुलिस के हाथ खाली हैं। परिवार न्याय के लिए दर दर की ठोकरें खा रहा है। परिजनों ने स्थानीय पुलिस पर जांच में लापरवाही बरतने और आरोपियों को बचाने का गंभीर आरोप लगाया है।

**नामजद शिकायत के बाद भी कार्रवाई नहीं:** फतुहा (रानीपुर) में रहकर प्रैक्टिस करने वाले मृतका के पति द्वारिका कुमार ने बताया कि 18 तारीख (दीपावली के समय) को उनकी पत्नी प्रमिला देवी पूराजीत स्थित पैतृक घर की साफ-सफाई करने गई थीं। उसी रात घर में घुसकर उनकी हत्या कर दी गई और जेवर लूट लिए गए। पुलिस के कहने पर उन्होंने गांव से जानकारी जुटाकर संदिग्धों के नाम भी बताए, लेकिन पुलिस ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। उन्होंने आरोप लगाया कि थाना स्तर पर मामले को दबाने का प्रयास किया जा रहा है।

**पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर सवाल:** मृतका के दामाद अजीत कुमार ने जांच प्रक्रिया और मेडिकल रिपोर्ट पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि नियमतः सात दिनों में मिलने वाली पोस्टमार्टम रिपोर्ट डेढ़ महीने बाद मिली। उन्होंने आरोप लगाया कि मृतका के हाथ और दांत टूटे हुए थे और गला दबाने के निशान थे, लेकिन रिपोर्ट में इन चोटों का जिक्र नहीं है, जो रिपोर्ट में छेड़छाड़ की ओर इशारा करता है। उन्होंने यह भी बताया कि बिसरा जांच के लिए सैंपल अभी भी सदर अस्पताल में पड़ा है, उसे लैब नहीं भेजा गया है।

**IG से लेकर गृह मंत्रालय तक दौड़:** पीड़ित परिजनों ने बताया कि वे न्याय के लिए बेना थाना, एसपी ऑफिस, आईजी कार्यालय और गृह मंत्रालय तक का चक्कर लगा चुके हैं, लेकिन सिवाय आश्वासन के कुछ नहीं मिला। उन्होंने एसपी से मांग की है कि मामले की निष्पक्ष जांच कर जल्द से जल्द दोषियों को गिरफ्तार किया जाए।

# आयुष हत्याकांड : सात महीने बाद भी पुलिस के हाथ खाली

निज संवाददाता। सहरसा

सत्तर कटैया प्रखंड के सिहौल गांव के होनहार छात्र आयुष कुमार की हत्या के सात महीने बीत जाने के बाद भी न्याय न मिलने से आक्रोशित परिजनों ने अब आर-पार की लड़ाई का मन बना लिया है। स्थानीय पुलिस की कार्यशैली से असंतुष्ट पीड़ित परिवार पिछले तीन दिनों से सिहौल में आमरण अनशन पर बैठा है। अनशन पर बैठी आयुष की माता नीतू कुमारी ने सिसकते हुए कहा, "मेरे इकलौते बेटे को हमसे छीने सात महीने हो गए, लेकिन प्रशासन अब तक अंधेरे में तीर चला रहा है। समय पर न्याय न मिलना एक और अन्याय है।" उन्होंने जिला प्रशासन से दोषियों की अविलंब गिरफ्तारी की गुहार लगाई है। मृतक के पिता अंशु मिश्रा ने स्थानीय जांच प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा कि अब उन्हें बिहार पुलिस या स्थानीय प्रशासन पर भरोसा नहीं रह गया है। सच्चाई सामने लाने के लिए इस पूरे मामले की सीबीआई से उच्चस्तरीय जांच कराई जानी चाहिए। अनशन स्थल पर पहुंचे सामाजिक कार्यकर्ता टिंकू मैथिल ने इस स्थिति को लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

उन्होंने कहा कि एक लाचार मां-बाप को अपने बेटे के न्याय के लिए जान की बाजी लगानी पड़ रही है, जो प्रशासन की विफलता का प्रमाण है। अनशन स्थल पर आयुष के समर्थन में मुन्ना सिंह, पप्पू सिंह, मिंटू सिंह, अंकुश वत्स, पिक्कू मिश्रा, नीरज झा, छोटू सिंह और नयन सिंह सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक मामले का खुलासा नहीं होता और दोषियों को सजा नहीं मिलती, यह आंदोलन जारी रहेगा।

# बाराचट्टी में 1.69 एकड़ सरकारी जमीन पर उगाई गई अवैध अफीम की फसल नष्ट, ड्रोन से हुई निगरानी

निज संवाददाता। गयाजी

जिले के बाराचट्टी थाना क्षेत्र अंतर्गत छोटकी चापी इलाके में रविवार को प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए लगभग 1.69 एकड़ सरकारी भूमि पर की जा रही अवैध अफीम की खेती को पूरी तरह नष्ट कर दिया। यह कार्रवाई जेसीबी, ट्रैक्टर और मानव बल की मदद से की गई, जिससे पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। वन क्षेत्र पदाधिकारी अरविंद कुमार ने बताया कि प्रशासन को लंबे समय से इस क्षेत्र में अफीम की अवैध खेती की गुप्त सूचना मिल रही थी। सूचना की पुष्टि के बाद एक संयुक्त टीम का गठन किया गया और सुनियोजित तरीके से अभियान चलाया गया। टीम ने मौके पर पहुंचकर पूरी अफीम की फसल को नष्ट कर दिया। अरविंद कुमार ने बताया कि छोटकी चापी क्षेत्र पहाड़ी और दुर्गम इलाकों में आता है, जहां सामान्य निगरानी करना कठिन होता है। ऐसे में अवैध खेती की पहचान और क्षेत्र की निगरानी के लिए ड्रोन कैमरे का भी इस्तेमाल किया गया। ड्रोन से मिले इनपुट के आधार पर कार्रवाई को अंजाम दिया गया, जिससे कोई भी अवैध खेती छिप नहीं सकी।वन क्षेत्र पदाधिकारी ने स्पष्ट किया कि जिले में अवैध मादक पदार्थों की खेती और तस्करी के खिलाफ प्रशासन का अभियान लगातार जारी रहेगा। ऐसे मामलों में शामिल लोगों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। आगे भी ड्रोन और तकनीकी संसाधनों की मदद से निगरानी बढ़ाई जाएगी। इस अभियान में वन विभाग के साथ-साथ नारकोटिक्स विभाग, उत्पाद विभाग, एसएसबी ई समवाय धनगाई, अंचल प्रशासन और बाराचट्टी थाना पुलिस की संयुक्त टीम शामिल रही। सभी विभागों के समन्वय से कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया। प्रशासन की इस सख्त कार्रवाई के बाद इलाके में अवैध अफीम की खेती करने वालों में भय का माहौल है। अधिकारियों का कहना है कि भविष्य में भी ऐसे क्षेत्रों पर कड़ी नजर रखी जाएगी और सरकारी भूमि पर किसी भी तरह की अवैध गतिविधि बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

# ओलंपस मोंस क्लब पथरा बना बच्चों की प्रतिभा तराशने का केंद्र, सरकार देगी हरसंभव सहयोग: संतोष कुमार सुमन

निज संवाददाता। इमामगंज

इमामगंज प्रखंड के पथरा गांव में संचालित ओलंपस मोंस क्लब आज केवल एक सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्रयोगशाला बन चुका है। इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक और सीमा सुरक्षा बल से जुड़े लोगों के सामूहिक प्रयास से चल रहा यह क्लब समाज के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनकर उभरा है। यह बातें बिहार सरकार के लघु सिंचाई मंत्री संतोष कुमार सुमन ने पथरा गांव के बजराही मैदान में आयोजित खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह में कहीं। मंत्री ने कहा कि ऐसे प्रयास आज के समय में बेहद जरूरी हैं, जहां बच्चों को सही दिशा, मंच और मार्गदर्शन मिले। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार की ओर से ओलंपस मोंस क्लब को हरसंभव सहयोग दिया जाएगा। यह पहल ग्रामीण और सुदूरवर्ती क्षेत्र के बच्चों के भविष्य निर्माण में अहम भूमिका निभा रही है। कार्यक्रम के दौरान खेल और संस्कृति का अनूठा संगम देखने को मिला। वॉलीबॉल, बैडमिंटन, कबड्डी, दौड़, हाई जंप और लॉन्ग जंप जैसी खेल प्रतियोगिताओं के साथ डांस, पेंटिंग, सिंगिंग और ग्रुप क्विज जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों में बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को ट्रॉफी, मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। खास आकर्षण के रूप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 10 टॉपर बच्चों को साइकिल प्रदान की गई। साइकिल पाकर बच्चों के चेहरे पर खुशी और आत्मविश्वास साफ नजर आया। अभिभावकों और ग्रामीणों ने इस पहल की जमकर सराहना की। मंत्री संतोष कुमार सुमन ने कहा कि इस तरह के आयोजन बच्चों की छिपी प्रतिभा को पहचानने का अवसर देते हैं। उन्होंने कहा कि यहां आने वाले कई बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर और दूरदराज इलाकों से हैं, जिन्हें सामान्यतः आगे बढ़ने के लिए बेहतर मंच नहीं मिल पाता। ओलंपस मोंस क्लब ऐसे बच्चों को सशक्त मंच देकर उनके सपनों को आकार दे रहा है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि यदि क्लब स्थान चिन्हित कर बताएगा, तो सरकार की ओर से क्लब के नाम पर एक बेहतर भवन उपलब्ध कराने और परिसर के समग्र विकास में सहयोग किया जाएगा। साथ ही क्लब को विधिवत पंजीकरण कराने की सलाह दी गई। बच्चों को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि शिक्षा के साथ खेल जीवन का अहम हिस्सा है। अनुशासन, मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई और खेल दोनों में आगे बढ़ें। उन्होंने राज्य सरकार की 'मेडल लाओ–नौकरी पाओ' जैसी योजनाओं का जिक्र करते हुए बच्चों को लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के उद्घाटन में कांग्रेस जिला अध्यक्ष संतोष कुशवाहा, अंचल अधिकारी सुकेश कुमार, नगर पंचायत इमामगंज के उपाध्यक्ष के पति उपेंद्र रजक, क्लब अध्यक्ष राजेश सिन्हा, रामनंदन प्रसाद, गुडन सर और केदार प्रसाद सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। अंचल अधिकारी सुकेश कुमार ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन लगातार होने चाहिए। उन्होंने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के बच्चों की छिपी प्रतिभाओं को सामने लाना और उन्हें सकारात्मक दिशा देना है।

प्रतियोगिताओं में बच्चों की भारी भागीदारी यह साबित करती है कि इमामगंज क्षेत्र प्रतिभाओं से भरपूर है। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब के सदस्यों, स्वयंसेवकों और स्थानीय लोगों की अहम भूमिका रही। मौके पर सीआई गुड्डू कुमार, जदयू प्रखंड अध्यक्ष बृजनंदन प्रसाद दांगी, मुखिया श्याम सुंदर प्रसाद, गुंजन कुमार, कार्यक्रम अध्यक्ष राजेश कुमार, उदय कुमार, टूटू खान, काजू कुमार, अमरेंद्र कुमार, मुखिया पिंटू कुमार दांगी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

# नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सार्क देशों के पत्रकार, लेखक और विद्वान होंगे शामिल

निज संवाददाता। नालंदा

नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण आयोजन में देश-विदेश से आए साहित्यकारों, पत्रकारों और विद्वानों को विभिन्न सम्मानों से नवाजा जाएगा। इसमें सार्क देशों के पत्रकार और लेखक बड़ी संख्या में भागीदारी करेंगे। सिक्किम के पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद सहित कई गणमान्य सम्मेलन को संबोधित करेंगे। मॉरीशस के पूर्व डिप्टी पीएम हरीश बुद्धू की धर्मपत्नी और अंतरराष्ट्रीय संस्कृति संवाहिका डॉ. सरिता बुद्धू, नेपाल से सार्क जर्नलिस्ट फोरम के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष राजू लामा, थाईलैंड के प्रतिनिधि डॉ. पीसी चंद्रा समेत तीन दर्जन से अधिक विदेशी अतिथि इस आयोजन में शिरकत करेंगे।

**बिहार गौरव सम्मान से होंगे सम्मानित:** सम्मेलन में साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली दिग्गज हस्तियों को बिहार गौरव सम्मान, नालंदा अंतरराष्ट्रीय अचीवर्स अवॉर्ड और लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। पद्मश्री से सम्मानित पत्रकार, चिकित्सक, खिलाड़ी, शिक्षक, कारोबारी, समाजसेवी, साहित्यकार और शोध छात्र भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

**वैशाली अंतर्राष्ट्रीय विद्यापीठ की होगी घोषणा :** सार्क जर्नलिस्ट फोरम बिहार के अध्यक्ष सह मानवाधिकार टुडे के संपादक शशि भूषण कुमार ने बताया कि बिहार में यह चौथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है। इससे पूर्व तीन अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा सम्मेलन वैशाली में आयोजित किए गए हैं। इस सम्मेलन में भारतीय संस्कृति और भाषा के उन्नयन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने हेतु वैशाली अंतरराष्ट्रीय विद्यापीठ की स्थापना की घोषणा की जाएगी।

**पुस्तकों का लोकार्पण भी होगा:** सम्मेलन के दौरान कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का लोकार्पण और वार्षिक कैलेंडर का विमोचन भी किया जाएगा। इस आयोजन में राज्यों से 200 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे। यह आयोजन सार्क जर्नलिस्ट फोरम इंडिया चैप्टर बिहार, नालंदा खुला विश्वविद्यालय, आम्रपाली कला साहित्य सम्मेलन और मानवाधिकार टुडे के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है।

### पुस्तकों का लोकार्पण भी होगा

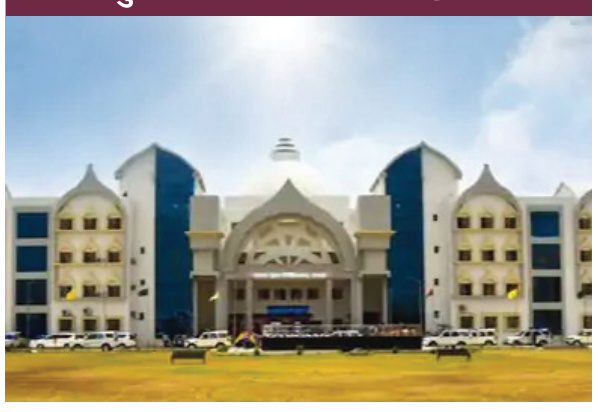

# साल 2025 में राजगीर जू सफारी 10 लाख पर्यटक पहुंचे, डिजिटल प्रबंधन से बनी पहचान

निज संवाददाता। नालंदा

राजगीर जू सफारी ने पर्यटन प्रबंधन के क्षेत्र में एक नया मानक स्थापित किया है। वर्ष 2025 में करीब 10 लाख सैलानियों ने सफारी का भ्रमण किया, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। छठ पर्व, राजगीर महोत्सव और नववर्ष जैसे बड़े आयोजनों के दौरान उमड़ी भारी भीड़ के बावजूद यहां की व्यवस्थाएं चुस्त-दुरुस्त बनी रहीं।

**डिजिटल प्रबंधन से बनी पहचान:** पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यहां ऑनलाइन टिकटिंग व्यवस्था को सख्ती से लागू किया गया। निर्धारित टाइम स्लॉट के अनुसार ही पर्यटकों को प्रवेश दिया गया, जिससे अफरा-तफरी की स्थिति नहीं बनी। काउंटर पर लगे लाइव डिस्प्ले बोर्ड से टिकट उपलब्धता की जानकारी मिलने से पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रही।

**बुनियादी ढांचे में सुधार:** सीजन शुरू होने से पहले ही सभी सफारी बसों की मरम्मत और मार्ग की सड़कों का जीर्णोद्धार पूरा कर लिया गया था। इससे न केवल यात्रा तेज हुई, बल्कि पर्यटकों को आरामदायक अनुभव भी मिला। समयबद्ध बस संचालन से प्रतीक्षा समय में भी कमी आई।

**यातायात प्रबंधन में नवाचार:** जिला प्रशासन के सहयोग से भारी वाहनों का डायवर्जन किया गया। नालंदा वन प्रभाग ने जेपी पार्क से स्तूप तक अतिरिक्त वन कर्मियों की तैनाती की। अवैध पार्किंग पर सख्ती बरतते हुए नियम तोड़ने वालों पर जुर्माना लगाया गया। सफारी मार्ग पर अतिरिक्त प्रतीक्षा स्थल और पेयजल की व्यवस्था ने पर्यटकों को काफी राहत दी।

**नए आकर्षण का केंद्र:** जू सफारी के निदेशक रामसुंदर मनमोहन के अनुसार, इस वर्ष नई एवियरी और 180-डिग्री मूवी थिएटर पर्यटकों के बीच खासे लोकप्रिय रहे। क्यूआर कोड आधारित फीडबैक प्रणाली के जरिए शिकायतों का तत्काल निपटारा किया जा रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम गूगल रिव्यूज में भी दिखाई दे रहे हैं।

**व्यवस्थाओं को किया जाएगा सुदृढ़:** डीएफओ राजकुमार मनमोहन ने बताया कि बढ़ती भीड़ के बीच पर्यटकों को सुरक्षित और सुखद अनुभव देना हमारी प्राथमिकता है। वन कर्मी इस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। वर्ष 2026 में हम व्यवस्थाओं को और सुदृढ़ करने की योजना बना रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

## सीनेट की तैयारी के लिए बैठक स्टेडियम के लिए कर दिया दावा

**भागलपुर।** टीएमबीयू के अधिकारी और संबंधित कमेटी के सदस्य शनिवार को मारवाड़ी कॉलेज में बैठककर 17 जनवरी को सीनेट की होने वाली बैठक की तैयारी का जायजा ले रहे थे। इसी बीच मारवाड़ी पाठशाला वित्ती कमेटी के सदस्यों ने विवि के स्टेडियम पर मारवाड़ी कॉलेज के दावे का डॉक्यूमेंट सौंप दिया। वित्ती कमेटी के सज्जन किशोरपुरिया ने सदस्य डॉ. मृत्युंजय सिंह गंगा, शंभू दयाल खेतान सहित अन्य सदस्यों को डॉक्यूमेंट की कॉपियां दीं। हालांकि डॉ. गंगा ने उन्हें बताया कि जिस कमेटी को स्टेडियम मामले को देखना है उसके एक सदस्य अभी बाहर हैं। उनके भागलपुर लौटने के बाद बैठक की तिथि तय की जाएगी। दूसरी ओर विवि के अधिकारियों ने सीनेट की बैठक को लेकर सभी तैयारी 15 जनवरी तक पूरी कर लेने का निर्णय किया। बैठक में डीएसडब्ल्यू प्रो. अर्चना साह, मारवाड़ी कॉलेज के प्राचार्य प्रो. संजय कुमार झा, रजिस्ट्रार प्रो. रामाशीष पूर्वे भी मौजूद थे। इधर 12 जनवरी को लोकभवन में कुलपतियों की होने वाली बैठक के कारण टीएमबीयू में 13 जनवरी को सिंडिकेट हॉल में होने वाली सिंडिकेट की बैठक मारवाड़ी कॉलेज में शिफ्ट कर दी गई है। बैठक दोपहर में होगी।

### राष्ट्रीय वुशू में अर्पिता को 2 स्वर्ण व कृतिका को रजत

**भागलपुर।** छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव स्थित संस्कार सिटी इंटरनेशनल स्कूल में नौवीं राष्ट्रीय फेडरेशन कप वुशू प्रतियोगिता में भागलपुर की खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर जिले और राज्य का मान बढ़ाया है। भागलपुर वुशू संघ के महासचिव राजेश कुमार साह ने बताया कि बिहार टीम का प्रतिनिधित्व कर रही भागलपुर की तीन खिलाड़ियों ने इस राष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। अर्पिता दास ने उत्कृष्ट कौशल दिखाते हुए चांग छवान और चीएंशू (पतली तलवार चालन) इवेंट में दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए। अर्पिता वर्तमान में मणिपुर स्थित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। कृतिका आनंद ने फ्लेक्सिबल इवेंट नन चाकू में रजत पदक जीतकर सफलता हासिल की, जबकि जिया कुमारी ने ताईची व ताईची तलवार चालन में 5वां स्थान प्राप्त किया। ये सभी खिलाड़ी कार्मेल स्कूल की पूर्व छात्राएं हैं और मार्शल आर्ट्स अकादमी ऑफ अंग, मारवाड़ी व्यायामशाला में प्रशिक्षण लेती हैं। इन खिलाड़ियों की ऐतिहासिक उपलब्धि पर कार्मेल स्कूल की प्राचार्या सिस्टर आशा, मैनेजर सिस्टर सुजाता, संघ के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पवन पोद्दार, उपाध्यक्ष डॉ. तपन आदि थे।

### ड्यूटी छोड़ घूमती मिली जीएनएम, शोकॉज

**मुंगेर।** एक जनवरी को सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में ड्यूटी से गैरहाजिर रहने के मामले में जीएनएम सुमन कुमारी पर कार्रवाई की तलवार लटक गई है। अस्पताल उपाधीक्षक डॉ. रामप्रवेश प्रसाद ने जीएनएम से स्पष्टीकरण तलब किया है। उपाधीक्षक ने बताया कि एक जनवरी को इमरजेंसी वार्ड में ड्यूटी पर तैनात जीएनएम सुमन कुमारी को ड्यूटी स्थल पर रहने के बजाय मछली तालाब क्षेत्र में घूमते हुए पाया गया। यह मामला अस्पताल प्रबंधन के संज्ञान में आते ही गंभीरता से लिया गया। उन्होंने बताया कि संबंधित जीएनएम को 24 घंटे के भीतर लिखित रूप से अपना पक्ष स्पष्ट करने का निर्देश दिया गया है।

### विद्युत शवदाह गृह फिर से हुआ चालू

**मुंगेर।** मुंगेर के लाल दरवाजा स्थित श्मशान घाट में नगर निगम द्वारा संचालित विद्युत श्मशान गृह को पुनः चालू कर दिया गया है। करीब चार माह से बंद पड़े विद्युत शवदाह गृह को फिर से शुरू कराया गया है। विद्युत शवदाह गृह के केयरटेकर विजय मलिक ने बताया कि इसके चालू होने के बाद प्रतिदिन 10 से 12 शवों का विद्युत विधि से दाह-संस्कार किया जा रहा है। विद्युत शवदाह के लिए मात्र 500 रुपये शुल्क निर्धारित है। यह व्यवस्था न केवल पारंपरिक शवदाह की तुलना में कम खर्चीली है, बल्कि समय की भी काफी बचत करती है।

### नशे में हंगामा करता एक गिरफ्तार

**टेटिया बंबर।** पुलिस ने शराब के नशे में हंगामा मचाते एक युवक को गिरफ्तार कर लिया। जिसकी पहचान गौरवडीह निवासी मंगेश कुमार के रूप में हुई है। थानाध्यक्ष मुकेश कुमार केहरी ने बताया कि गश्ती के दौरान पुलिस को सूचना मिली कि एक व्यक्ति शराब के नशे में सार्वजनिक स्थान पर शोर-शराबा कर रहा है। पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को हिरासत में लिया। जांच में युवक द्वारा शराब सेवन किए जाने की पुष्टि हुई। इसके बाद आरोपी को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार आरोपी पर पहले भी इसी तरह के मामले दर्ज हैं।

### फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए टीम रवाना

**मुंगेर।** ऑल इंडिया औरंगाबाद गोल्ड कप फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए इलेवन स्टार एथलेटिक क्लब जमालपुर की टीम शनिवार को मुंगेर से रवाना हुई। महमूद आलम ने बताया कि इस टूर्नामेंट को लेकर टीम पिछले दस दिनों से कोच मिथुन कुमार के नेतृत्व में अभ्यास कर रही थी। कोच द्वारा खिलाड़ियों को खेल के टिप्स, तकनीकी जानकारी और फुटबॉल के गुर सिखाए गए हैं। टूर्नामेंट में जमालपुर अपना पहला मैच 4 जनवरी को धनबाद से खेलेगी जिसका फाइनल मैच 11 जनवरी को खेला जाएगा। टूर्नामेंट में बिहार सहित दूसरे राज्यों की आठ टीमें भाग ले रही हैं।

### मुंगेर विवि की वेबसाइट पर हर दिन अपडेट होगा कक्षाओं का विवरण

**मुंगेर।** राज्यपाल-सह-कुलाधिपति के निर्देश पर बिहार के सभी विश्वविद्यालयों की वेबसाइट व्यवस्था में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। इसी कड़ी में मुंगेर विश्वविद्यालय को भी अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर शैक्षणिक और परीक्षा संबंधी सूचनाएं प्रतिदिन अद्यतन कर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करनी होगी। इसे लेकर राजभवन की ओर से सभी विश्वविद्यालयों को पत्र जारी किया गया है। राज्यपाल के प्रधान सचिव डॉ. रॉबर्ट एल. चोंग्थू द्वारा जारी पत्र में स्पष्ट किया गया है कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर तीन प्रमुख जानकारियां अनिवार्य रूप से प्रदर्शित की जाएं। जिसमें विश्वविद्यालय का शिक्षण कार्यक्रम यानी टीचिंग शेड्यूल और परीक्षा कार्यक्रम शामिल किया जाए। साथ ही संकायवार प्रतिदिन संचालित होने वाली कक्षाओं की विस्तृत जानकारी देनी होगी। जिसमें संबंधित प्राध्यापक का नाम भी अंकित होना चाहिए। इसके अलावा वार्षिक परीक्षा कैलेंडर का स्पष्ट प्रदर्शन होना चाहिए। मुंगेर विश्वविद्यालय के लिए यह निर्देश इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि पिछले कुछ समय से सत्र विलंब, कक्षा और परीक्षा कार्यक्रम को लेकर छात्रों में असमंजस की स्थिति बनी रही है। वेबसाइट पर प्रतिदिन अपडेट की अनिवार्यता से छात्रों को समय पर जानकारी मिलेगी और शैक्षणिक पारदर्शिता बढ़ेगी।

### मुंगेर में सड़क हादसे में महिला की मौत

**मुंगेर।** मुंगेर के हवेली खड़कपुर थाना क्षेत्र में राजारानी तालाब के पास एक हाईवा ने बाइक सवार को पीछे से टक्कर मार दी। इस भीषण हादसे में बाइक हाईवा के भीतर घुस गई। घटना में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई। मृतका के पुत्र और भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया है। सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और हाईवा तथा बाइक को जब्त कर थाने ले गई। हालांकि, हाईवा चालक घटना स्थल से फरार होने में सफल रहा। मृतका की पहचान तारापुर थाना क्षेत्र के सोनडीहा गांव निवासी रेशमी शुक्ला के रूप में हुई है। वह अपने पुत्र हर्षित का एक निजी विद्यालय में दाखिला कराने के लिए अपने भाई नीतीश झा के साथ हवेली खड़गपुर जा रही थीं, तभी यह दुर्घटना हुई। रेशमी शुक्ला के चाचा भागीनंदन झा ने बताया कि रेशमी के एक पुत्र और एक पुत्री है। हादसे में उनके भाई नीतीश झा और पुत्र हर्षित को गंभीर चोटें आई हैं, जिन्हें भागलपुर रेफर किया गया है। भागीनंदन झा ने यह भी बताया कि नीतीश झा की शादी 5 फरवरी को होने वाली थी। हवेली खड़कपुर थाना अध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि पुलिस ने हाईवा और बाइक को जब्त कर लिया है। चालक की पहचान कर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

# तेज रफ्तार कार ने साइकिल सवार को उड़ाया

निज संवाददाता। भागलपुर

**भागलपुर में 20 फीट हवा में उड़ा युवक, फिर पेड़ से टकराई गाड़ी**

भागलपुर में आज तेज रफ्तार कार ने साइकिल सवार युवक को टक्कर मार दी। हादसे में युवक हवा में 20 फीट उड़ गया। जिससे युवक गंभीर रूप से घायल है। युवक से टकराने के बाद कार पेड़ के गोलंबर से टकराई। घटना, तिलकामांझी थाना क्षेत्र के भव्या के पास की है। घायल लोगों ने इलाज के लिए निजी क्लिनिक में भर्ती करवाया गया है। जहां उसका इलाज चल रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों रंजीत मंडल ने बताया कि तेज रफ्तार कार ने गलत दिशा से आते हुए साइकिल सवार युवक को जोरदार टक्कर मार दी। कार तिलकामांझी से घंटा घर तरफ जा रहे थे।

वही, बाइक सवार युवक कहचरी से तिलकामांझी चौक की तरफ जा रहा था। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है।

**पुलिस की गैरमौजूदगी को लेकर स्थानीय लोगों में आक्रोशः** घायल युवक की पहचान फिलहाल स्पष्ट नहीं हो पाई है। लोगों का कहना है कि कार किसी डॉक्टर का है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। घटना के तुरंत बाद राहगीरों और स्थानीय लोगों ने घायल को मदद पहुंचाने का प्रयास किया और उसे इलाज के लिए भेजा गया। घटना के एक घंटे बाद तक भी पुलिस मौके पर नहीं पहुंची। पुलिस की गैरमौजूदगी को लेकर स्थानीय लोगों में आक्रोश देखा गया। पुलिस ने कार को जब्त कर लिया है। ट्रैफिक थानेदार से संपर्क करने की कोशिश की गई। लेकिन नंबर नेटवर्क एरिया से बाहर बताया गया।

# सड़क सुरक्षा सप्ताह के पहले दिन 3 की मौत

निज संवाददाता। मुंगेर

मुंगेर में सड़क सुरक्षा सप्ताह के पहले दिन अलग-अलग सड़क हादसों में तीन लोगों की मौत हो गई। इन घटनाओं में दो अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनका इलाज चल रहा है। पुलिस ने यातायात नियमों का पालन करने की अपील की है। पहली घटना हवेली खड़गपुर थाना क्षेत्र के राजरानी तालाब के पास हुई। यहां बेटे का एडमिशन कराने जा रहे बाइक सवार को हाइवा ने कुचल दिया। इस हादसे में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बाइक पर सवार दो अन्य घायलों का भागलपुर में इलाज चल रहा है।

**श्राद्ध का भोज खाने जा रहे थे पैदलः** दूसरी घटना देर शाम बरियारपुर थाना क्षेत्र के नया छावनी में हुई। नया छावनी निवासी वृद्ध रामवृक्ष शर्मा सड़क किनारे पैदल श्राद्ध का भोज खाने जा रहे थे। तभी बरियारपुर की ओर से आ रही एक अज्ञात चारपहिया वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजनों ने रामवृक्ष शर्मा को बरियारपुर अस्पताल पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें मुंगेर सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। सदर अस्पताल में चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर रविवार को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंपने की बात कही है।

**बाइक सवार को कार ने मारी टक्करः** तीसरी घटना मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के मुंगेर-बरियारी एनएच 80 पर बोचाही के पास हुई।

भागलपुर के तरैटा गांव में गहराया जल संकट

## बोरिंग का मोटर खराब होने से दस दिनों से सप्लाई ठप

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर जिले के तरैटा गांव में जल संकट उत्पन्न हो गया है। जल-नल योजना के तहत लगे बोरिंग का मोटर खराब होने से वार्ड संख्या एक में पिछले दस दिनों से पानी की आपूर्ति पूरी तरह ठप है। इससे गांव के हजारों किसान और ग्रामीण गंभीर परेशानी का सामना कर रहे हैं। घरेलू उपयोग, खेतों की सिंचाई और पीने के लिए पानी नहीं मिल पा रहा है। मामला सुल्तानगंज ब्लॉक के भीरखुंद पंचायत से जुड़ा है।

**फसलों की सिंचाई प्रभावितः** ग्रामीणों के अनुसार, ग्रामीण गुड्डू कुमार ने बताया कि बोरिंग का मोटर 28 दिसंबर को खराब हो गया था। पहले भी मोटर खराब होने पर पंचायत के मुखिया की ओर मरम्मत कराई गई थी, लेकिन ठीक से काम नहीं होने के कारण मोटर दोबारा खराब हो गया। किसानों का कहना है कि हजारों लोग एक ही बोरिंग पर निर्भर हैं, जो अब पर्याप्त नहीं है। पानी नहीं मिलने से फसलों की सिंचाई प्रभावित हो रही है, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान का डर सता रहा है। कई ग्रामीण दूर-दराज के इलाकों से पानी लाने को मजबूर हैं, जिससे महिलाओं और बुजुर्गों को विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने प्रशासन और पंचायत प्रतिनिधियों से जल्द से जल्द खराब मोटर को बदलवाने और गांव में एक अतिरिक्त बोरिंग की व्यवस्था करने की मांग की है।

# भागलपुर में युवक पर लाठी-डंडे से हमला, सिर में गंभीर चोट

निज संवाददाता। भागलपुर

**परिवार के साथ रिसेप्शन पार्टी में जा रहा था, रास्ता के विवाद में पड़ोसियों ने घेरकर मारा**

भागलपुर के सिमरिया गांव में एक युवक पर पड़ोसियों ने लाठी-डंडे से हमला कर दिया। सिर में गंभीर चोटें आई हैं। इलाज के लिए जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल (मायागंज) में भर्ती कराया गया है। घायल की पहचान मो. फारूक अली के पुत्र मो. हंजला(29) के तौर पर हुई है। घटना कजरैली थाना क्षेत्र की है। पीड़ित ने बताया कि अपने परिवार के साथ स्कॉर्पियो से बहन की रिसेप्शन पार्टी में शामिल होने जा रहा था। रास्ते में पड़ोसी मो. सिकंदर और कैफ ने सड़क किनारे एक ऑटो खड़ा करके रखा था। जब रास्ता देने को कहा तो गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर लाठी-डंडे मार मारा। मेरा सिर फट गया, मैं लहूलुहान होकर वहीं सड़क पर गिर पड़ा।

**शिकायत के आधार पर की जाएगी कार्रवाईः** घटना की सूचना मिलने पर डायल-112 की पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने घायल युवक को नाथनगर रेफरल अस्पताल पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने मायागंज रेफर कर दिया। पूरी वारदात पास लहे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। कजरैली थानाध्यक्ष ने बताया कि पीड़ित पक्ष से लिखित शिकायत मिलने के बाद आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

# भागलपुर में आठवीं तक के स्कूल बंद, बढ़ते ठंड को लेकर फैसला

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर में कड़ाके की ठंड और घने कोहरे के कारण जिला प्रशासन ने फैसला लिया है। छात्रों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए, जिले में कक्षा आठ तक के सभी स्कूल 8 जनवरी 2026 तक बंद कर दिए गए हैं। भागलपुर के जिलाधिकारी की ओर से जारी आदेश के अनुसार, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने अत्यधिक ठंड, सुबह-शाम कम तापमान और घने कोहरे की स्थिति बने रहने की संभावना जताई है। इससे छात्रों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

**सभी शैक्षणिक गतिविधियों पर प्रतिबंधः** इस स्थिति के मद्देनज़र, जिला दंडाधिकारी ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा-163 के तहत यह आदेश जारी किया है। इसके तहत, जिले के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों, जिसमें प्री-स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र और कोचिंग संस्थान भी शामिल हैं। इसमें कक्षा 8 तक की सभी शैक्षणिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाया गया है। हालांकि, कक्षा 9 और उससे ऊपर की कक्षाओं का संचालन सुबह 10:30 बजे से अपराह्न 3:30 बजे के बीच किया जाएगा। प्री-बोर्ड और बोर्ड परीक्षाओं से संबंधित विशेष कक्षाएं और परीक्षाएं इस आदेश से मुक्त रहेंगी। यह आदेश 5 जनवरी 2026 से लागू होकर 8 जनवरी 2026 तक प्रभावी रहेगा। विद्यालय प्रबंधन को आदेश का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है। जिला प्रशासन ने अभिभावकों से भी सहयोग की अपील की है, ताकि बच्चों को ठंड के मौसम में सुरक्षित रखा जा सके। शिक्षा विभाग, अनुमंडल पदाधिकारियों, पुलिस प्रशासन और जनसंपर्क विभाग को इस आदेश के अनुपालन और प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए गए हैं।

# 'भगवान कसम खाकर कह रहा हूं रिश्वत नहीं लिया'

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर के पीरपैंती थाना में तैनात पुलिस अवर निरीक्षक आर.एन. सिंह पर रिश्वतखोरी और निर्दोष लोगों को फंसाने का आरोप है। स्थानीय महिला कविता कुमारी का कहना है कि पड़ोसियों के बीच हुए एक मामूली विवाद को आपराधिक रूप देते हुए दरोगा ने जानबूझकर विपिन सिंह और उनके पिता अवधेश सिंह को आरोपी बना दिया। पीड़िता भाजपा विधायक मुरारी पासवान के पास पहुंची और दरोगा की शिकायत की। इसके बाद विधायक थाना पहुंचे और दरोगा की क्लास लगाई। जिसका वीडियो सामने आया है। इसमें दरोगा कहते हुए नजर आ रहे है कि भगवान कसम मैंने रिश्वत नहीं लिया है। महिला गलत कह रही है। विपिन सिंह की पत्नी कविता कुमारी का आरोप है कि मुकदमे से नाम हटाने के एवज में 15 से 20 हजार रुपए की अवैध वसूली की गई है। पीड़िता कविता कुमारी का कहना है कि विवाद सामान्य था, लेकिन पुलिस ने बिना समुचित जांच के उनके पति और ससुर को केस में फंसा दिया। विपिन सिंह के पिता अवधेश सिंह को जेल भी जाना पड़ा। कविता कुमारी के अनुसार, जब वह बार-बार थाना जाकर खुद को निर्दोष बताते हुए नाम हटाने की गुहार लगाती रहीं, तो जांच कर रहे दरोगा आर.एन. सिंह ने साफ तौर पर कहा कि नाम हटवाने के लिए पैसे देने होंगे।

**पुलिस पर पैसे लेने का आरोपः** दबाव और भय के माहौल में उन्होंने अलग-अलग किस्तों में करीब 15 से 20 हजार रुपए दरोगा को दिए, लेकिन इसके बावजूद कोई राहत नहीं मिली। उलटे पुलिस का दबाव बढ़ता चला गया। थाना स्तर पर न्याय न मिलने से आहत पीड़िता इंसाफ की गुहार लेकर पीरपैंती से भाजपा विधायक मुरारी पासवान के आवास पहुंची, जहां वह फूट-फूटकर रो पड़ी और पूरी आपबीती सुनाई। मामले की गंभीरता को देखते हुए विधायक मुरारी पासवान स्वयं पीरपैंती थाना पहुंचे और थानाध्यक्ष व संबंधित दरोगा से पूरे प्रकरण पर पूछताछ की। पूछताछ का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें दरोगा आर.एन. सिंह विधायक के सामने भगवान की कसम खाकर यह कहते नजर आ रहे हैं कि उन्होंने किसी से कोई पैसा नहीं लिया है। विधायक ने थाना परिसर में ही दरोगा की जमकर क्लास लगाई और स्पष्ट शब्दों में कहा कि निर्दोष लोगों को फंसाना और रिश्वत लेना किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने निष्पक्ष जांच कर पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने का भरोसा दिया।

## जिले में पछुआ हवा ने बढ़ाई कनकनी

निज संवाददाता। मुंगेर

शनिवार की सुबह घने कोहरे, शीतलहर और तेज पछुआ हवा ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। रात से ही छाए कुहासे ने सुबह होते-होते शहर को अपनी गिरफ्त में ले लिया। हालात ऐसे रहे कि सुबह 10 बजे तक 70 मीटर से आगे कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा था। सड़कों पर रेंगते वाहन, ठिठुरते राहगीर और हर ओर पसरा सन्नाटा, शनिवार को इस सीजन का सबसे सर्द और तल्ख मिजाज दिखा दिया। दिनभर सूर्य के दर्शन नहीं हुए। घने कोहरे की चादर और तेज पछुआ हवा ने ठंड के असर को कई गुना बढ़ा दिया। पूरे जिले में कनकनी और ठिठुरन के साथ गिरती ओस की बूंदों से बाहर निकलना काफी असहज रहा। वहीं सुबह से ही बाजार और प्रमुख सड़कों पर आवाजाही बेहद कम रही। शनिवार का तेवर इतना सख्त रहा कि हालात लगभग कोल्ड-डे जैसे महसूस किए गए। तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई। शनिवार को अधिकतम तापमान जहां 22 डिग्री सेल्सियस पर स्थिर रहा और न्यूनतम तापमान एक डिग्री की गिरावट के साथ 6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। करीब 12 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चली तेज पछुआ हवा ने ठंड की धार और तेज कर दी। धूप न निकलने से दिनभर लोग ठिठुरते रहे और शहर ठंड के आगोश में पूरी तरह जकड़ा रहा। कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान मुकेश कुमार ने बताया कि तापमान में गिरावट और धूप की कमी के कारण शनिवार को ठंड अधिक महसूस की गई। जिले में अधिकतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 6 डिग्री सेल्सियस पर रहा।

# भागलपुर में 'रन फॉर ह्यूमैनिटी' का प्रोग्राम स्वास्थ्य जागरूकता के लिए विशाल कार्यक्रम

**650 लोग 10 किलोमीटर दौड़े**

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर में श्री सत्य साई सेवा संगठन, बिहार ने 'रन फॉर ह्यूमैनिटी' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मानव सेवा, स्वास्थ्य जागरूकता और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देना था। इस आयोजन को लेकर पूरे बिहार के भक्तों में उत्साह देखा गया। इस कार्यक्रम के लिए राज्यभर से कुल 1060 भक्तों ने पंजीकरण कराया था। इनमें से लगभग 650 प्रतिभागियों ने 3 किलोमीटर, 5 किलोमीटर और 10 किलोमीटर की दौड़ सफलतापूर्वक पूरी की। विभिन्न आयु वर्ग के धावकों ने अनुशासन और उत्साह के साथ इसमें हिस्सा लिया।

**प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ायाः** बिहार राज्य के राज्य अध्यक्ष सरोज चौधरी इस सेवा और स्वास्थ्य केंद्रित आयोजन में उपस्थित रहे। उनके साथ संगठन के कई राज्य स्तरीय पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया और कार्यक्रम की व्यवस्थाओं का संचालन किया। राज्य अध्यक्ष सरोज चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि श्री सत्य साई सेवा संगठन का मूल उद्देश्य "लव ऑल, सर्व ऑल" (सभी से प्रेम करो, सबकी सेवा करो) के सिद्धांत को लागू करना है। उन्होंने बताया कि ऐसे कार्यक्रम समाज में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक चेतना को मजबूत करते हैं। कार्यक्रम के सफल आयोजन पर संयुक्त राज्य सेवा समन्वयक दीपक कुमार श्रीवास्तव ने सभी प्रतिभागियों, स्वयंसेवकों और पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन संगठन की एकता, सेवा भावना और समर्पण को दर्शाता है। भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज सेवा जारी रहेगी। यह 'रन फॉर ह्यूमैनिटी' केवल एक दौड़ नहीं थी, बल्कि मानवता, सेवा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का एक सशक्त संदेश भी था।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें :
www.sonvarshavani.com



# विचार-मंथन

## संपादकीय

## सबसे स्वच्छ शहर में जहरीला पानी, तमगे नहीं, जान ज्यादा जरूरी

दूषित पेयजल की मार से प्रभावित इलाके में स्थानीय लोगों ने पिछले डेढ़ वर्ष से इससे होने वाली परेशानी और शिकायत के बावजूद सुनवाई न होने की बात कही। विचित्र और अफसोसनाक है कि जिस शहर को पिछले कई वर्षों से देश के सबसे स्वच्छ शहर का तमगा मिल रहा हो, वहां दूषित पेयजल के सेवन से लोगों के मरने की खबरें आती हैं। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश के इंदौर शहर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से कई लोगों की मौत हो गई और करीब दो सौ लोगों को अस्पताल भर्ती होना पड़ा। खबरों के मुताबिक, भागीरथपुरा में नर्मदा नदी की पाइपलाइन में गंदा पानी मिल गया, जिससे पानी दूषित हो गया। लोगों ने इस पानी का सेवन शायद इसलिए भी कर लिया कि साफ और गंदे पानी में फर्क करना मुश्किल हो गया था।सवाल है कि अगर आम लोग पेयजल के लिए पानी की आपूर्ति पर निर्भर हों, तो उनके पास गंदा और दूषित पानी पहुंचने की जिम्मेदारी किसकी है। लोगों की मौत के मामले के तूल पकड़ने के बाद सरकार ने गलती मानते हुए आनन-फानन में कुछ कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही, लेकिन यह साफ है कि संबंधित महकमों की नींद तभी खुलती है, जब कोई बड़ा नुकसान हो चुका होता है।यों, देश भर में लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना सरकार का दायित्व है, लेकिन ऐसा लगता है कि आम लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है और इस क्रम में उनकी सेहत के साथ क्या होता है, इसकी परवाह शायद किसी को नहीं है। खबरों के मुताबिक, दूषित पेयजल की मार से प्रभावित इलाके में स्थानीय लोगों ने पिछले डेढ़ वर्ष से इससे होने वाली परेशानी और शिकायत के बावजूद सुनवाई न होने की बात कही। मगर सरकार के कामकाज की शैली का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि पेयजल में दूषित पानी मिलने के बाद जब लोगों की तबीयत बिगड़ने लगी, तब भी अगले कई दिन तक इस पर ध्यान नहीं दिया गया।इसके अलावा, पीने के पानी के पाइप लाइन से अलग गंदे पानी के निकासी की लाइन को सुरक्षित मानकों तक दूर रखने की व्यवस्था नहीं की गई, तो इसकी क्या वजह हो सकती है? क्या यह सिर्फ अक्षम अधिकारियों की अदूरदर्शिता का मामला है या फिर जानबूझ कर की गई अनदेखी का? इस तरह की लापरवाही का इलाज सिर्फ कुछ औपचारिक कदम नहीं हैं, बल्कि इसके लिए सभी स्तर पर सजगता और जिम्मेदारी की जरूरत है।विडंबना यह है कि सरकार का मकसद प्रचार के लिए किसी शहर की स्वच्छता के तमगे हासिल करना रह गया लगता है। सबसे स्वच्छ शहर कहे जाने वाले इंदौर में अगर कुछ लोगों को जहरीला पानी पीने पर मजबूर होना पड़ा, तो इस विरोधाभासी हकीकत की पड़ताल करने की जरूरत है कि ऐसे तमगे जारी किए जाने के पैमाने क्या हैं? पीने का पानी सबसे बुनियादी जरूरत है, जिसके बिना ज्यादा वक्त तक नहीं रहा जा सकता।सरकार देश भर में हर घर नल से जल पहुंचाने की योजना के तहत सबको स्वच्छ पेयजल मुहैया कराने का दावा करती है। मगर इस दावे की हकीकत अक्सर सामने आती रहती है, जब किसी इलाके में भूजल सूख जाने तो कहीं पीने के पानी के लिए लोगों के जद्दोजहद करने की खबरें आती हैं। जहां पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था है भी, अगर वहां यह सेहत पर जोखिम से लेकर जानलेवा होने तक के खतरे से बची नहीं है, तो इसे कैसे देखा जाएगा। यह समझना मुश्किल है कि कमियों पर ध्यान देने और पेयजल के पाइप लाइन के सुरक्षित होने की निगरानी नियमित जवाबदेही में शामिल क्यों नहीं होती, ताकि ऐसी त्रासदी से बचा जा सके।

*एक तरह से कह सकते हैं कि दोनों परिवारों के राजनीतिक अस्तित्व पर ही सवाल उठने लगा है। एक कहावत है, मरता क्या नहीं करता। राजनीतिक अस्तित्व पर जब बन आती है तो कम ही सियासी हस्तियां होती हैं, जो समझौते नहीं करतीं। इसे समझदारी कहें या फिर राजनीति की रवायत, ठाकरे परिवार और पवार कुनबा-दोनों ही एक होने जा रहे हैं। पारिवारिक बिखराव को समेटने की कोशिश तेज हो गई है। ठाकरे बंधु तो बाकायदा प्रेस कांफ्रेंस करके एक हो चुके हैं।*

# अस्तित्व संकट के बीच पारिवारिक एकता का राग

**(उमेश चतुर्वेदी)**

चाहे ठाकरे कुनबा हो या फिर पवार परिवार, अगर दोनों एक हो रहे हैं तो उसकी सिर्फ अस्तित्व की रक्षा भी नहीं है, बीजेपी रूपी चुनौती से पार पाना भी है और मुंबई महानगर पालिका, पुणे महानगर पालिका और पिंपरी चिंचवड़ महानगर पालिका पर कब्जे की चाहत भी है। मुंबई महानगर पालिका का सालाना बजट सत्तर हजार करोड़ रूपए का है। राजनीति के बारे में कहा जाता है कि यहां कोई न तो स्थायी दोस्त होता है और ना ही कोई स्थायी दुश्मन। राजनीति में ऐसे कम ही उदाहरण मिलेंगे,जहां दोस्ती के मूल में दिल का रिश्ता होता है। गौर से देखें तो संभावनाओं, चुनौतियों और अवसरों की बुनियाद पर पर दोस्ती या दुश्मनी के रिश्ते आगे बढ़ते हैं। महाराष्ट्र के दो राजनीतिक परिवारों के मिलन को भी इसी अंदाज और संदर्भ में देखा जाना चाहिए। राज्य का पवार परिवार हो या फिर ठाकरे कुनबा, अगर एक होता नजर आ रहा है या एक हुआ है तो इसका मतलब यह नहीं है कि दोनों परिवारों के प्रमुख अलंबरदारों के दिल मिल चुके हैं। बल्कि राजनीतिक संभावनाओं और अवसरों ने उन्हें एक होने को प्रेरित किया है। चाहे ठाकरे परिवार हो या फिर पवार कुनबा, दोनों में कुछ समानताएं हैं। शरद पवार हों या बाल ठाकरे, एक दौर में दोनों की महाराष्ट्र की राजनीति में तूती बोलती थी। पिछली सदी के आखिरी दशक में तो राजनीतिक हलके का एक बड़ा हिस्सा शरद पवार को देश का भावी प्रधानमंत्री तक मानने लगा था। इसी तरह महाराष्ट्र के टाइगर के रूप में बाल ठाकरे की ख्याति रही। दोनों ही राजनीतिक खानदानों के मुखिया का स्वाभाविक उत्तराधिकारी दोनों के भतीजे ही माने जाते थे। एक दौर तक शरद के उत्तराधिकारी के तौर पर देश और प्रदेश अजित पवार को देखता था। इसी तरह शिवसैनिक भी बाल ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे को अगली पीढ़ी का ठाकरे सीनियर मान चुका था। लेकिन जब उत्तराधिकार सौंपने की बारी आई तो पवार ने अपनी बेटी सुप्रिया सुले पर भरोसा जताया और बाल ठाकरे ने अपने छोटे बेटे राज ठाकरे को। ऐसे हालात में अजित और राज ठाकरे को अपना भविष्य चुनौतीपूर्ण लगा, राजनीतिक संभावनाएं कम होती दिखीं तो दोनों ने अपनी राह अलग कर ली। उन्नीस साल पहले राज ठाकरे ने शिवसेना से अलग होकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना बना ली तो अजित पवार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस के मूल धड़े पर ही कब्जा कर लिया। पार्टी के असल संस्थापक शरद पवार पुछल्ला पार्टी लेकर एक तरह से किनारे का दल संभालने लगे। पवार परिवार और ठाकरे कुनबे में बिखराव की कहानी भी अलग-अलग रही। जब तक बाल ठाकरे के बेटे उद्धव ठाकरे अपनी शिवसेना को बीजेपी के साथ खड़ा रखे, तब तक तो उनके नेतृत्व को चुनौती नहीं मिली। दल का राज्य में ठीकठाक समर्थन भी रहा। हालांकि महत्वाकांक्षाओं के साथ अलग हुए राज ठाकरे को राजनीतिक सफलताएं न के बराबर मिलीं। लेकिन जब से उद्धव ने बीजेपी को छोड़ कांग्रेस और पवार की एनसीपी का साथ पकड़ा, राजनीतिक मैदान में उसका आधार घटने लगा। वहीं पवार सीनियर से अलग होने के बावजूद बीजेपी के साथ के चलते अजित का राजनीतिक रूतबा कम नहीं हुआ। अलबत्ता कभी भारत के प्रधानमंत्री मैटेरियल देखे जाते रहे वरिष्ठ पवार की सियासी साख घटती चली गई। कुनबे में बिखराव के चलते दोनों परिवारों की राजनीतिक ताकत बीजेपी के सामने बौनी होती जा रही है। एक तरह से कह सकते हैं कि दोनों परिवारों के राजनीतिक अस्तित्व पर ही सवाल उठने लगा है। एक कहावत है, मरता क्या नहीं करता। राजनीतिक अस्तित्व पर जब बन आती है तो कम ही सियासी हस्तियां होती हैं, जो समझौते नहीं करतीं। इसे समझदारी कहें या फिर राजनीति की रवायत, ठाकरे परिवार और पवार कुनबा-दोनों ही एक होने जा रहे हैं। पारिवारिक बिखराव को समेटने की कोशिश तेज हो गई है। ठाकरे बंधु तो बाकायदा प्रेस कांफ्रेंस करके एक हो चुके हैं, जबकि पवार परिवार अपने गढ़ बारामती में एक होने का संकेत दे रहा है। बारामती में हाल ही में पवार परिवार ने एक आयोजन किया, जिसमें आज के प्रमुख उद्योगपति गौतम अडानी के मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया था। इसे पवार कुनबे ने खूब प्रचारित किया। इस प्रचार का संदेश साफ है कि दोनों परिवार एक होने जा रहे हैं। चाहे ठाकरे कुनबा हो या फिर पवार परिवार, अगर दोनों एक हो रहे हैं तो उसकी सिर्फ अस्तित्व की रक्षा भी नहीं है, बीजेपी रूपी चुनौती से पार पाना भी है और मुंबई महानगर पालिका, पुणे महानगर पालिका और पिंपरी चिंचवड़ महानगर पालिका पर कब्जे की चाहत भी है। मुंबई महानगर पालिका का सालाना बजट सत्तर हजार करोड़ रूपए का है। यह रकम उत्तर पूर्व के राज्यों के समूचे बजट से भी ज्यादा बैठती है। पिंपरी-चिंचवड़ महानगर पालिका के दायरे में एशिया का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। जाहिर है कि यहां से कर के रूप में मोटी रकम आती है। ठाकरे परिवार की एकता के पीछे एक कारण जहां बृहन्नमुंबई महानगर पालिका पर कब्जा जमाना है, वहीं पवार परिवार की एकता के पीछे पुणे महानगरपालिका और पिंपरी-चिंचवड़ महानगर पालिका पर कब्जा जमाना है। दोनों परिवारों को लगता है कि अगर वे बिखरे रहे तो उनके प्रभाव वाली महानगरपालिकाओं में उन्हें कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। यहां यह बताना जरूरी है कि एक दौर में बीएमसी पर शिवसेना का कब्जा रहता था तो पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ में पवार परिवार का। दोनों परिवारों के मिलन के पीछे की बड़ी वजह यही है। भारतीय जनता पार्टी का इतिहास देखिए, अपने विस्तार के पहले चरण में वह अपने साथी दलों के सहयोग पर निर्भर रही। बाद के दौर में उसने खुद का प्रभाव बढ़ाया और अपने दम पर वह स्थापित होती चली गई। हरियाणा, उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात के बाद अब इसी तरह वह महाराष्ट्र में वह अपने दम पर उभर चुकी है। जबकि कुछ साल पहले तक महाराष्ट्र में एक तरह से शिवसेना के छोटे भाई की भूमिका में रहती थी। अब चाहे शिवसेना का टूटा हुआ धड़ा हो या अजित पवार वाली एनसीपी, दोनों उसके छोटे भाई की भूमिका में हैं। जिस तरह निकाय चुनावों में बीजेपी ने अपना दबदबा कायम किया है, उससे पवार परिवार की भी चिंताएं बढ़ी हैं और ठाकरे खानदान की भी। इसीलिए दोनों परिवार एक हुए हैं या होते नजर आ रहे हैं। पवार परिवार अब एक साथ पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ के चुनाव में उतरने जा रहा है तो ठाकरे परिवार मुंबई में। लेकिन यह तय है कि दोनों परिवारों के रिश्तों की मजबूती इन महापालिका चुनाव नतीजों पर निर्भर करेगी। अगर उन्हें जीत मिली तो तय है कि पारिवारिक गठबंधन आगे बढ़ेंगे, और ऐसा नहीं हुआ तो दोस्ती की नई राह तलाशने की कोशिशें फिर से तेज होंगी।

**लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं। (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)**

# उमर खालिद के समर्थन में उतर कर मामदानी ने बड़ा खतरनाक खेल खेला है

**(नीरज कुमार दुबे)**

इस पत्र के सामने आने के बाद भारत में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली है। आलोचकों का कहना है कि किसी विदेशी शहर के मेयर द्वारा भारत के एक संवेदनशील कानूनी मामले में पक्ष लेना अनुचित है। खासकर तब, जब मामला दंगों और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हो। न्यूयार्क के मेयर जोहरान मामदानी की ओर से भारत में तिहाड़ जेल में बंद उमर खालिद को भेजे गए एक पत्र ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नया विवाद खड़ा कर दिया है। हम आपको बता दें कि यह पत्र उमर खालिद के माता पिता से मुलाकात के दौरान दिया गया और इसमें मामदानी ने खालिद के विचारों की तारीफ करते हुए लिखा कि वे उनके बारे में सोच रहे हैं। उल्लेखनीय है कि उमर खालिद पर वर्ष 2020 के दिल्ली दंगों से जुड़े गंभीर आरोपों की सुनवाई चल रही है। इस पत्र के सामने आने के बाद भारत में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली है। आलोचकों का कहना है कि किसी विदेशी शहर के मेयर द्वारा भारत के एक संवेदनशील कानूनी मामले में पक्ष लेना अनुचित है। खासकर तब, जब मामला दंगों और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हो। हम आपको याद दिला दें कि उमर खालिद पर गैरकानूनी गतिविधि निरोधक कानून के तहत आरोप हैं और वह न्यायिक प्रक्रिया के अधीन है। ऐसे में किसी विदेशी जनप्रतिनिधि की ओर से सहानुभूति और प्रशंसा का सार्वजनिक संकेत कई सवाल खड़े करता है। हम आपको बता दें कि मामदानी के पत्र को सिर्फ एक व्यक्तिगत संदेश नहीं माना जा रहा है बल्कि इसे एक राजनीतिक संकेत के रूप में देखा जा रहा है। भारत और अमेरिका के संबंधों के संदर्भ में भी इस कदम को असहज माना गया है। भारत में यह तर्क उभरा है कि यदि हर देश का स्थानीय नेता दूसरे देश के न्यायिक मामलों पर टिप्पणी करने लगे तो संप्रभुता और संस्थागत सम्मान पर आंच आएगी। देखा जाये तो जोहरान मामदानी का यह कदम साफ तौर पर भारत के आंतरिक मामलों में दखल है। सवाल सीधा है। सवाल उठता है कि न्यूयार्क के मेयर को यह अधिकार किसने दिया कि वह भारत के दंगों से जुड़े एक आरोपी की तारीफ करे और उसे नैतिक समर्थन दे। मामदानी को समझना होगा कि भारत की न्याय व्यवस्था सक्षम है, संवैधानिक है और अपने फैसले खुद लेने में समर्थ है। उमर खालिद कोई साधारण सामाजिक कार्यकर्ता नहीं है, बल्कि उस पर दिल्ली दंगों की साजिश में शामिल होने के गंभीर आरोप हैं। ऐसे व्यक्ति को वैश्विक मंच से नैतिक समर्थन देना न केवल भारत के लिए गलत है, बल्कि यह एक खतरनाक परंपरा को जन्म देता है। इससे यह संदेश जाता है कि दंगों और हिंसा से जुड़े आरोपों को वैचारिक खोल पहनाकर महिमामंडित किया जा सकता है। यह संदेश उन तत्वों के लिए संजीवनी का काम करता है जो अराजकता और टकराव की राजनीति में विश्वास रखते हैं। मामदानी को यह समझना चाहिए था कि भारत का आंतरिक कानून और व्यवस्था किसी विदेशी राजनेता की राय का मोहताज नहीं। यदि उन्हें मानवाधिकार की इतनी ही चिंता है, तो उन्हें अपने देश में चल रही हिंसा, नस्लीय तनाव और अपराध की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। भारत में न्याय की प्रक्रिया अदालतों के माध्यम से चलती है, न कि सोशल संदेशों और पत्रों के जरिये। इस तरह का समर्थन सिर्फ भारत में ही नहीं, अमेरिका में भी गलत असर डाल सकता है। जब वहां के नेता दंगों के आरोपी की तारीफ करते हैं, तो यह वहां मौजूद कट्टर और हिंसक विचारधारा के लोगों का हौसला बढ़ाता है।

## सुडोकू पहेली क्रमांक- 5964

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 9 | 2 | | | | | 7 | 4 |
| | | | | 2 | 3 | | | 5 |
| 4 | | | | | | | | |
| | 6 | | | 3 | 4 | | | 7 |
| 2 | | 8 | 7 | 1 | 5 | 4 | | 9 |
| 1 | | | 6 | 9 | | | 3 | |
| | | | | | | | | 8 |
| 8 | | | 5 | 6 | | | | |
| 7 | 4 | | | | | 3 | 2 | |

**नियम :** प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

### सुडोकू पहेली क्र. 5963

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 5 | 1 | 7 | 2 | 9 | 6 | 4 | 3 |
| 4 | 2 | 3 | 5 | 6 | 8 | 1 | 7 | 9 |
| 7 | 9 | 6 | 1 | 4 | 3 | 2 | 8 | 5 |
| 2 | 8 | 7 | 3 | 1 | 5 | 4 | 9 | 6 |
| 3 | 6 | 9 | 4 | 8 | 7 | 5 | 2 | 1 |
| 1 | 4 | 5 | 6 | 9 | 2 | 8 | 3 | 7 |
| 9 | 7 | 2 | 8 | 5 | 6 | 3 | 1 | 4 |
| 5 | 1 | 8 | 9 | 3 | 4 | 7 | 6 | 2 |
| 6 | 3 | 4 | 2 | 7 | 1 | 9 | 5 | 8 |

## वर्ग पहेली 5964

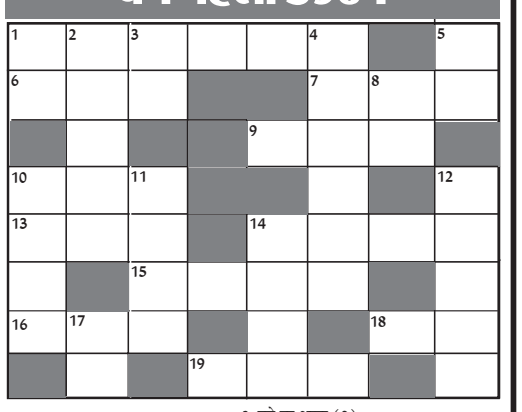

**संकेत: बाएं से दाएं**
1. 11 मई 2002 को भारत की इस प्रथम महिला पायलट का निधन हुआ था, जो भोपाल रियास की राजकुमारी थी (6)
6. दीपध्वज, अंजन, नेत्रांजन (3)
7. राजा, सम्राट, किंग, बादशाह (3)
9. आवासीय सेवक, कोई वृत्ति लेकर सेवा करने वाला (3)
10. जिसके अवयव पास-पास सट हों, अविरल (3)
13. अक्षर, वर्ण (3)
14. देवासुर-संग्राम के समय समुद्र मंथन से यह भयंकर विष निकला था (4)
15. पुराणानुसार सात लोकों में से छठे लोक का नाम कहते है वहां राक्षस राज्य करते है (4)
16. अधीनस्थ, आयोजन में (3)
18. एक दिवंगत हास्य अभिनेता (2)
19. यह फिल्म हिंदी के साथ-साथ बांग्लाभाषा में भी बनी थी नायक थे दिलीप कुमार व नायिका थी सायरा बानों (3)

**ऊपर से नीचे**
1. स्वामी, प्रभु, मालिक, अध्यक्ष (2)
2. वह स्थान जहां से आसपास के स्थानों में बिजली पहुंचाई जाती है (5)
3. दले हुए अरहर (2)
4. स्वामीनिष्ठ, प्रकाश मेहरा निर्देशित फिल्म जिसमें अमिताभ बच्चन, शशिकपूर आदि की भूमिकाएँ थी (1982)(6)
5. अपने से बड़ों के लिए एक संबोधन आदरपूर्ण तुम (2)
8. एक प्रसिद्ध पंजाबी कथा की नायिका, प्रेमकथा पर फिल्म निर्माण भी हुआ है (3)
10. जिनके मत परस्पर मिलते हों (4)
11. घृणा, घिन्न (4)
12. ख्वाहिशमंद, इच्छा रखने वाला (5)
14. बदकिस्मत, दुर्भाग्यशाली (4)
17. जबड़ा, ठुड्डी (2)

### वर्ग पहेली 5963 का हल

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| य | मु | ना | प्र | सा | द | शा | स्त्री |
| ह | म | न | शी | नी | ■ | य | ■ |
| ■ | ता | ■ | त | ■ | आ | द | मी |
| आ | ज | त | क | ■ | गा | ■ | ना |
| शा | ■ | म | ■ | म | ज | बू | र |
| पा | र | स | म | णि | ■ | झ | ■ |
| रे | स | ■ | द | ■ | म | ना | ना |
| ख | द | ब | द | ■ | स्त | ■ | ही |

## आज का राशिफल

### मेष
आज जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य प्राप्त होगा। सायंकाल के समय कोई रुका काम बनने की संभावना है। पंचम भाव दूषित होने के कारण संतान पक्ष से निराशा जनक समाचार मिल सकता है। रात्रि का समय प्रियजनों से भेंट व आमोद-प्रमोद में बीतेगा। विरोधियों का पराभव होगा। पास व दूर की यात्रा का प्रसंग प्रबल होकर स्थगित होगा।

### वृष
आज व्यग्रता के कारण किसी मूल्यवान वस्तु के खोने या चोरी होने का भय बन रहेगा। संतान की शिक्षा या किसी प्रतियोगिता में उम्मीद के मुताबिक सफलता का समाचार मिलने से मन में हर्ष होगा। सायं काल में कोई रुका कार्य पूरा होगा। रात्रि में उत्साहवर्धक मांगलिक कार्यों में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

### मिथुन
आज आमदनी के नए स्रोत बनेंगे। वाणी की सौम्यता आपको सम्मान दिलाएगी। शिक्षा, प्रतियोगिता में विशेष सफलता मिलेगा। सूर्य के कारण अधिक भागदौड़ और नेत्र विकार होने की संभावना है। शत्रु आपस में लड़कर ही नष्ट हो जाएंगे।

### कर्क
आज आपके विरोधी भी आपकी प्रशंसा करेंगे। शासन सत्ता पक्ष से निकटता व गठजोड़ का लाभ भी मिलेगा। ससुराल पक्ष से पर्याप्त मात्रा में धन हाथ लग सकता है। सायंकाल से लेकर रात तक सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर प्राप्त होंगे। सायंकाल के समय किसी झगड़े विवाद में न पड़ें।

### सिंह
आज पारिवारिक व आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगा। आजीविका के क्षेत्र में चल रहे नए प्रयास फलीभूत होंगे। अधीनस्थ कर्मचारियों का आदर व सहयोग भी पर्याप्त मिलेगा। सायंकाल के समय किसी झगड़े विवाद में न पड़ें। रात्रि में प्रिय अतिथियों के स्वागत का योग बना रहेगा। माता-पिता का विशेष ध्यान रखें।

### कन्या
आज कुछ आंतरिक विकार जैसे-वायु-मूत्र-रक्त, जड़ जमा रहे हैं। आज का दिन इस सबकी जांच कराने और किसी अच्छे डॉक्टर इस विषय में सलाह मशविरा करने में व्यतीत करें। रोग की अवस्था में भी आपका चलना फिरना काफी ज्यादा हो गया है।

### तुला
आज का दिन उत्तम संपत्ति का संकेत कर रहा है। आजीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। राज्य-मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति हो सकती है। यात्रा, देशाटन की स्थिति सुखद व लाभदायक रहेगी। सायंकाल से लेकर रात्रि तक प्रिय व्यक्तियों का दर्शन व सुसमाचार मिलेगा।

### वृश्चिक
आज का दिन पराक्रम वृद्धि कर रहा हैं रोजगार व्यापार के क्षेत्र में जारी प्रयासों में अकल्पनीय सफलता प्राप्त होगी। संतान पक्ष से भी संतोषजनक सुखद समाचार मिलेगा। दोपहर बाद किसी कानूनी विवाद या मुकदमों में जीत आपके लिए खुशी का कारण बन सकती है। शुभ खर्चा व कीर्ति की वृद्धि होगी। विरोधियों का पराभव होगा। पास व दूर की यात्रा का प्रसंग प्रबल होकर स्थगित होगा।

### मकर
आज आपके चारों ओर सुखद वातावरण रहेगा। घर परिवार के सभी सदस्यों की खुशियां बढ़ेगी। कई दिनों से चली आ रही लेन-देन की कोई बड़ी समस्या हल हो सकती है। पर्याप्त मात्रा में धन हाथ में आ जाने का सुख मिलेगा। विरोधियों का पराभव होगा। पास व दूर की यात्रा का प्रसंग प्रबल होकर स्थगित होगा। प्रणय सम्बन्ध प्रगाढ़ता की ओर बढ़ेंगे।

### कुंभ
आज आपके स्वास्थ्य सुख में व्यवधान आ सकता है। राशि का स्वामी शनि उदय चल रहा है। ऐसे में बिना कारण शत्रुता पैदा हो सकती है। अपनी बुद्धि द्वारा किए कार्यों में ही हानि से निराशा हो सकती है। कोई विपरीत समाचार सुनकर अकस्मात यात्रा पर जाना पड़ सकता है। इसलिए सावधान रहें और झगड़े या विवाद से बचें। धार्मिक क्षेत्रों की यात्रा और पुण्य कार्यों पर खर्चा हो सकता है।

### धनु
आज का दिन संतोष और शांति का है। राजनीतिक क्षेत्र में किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। शासन व सत्ता से गठजोड़ का लाभ मिल सकता है। नए अनुबंधों के द्वारा पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रात्रि में कुछ अप्रिय व्यक्तियों से मिलने से अनावश्यक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। संतान पक्ष से कुछ राहत मिलेगी।

### मीन
आज का दिन पुत्र, पुत्री की चिंता तथा उनके कामों में व्यतीत होगा। दांपत्य जीवन में कई दिन से चला आ रहा गतिरोध समाप्त हो जाएगा। बहनोई और साले से आज लेन-देन न करें सम्बन्ध खराब होने का खतरा है। धार्मिक क्षेत्रों की यात्रा और पुण्य कार्यों पर खर्चा हो सकता है। यात्रा में सावधान अवश्य रहें। बृहस्पति का त्रिकोण योग मूल्यवान वस्तुएं चोरी करा सकता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक श्रीराम अम्बष्ट द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, (डी वी कार्पो. लि.) उड़ान टोला, दानापुर कैंट, शिवाला रोड, खगौल, पटना में मुद्रित एवं सोन वर्षा वाणी कार्यालय, जय हिन्द कॉलोनी नाला पर, आरा, जिला भोजपुर (बिहार) से प्रकाशित संपादक- श्रीराम अम्बष्ट, स्थानीय संपादक- साकेत अम्बष्ट, -9934957121, 7766886433, E-mail : svvaara@gmail.com, RNI-BIHHIN/2017/72765

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com



## संक्षिप्त समाचार

### खलारी रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म 1 और 2 का नहीं होगा विकास, रेलवे ने बताई वजह

**खलारी, एजेंसी।** पूर्व मध्य रेलवे के धनबाद रेल मंडल अंतर्गत खलारी रेलवे स्टेशन में तकनीकी अड़चन का हवाला देकर प्लेटफॉर्म संख्या एक-दो के लंबाई विस्तार पर रोक लगा दी गई है, जबकि हाल के वर्षों में इसी स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या तीन-चार की लंबाई बढ़ाई जा चुकी है। इस विरोधाभासी निर्णय को लेकर यात्रियों और स्थानीय लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। खलारी रेलवे स्टेशन कोयलांचल क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण स्टेशन है। इस क्षेत्र से होने वाली कोयला ढुलाई के एवज में रेलवे को प्रतिवर्ष अरबों रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। हजारो यात्री प्रतिदिन यहां से आवागमन करते हैं। बावजूद इसके, यात्री सुविधाओं के विस्तार को लेकर खलारी स्टेशन को अपेक्षित प्राथमिकता नहीं मिल पा रही है। रेलवे रिकार्ड के अनुसार खलारी स्टेशन नान-सबअर्बन ग्रेड-5 (एनएसजी-5) श्रेणी में आता है। खलारी स्टेशन पर वर्तमान में सात एक्सप्रेस ट्रेनों का अप-डाउन में ठहराव है। इन ट्रेनों में सामान्यतः 18 से 22 कोच लगे होते हैं। प्लेटफॉर्म संख्या एक और दो की लंबाई कम होने के कारण अक्सर पांच से छह कोच प्लेटफॉर्म के बाहर रुक जाते हैं, जिससे यात्रियों को चढ़ने-उतरने में भारी परेशानी होती है। महिलाओं, बुजुर्गों और दिव्यांग यात्रियों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से जोखिमपूर्ण बन जाती है।मालूम हो कि खलारी की जनता लंबे समय से प्लेटफॉर्म संख्या एक-दो तथा तीन-चार की लंबाई बढ़ाने की मांग करती आ रही है। हाल के वर्ष में प्लेटफॉर्म संख्या तीन-चार की लंबाई तो बढ़ा दी गई, लेकिन प्लेटफॉर्म संख्या एक-दो को अब भी विस्तार से वंचित रखा गया है।वर्तमान में खलारी स्टेशन पर थर्ड रेल लाइन बिछाने का कार्य कर रही रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) द्वारा प्लेटफॉर्म संख्या एक और दो की ऊंचाई बढ़ाकर उस पर टाइल्स लगाने का काम किया जा रहा है,लेकिन रेलवे और आरवीएनएल दोनों ने स्पष्ट किया है कि प्लेटफॉर्म की लंबाई नहीं बढ़ाई जाएगी।प्लेटफॉर्म एक और दो के विस्तार को लेकर रेलवे और आरवीएनएल के अपने-अपने तर्क सामने आ रहे हैं। प्लेटफॉर्म एक-दो का सुंदरीकरण कर रही आरवीएनएल के संबंधित अधिकारी ने एसओडी (सिड्यूल आफ डायमेंशन) मानकों का हवाला देते हुए कहा कि जब तक रेलवे द्वारा फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का पुनर्निर्माण नहीं किया जाता, तब तक प्लेटफॉर्म की लंबाई बढ़ाना संभव नहीं है।वहीं, आईओडब्लू, टोरी का कहना है कि प्लेटफॉर्म एक और दो पर कार्य आरवीएनएल द्वारा किया जा रहा है, इसलिए लंबाई विस्तार की जिम्मेदारी भी उसी की बनती है। एफओबी के संबंध में उन्होंने बताया कि प्रस्ताव भेजा जा चुका है और स्वीकृति मिलने के बाद ही निर्माण संभव होगा। आईओडब्लू के अनुसार एफओबी के लिए प्लेटफॉर्म की न्यूनतम चौड़ाई 10 मीटर होनी चाहिए।स्थानीय लोगों और यात्रियों का कहना है कि जब इसी स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या तीन और चार पर तकनीकी प्रक्रिया पूरी कर विस्तार किया जा सकता है, तो समान स्टेशन परिसर में प्लेटफॉर्म एक और दो के लिए केवल चौड़ाई का हवाला देना उचित नहीं है।

### झारखंड में पेसा रूल लागू, पद खाली होने पर 1 महीने के अंदर होगा ग्रामसभा अध्यक्ष का चुनाव

**रांची, एजेंसी।** नियमावली के अनुसार ग्राम सभा सबसे सशक्त इकाई होगी। विशेष बैठक के पूर्व संबंधित ग्राम पंचायत में सार्वजनिक स्थानों पर इसकी एक प्रति को चिपकाया जायेगा और ग्राम सभा क्षेत्र में डुगडुगी या ढोल पिटवाकर घोषणा कर सूचना दी जाएगी। ग्राम सभा अध्यक्ष का पद रिक्त होने की स्थिति में एक महीने के अंदर अध्यक्ष का चुनाव कराना अनिवार्य होगा।अध्यक्ष की मृत्यु / पद त्यागने या किसी अन्य कारण से पद खाली होने पर परंपरा से प्रचलित रीति-रिवाज के अनुसार नये ग्राम सभा अध्यक्ष का चुनाव / मनोनयन पद रिक्त होने के एक महीना के अन्दर किया जायेगा।नये अध्यक्ष के चयन / मनोनयन के लिए 10 दिनों के अन्दर इसकी सूचना प्रखंड विकास पदाधिकारी-सह-सचिव पंचायत समिति / उप विकास आयुक्त-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जिला परिषद् एवं जिला दंडाधिकारी / उपायुक्त को लिखित रूप से उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा। नियमों के अनुसार ग्राम सभा अपने सदस्यों में से एक सहायक-सचिव का चुनाव कर सकेगी अथवा ग्राम सभा पूर्व में चयनित पंचायत सहायक का सहयोग सहायक सचिव के रूप में ले सकेगी।ग्राम सभा अपने आवश्यकता अनुसार सहायक सचिव के कार्यों का निर्धारण कर सकेगी। ऐसे सहायक सचिव अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे। नियमों के अनुसार ग्राम सभा के सहायक-सचिव को एक वर्ष के लिए नियुक्त किया जा सकेगा, परन्तु वह पुनः नियुक्ति के पात्र होंगे। ग्राम सभा द्वारा सहायक सचिव को चुनते समय महिलाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।नियमों के अनुसार यदि संबंधित ग्राम पंचायत का सचिव ग्राम सभा की बैठक के अध्यक्ष के आदेशों का जो झारखंड पंचायती राज अधिनियम 2001 के अधीन दायित्वों के निर्वहन या क्रियान्वयन करने के क्रम में पंचायत सचिव के कृत्यों में आते हैं, उनका पालन नहीं करता है तो अध्यक्ष संबंधित पंचायत समिति के कार्यपालक पदाधिकारी से उसपर नियंत्रण करने की अपेक्षा कर सकती है।दूसरी ओर, यदि राज्य सरकार अपने विवेक पर पंचायत के कार्यकलापों की जांच करती है, तब जांचकर्ता पदाधिकारी के समक्ष लिखित में अध्यक्ष समस्याओं का समाधान चाहने हेतु निवेदन कर सकता है और बता सकता है कि उसे अपने कर्तव्यों के पालन में अमूक बाधाएं हैं, जिनसे झारखण्ड पंचायती राज अधिनियम 2001 के उद्देश्यों के अनुकूल कार्य होने में समस्या आ रही है।

### आजसू का खाद्य मंत्री इरफान अंसारी पर गंभीर आरोप,

# राशन चोरी को बढ़ावा देने का दावा

**रांची, एजेंसी।** आजसू पार्टी ने खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री इरफान अंसारी पर राशन डीलरों को राशन चोरी के लिए प्रोत्साहित करने का आरोप लगाया है। पार्टी के केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर ने कहा कि मंत्री ने शुक्रवार को जामताड़ा नगर भवन में खाद्य आपूर्ति विभाग के 4जी इ-पास मशीन वितरण कार्यक्रम में कहा कि आम जनता को मिलने वाले अनाज में राशन डीलरों द्वारा आधा किलो की कटौती करना कोई पाप नहीं, क्योंकि उनके भी बाल-बच्चे हैं।

उनके अनुसार, एक तरफ राशन डीलरों को आठ माह से कमीशन नहीं मिल रहा है, दूसरे उन्हें राशन चोरी के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।आजसू पार्टी के खिजरी विधानसभा स्तरीय सम्मेलन 11 जनवरी को गेतलसूद डैम के पास आयोजित किया जाएगा। इसे लेकर खिजरी के पार्टी कार्यकर्ताओं ने पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो से उनके बुकरू, रांची स्थित आवास पर मुलाकात की।इस मौके पर आयोजित बैठक में पार्टी के सांगठनिक विस्तार, रणनीति एवं भावी कार्यक्रमों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।

युवा आजसू की दस्तक - हर घर तक : सदस्यता अभियान का शुभारंभ कार्यक्रम 5 जनवरी को रांची के कचहरी रोड स्थित रांची यूनिवर्सिटी गेट के समीप से किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आजसू के मुख्य प्रवक्ता डॉ. देवशरण भगत, केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर एवं केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता संजय मेहता होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा आजसू रांची महानगर अध्यक्ष अमित यादव करेंगे। युवा आजसू के नेता चेतन प्रकाश, अमित यादव, अमित साहू ने पार्टी कार्यालय में प्रेसवार्ता कर बताया कि रांची महानगर में एक महत्वाकांक्षी सदस्यता अभियान की शुरुआत कर रही है। इस अभियान का उद्देश्य पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाना और संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना है। अभियान का शीर्षक आजसू की दस्तक - हर घर तक : सदस्यता अभियान रखा गया है।युवा आजसू रांची महानगर के अध्यक्ष अमित यादव के नेतृत्व में यह अभियान 90 दिनों की अवधि में आयोजित किया जाएगा। अभियान के तहत रांची महानगर के सभी 53 वार्डों को कवर किया जाएगा, जिसमें 1,00,000 नए सदस्यों को पार्टी से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। अभियान की घोषणा करते अमित यादव ने कहा आजसू पार्टी हमेशा से सामाजिक न्याय और विकास के लिए प्रतिबद्ध रही है।यह सदस्यता अभियान न केवल संगठन को मजबूत करेगा बल्कि रांची की जनता की समस्याओं को सीधे पार्टी नेतृत्व तक पहुंचाने का माध्यम बनेगा। हम हर वार्ड में जाकर लोगों से संवाद करेंगे और उन्हें आजसू की नीतियों से जोड़ेंगे। युवा शक्ति के साथ मिलकर हम रांची को नई दिशा देंगे।

आजसू पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे इस अभियान में पार्टी के वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता और युवा विंग सक्रिय रूप से भाग लेंगे। अभियान के दौरान वार्ड स्तर पर मिलन समारोह, जनसंपर्क और सदस्यता शिविर आयोजित किए जाएंगे। अमित यादव ने अभियान को पार्टी की झारखंड के विकास और सामाजिक न्याय की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

उन्होंने कहा यह अभियान नगर निकाय चुनावों की तैयारियों को भी गति प्रदान करेगा। युवा आजसू के प्रदेश संयोजक चेतन प्रकाश ने कहा यह अभियान केवल सदस्य बनाने का नहीं बल्कि झारखंड के युवाओं को एक नई दिशा देने का संकल्प है।आजसू पार्टी मानती है कि जब तक युवा मजबूत नहीं होगा, तब तक झारखंड मजबूत नहीं होगा। उन्होंने नागरिकों से अपील की है कि वे इस अभियान में शामिल होकर आजसू पार्टी का हिस्सा बनें और झारखंड के नवनिर्माण में योगदान दें। प्रेसवार्ता में अमित साहू, किशोर मंडल, सनी चंद्रवंशी, मोहित ठाकुर व अन्य लोग उपस्थित रहे।

### हेमंत सरकार के खिलाफ भाजपा करेगी नगर परिषद का घेराव

**बोकारो, एजेंसी।** भाजपा नेता अमर कुमार बाउरी एक दिवसीय दौरे पर बोकारो पहुंचे. इस दौरान उन्होंने हेमंत सोरेन की सरकार पर हमला बोलते हुए कई आरोप लगाए. उन्होंने 7 जनवरी को नगर निकाय चुनाव जल्द कराने को लेकर नगर परिषद का घेराव करने की बात कही है. इसको लेकर चास के मगध बैंकट हॉल में बोकारो भाजपा की बैठक पूर्व विधायक अमर कुमार बाउरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

बोकारो में पूर्व विधायक अमर कुमार बाउरी की अध्यक्षता में हुई बैठक में नगर परिषद का घेराव को लेकर रणनीति बनाई गई. बैठक में सभी नेताओं को अधिक से अधिक लोगों के साथ घेराव में मौजूद रहने का निर्देश दिया गया. पूर्व विधायक अमर बाउरी ने भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि, 'हम लोगों को सरकार पर दवा बनाना है.' उन्होंने कहा कि नगर निकाय और नगर पंचायत का चुनाव दलीय आधार पर होना चाहिए. अमर बाउरी ने कहा कि मौजूदा सरकार दलीय आधार पर नगर निकाय चुनाव नहीं कराना चाहती है.

बीजेपी नेता अमर कुमार बाउरी ने कहा कि वर्तमान सरकार नगर निकाय चुनाव को टालना चाहती है. जिस कारण वह टालमटोल कर रही है. उन्होंने कहा कि हमारी मांग है कि जल्द चुनाव हो और दलीय आधार पर हों, जिससे की जीतने वाले मेयर और परिषद पर जवाबदेही और विश्वसनीयता पार्टी के प्रति बनी रहे. अमर बाउरी ने कहा कि कई बार यह देखा जाता है कि मेयर और पार्षद किसी दल से नहीं होने से वह मनमानी करते हैं और कार्यकाल के दौरान सरकारी खजाने का गलत इस्तेमाल कर चले जाते हैं.

## स्टेट बैंक सेवा केंद्र में ग्राहक से लूट, नकाबपोश लुटेरों ने दो राउंड गोलियां भी चलाई

**रांची, एजेंसी।** जिला में रांची-टाटा रोड किनारे शास्त्री चौक के निकट स्थित स्टेट बैंक सेवा केन्द्र में ग्राहक विश्वदेव मुंडा से नकाबपोश लुटेरों ने कुल 19 हजार रुपये लूट कर फरार हो गए. भागने के क्रम में लुटेरों ने दो राउंड गोलियां भी चलाईं. बुंडू पुलिस ने घटनास्थल से दो खोखे भी बरामद किए हैं. ये घटना शनिवार शाम लगभग 5.30 बजे की बताई जाती है.

इस संबंध में भुक्तभोगी ग्राहक विश्वदेव मुंडा ने बताया कि वे बुंडू के बारेडीह गांव के निवासी हैं, पेशे से वे कृषक हैं. गत 27 दिसंबर को इनकी माता का निधन हो गया था. श्राद्ध कार्य के लिए उनके द्वारा बड़ी मुश्किल से जमा किए गए 20 हजार रुपये बैंक से निकासी के लिए वे बुंडू शास्त्री चौक स्थित स्टेट बैंक सेवा केन्द्र आए थे. पैसों की निकासी करने के बाद वे 19 हजार रुपये (एक हजार रुपये सेवा केन्द्र के उप संचालक के ही पास था) की गिनती कर ही रहे थे. इसी बीच अचानक पहुंचे तीन नकाबपोशों में से एक ने उनका रुपया छीन लिया. विश्वदेव मुंडा द्वारा विरोध करने पर एक नकाबपोश ने पिस्तौल का भय भी दिखाया.

सेवा केन्द्र के उपसंचालक ऋतिक कुमार गुप्ता ने बताया कि उन सबों द्वारा विरोध करने पर तीनों नकाबपोश लुटेरे बाहर की ओर भागे. बाहर भी संभवतः उनके तीन साथी इंतजार कर रहे थे. भागने के क्रम में लोगों को डराने करने के उद्देश्य से उन्होंने दो राउंड गोलियां भी चलाईं.

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सभी लुटेरे दो बाइक पर तमाड़ की ओर फरार हो गए. सेवा केन्द्र के संचालक सुमीत जायसवाल ने बताया कि घटना की सूचना तुरंत बुंडू थाना को दी गई. सूचना पाकर बुंडू डीएसपी ओमप्रकाश, बुंडू थाना प्रभारी राम कुमार वर्मा सदल बल घटनास्थल पहुंचे. घटनास्थल से पुलिस ने अपराधियों द्वारा चलाये गए दो गोलियों के खोखे भी बरामद किए हैं.

## मकर संक्रांति से पहले रांची का तिलकुट बाजार गुलजार, शुद्धता और वैरायटी में गया को दे रहा कड़ी टक्कर

**रांची, एजेंसी।** मकर संक्रांति के पावन पर्व को लेकर राजधानी रांची का तिलकुट बाजार पूरी तरह सज संवर कर तैयार हो चुका है. हर साल की तरह इस बार भी तिलकुट की मांग चरम पर है, लेकिन इस बार बाजार की सबसे बड़ी खासियत यह है कि रांची के स्थानीय कारीगर ही शुद्ध और उच्च गुणवत्ता का तिलकुट तैयार कर ग्राहकों को उपलब्ध करा रहे हैं. इससे न केवल स्थानीय कारीगरों को बढ़ावा मिला है, बल्कि ग्राहकों का भरोसा भी मजबूत हुआ है. रांची का अपर बाजार इन दिनों तिलकुट के लिए खास पहचान बना रहा है. पहले जहां लोग गया के तिलकुट को प्राथमिकता देते थे, वहीं अब रांची का तिलकुट भी स्वाद, शुद्धता और वैरायटी के मामले में गया से कम नहीं माना जा रहा है. व्यापारियों का कहना है कि अब गया की खुशबू रांची के बाजारों में भी साफ महसूस की जा रही है. कई ग्राहकों का मानना है कि गया में अब मिलावट की शिकायतें बढ़ गई हैं, जबकि रांची के अपर बाजार में शुद्ध तिलकुट आसानी से उपलब्ध है.

तिलकुट बाजार का दायरा भी अब पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गया है. जो बाजार पहले छोटी-छोटी गलियों तक सीमित था, वह अब मुख्य सड़कों तक फैल चुका है. इससे ग्राहकों को खरीदारी में सुविधा हो रही है और बाजार में रौनक भी बढ़ी है. सुबह से देर रात तक तिलकुट की दुकानों पर ग्राहकों की आवाजाही बनी हुई है.

इस बार बाजार में तिलकुट की कई आकर्षक वैरायटी देखने को मिल रही हैं. सादा तिलकुट के अलावा गुड़ तिलकुट, चीनी तिलकुट, ड्राई फ्रूट तिलकुट और खास तौर पर युवाओं को लुभाने वाला चॉकलेट तिलकुट भी उपलब्ध है. कारीगरों ने स्वाद के साथ-साथ पैकेजिंग पर भी खास ध्यान दिया है, जिससे तिलकुट उपहार के रूप में भी खरीदा जा रहा है.

कीमतों की बात करें तो रांची के तिलकुट बाजार में क्वालिटी और वैरायटी के अनुसार दाम तय किए गए हैं. बाजार में तिलकुट 400 रुपये से लेकर 800 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है. सादा और गुड़ तिलकुट अपेक्षाकृत सस्ते हैं, जबकि ड्राई फ्रूट और चॉकलेट तिलकुट की कीमत थोड़ी ज्यादा है. बावजूद इसके, शुद्धता और स्वाद के कारण ग्राहक कीमतों को उचित मान रहे हैं.

व्यापारियों का कहना है कि मकर संक्रांति नजदीक आते ही बिक्री में और तेजी आने की उम्मीद है. स्थानीय कारीगरों के लिए यह सीजन रोजगार और आमदनी का बड़ा जरिया बनता है. इस बार रांची का तिलकुट बाजार न सिर्फ परंपरा और स्वाद को संजोए हुए है, बल्कि स्थानीय हुनर और शुद्धता की मिसाल भी पेश कर रहा है.

## हजारीबाग महिला थाना में खुदकुशी की कोशिश, मेडिकल स्टूडेंट्स पर यौन शोषण का आरोप

**हजारीबाग, एजेंसी।** हजारीबाग के महिला थाना परिसर में उस वक्त अफरा-तफरी मच गई, जब न्याय की आस टूटने पर एक नर्स ने जहर खाकर आत्महत्या करने का प्रयास कर लिया। घटना के बाद थाना परिसर में मौजूद पुलिसकर्मियों और फरियादियों में हड़कंप मच गया। गंभीर हालत में युवती को तुरंत शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल, हजारीबाग लाया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। चिकित्सकों के अनुसार फिलहाल उसकी स्थिति स्थिर है। वह खतरे से बाहर बताई जा रही है। युवती बड़कागांव थाना क्षेत्र की रहने वाली है। वह पेशे से नर्स है। पीड़िता का आरोप है कि बड़कागांव थाना क्षेत्र के हरली गांव निवासी विकास कुमार मेहता ने उसके साथ शारीरिक शोषण किया। आरोपी शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एमबीबीएस फोर्थ ईयर का छात्र है। युवती का कहना है कि आरोपी ने शादी का झांसा देकर उसके साथ संबंध बनाए।

यौन शोषण की पहली घटना हजारीबाग के स्वर्ण जयंती पार्क में हुई। आरोपी ने दूसरी घटना गांव में हुई। जब उसने शादी की बात कही तो आरोपी टालमटोल करने लगा। इसके बाद उसने महिला थाना में शिकायत दर्ज कराई, लेकिन लंबे समय तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई।

पीड़िता ने महिला थाना प्रभारी पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं। युवती का कहना है कि 8 जुलाई को जब वह शिकायत लेकर महिला थाना पहुंची तो उसे यह कहकर लौटा दिया गया कि पार्क में इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं। न्याय न मिलने और कथित असंवेदनशील रवैये से वह अंदर से टूट गई। परिजनों का भी आरोप है कि आरोपी की मां पहले शादी का रिश्ता लेकर युवती के घर आई थी, लेकिन बाद में भारी दहेज की मांग शुरू कर दी गई। जिससे युवती की मानसिक स्थिति और बिगड़ती चली गई।

घटना की सूचना मिलते ही सीसीआर डीएसपी मनोज कुमार सिंह, महिला थाना प्रभारी विंध्यवासिनी सिन्हा, सदर थाना प्रभारी सुभाष सिंह सहित कई पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। डीएसपी मनोज कुमार सिंह ने बताया कि पूरे मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। पीड़िता के बयान के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल युवती का इलाज चल रहा है और पुलिस सभी पहलुओं की जांच में जुटी हुई है।

## जमशेदपुर में सड़क हादसा : डंपर की टक्कर से अनियंत्रित बस ने कार को मारी ठोकर, खाई में गिरा पूरा परिवार

**जमशेदपुर, एजेंसी।** हाता-पोटका मुख्य मार्ग पर रायपुर गांव के पास एक अनियंत्रित डंपर ने कांस्टेबल ट्रेनिंग सेंटर (सीटीसी) की बस में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस अनियंत्रित होकर अपने आगे खड़ी कार से जा भिड़ी, जिससे कार सीधे खाई में जा गिरी। इस हादसे में कार सवार ब्रज सुंदर त्रिपाठी समेत एक ही परिवार के पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

रफ्तार के कहर ने एक बार फिर हंसते-खेलते परिवार को मुसीबत में डाल दिया। घटना उस वक्त हुई जब ब्रज सुंदर त्रिपाठी अपने परिवार के साथ कार में सवार होकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में रायपुर गांव के पास उन्होंने अपनी कार रोकी थी। उसी दौरान उनकी कार के ठीक पीछे सीटीसी जवानों को ले जा रही एक बस भी आ रही थी।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सब कुछ पलक झपकते ही हो गया। पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे एक डंपर ने सीटीसी बस को जोरदार ठोकर मारी। डंपर के धक्के से बस संभल नहीं पाई और उसने अपने आगे खड़ी कार को रौंद दिया। बस की टक्कर लगते ही कार सड़क किनारे बनी गहरी खाई में जा गिरी।

कार में ब्रज सुंदर त्रिपाठी के अलावा दो बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य सवार थे। खाई में गिरते ही कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार सभी पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से घायलों को किसी तरह बाहर निकाला गया।

## जंगली हाथियों का आतंक, तीन की मौत दो घायल, ग्रामीणों में दहशत

**रांची, एजेंसी।** झारखंड में जंगली हाथियों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। राज्य के कई जिलों में हाथियों के उत्पात से जहां आम जनजीवन दहशत में है, वहीं खेती-बाड़ी को भी भारी नुकसान हो रहा है। ताजा मामला पश्चिमी सिंहभूम जिले के चाईबासा से सामने आया है, जहां जंगली हाथी के हमले में तीन लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। ये घटनाएं जिले के टोंटो और सदर प्रखंड क्षेत्रों में हुई हैं।

प्रभारी वनपाल मनीष सोय ने बताया कि एक नर जंगली हाथी अपने झुंड से बिछड़ गया है और मस्त अवस्था में रिहायशी इलाकों में भटक रहा है। आशंका जताई जा रही है कि अपने झुंड की तलाश में भटकते हुए हाथी ने आक्रामक रूप अपना लिया, जिसके चलते यह हादसे हुए। वन विभाग के अनुसार, झुंड से अलग हुए हाथी अक्सर हिंसक हो जाते हैं और मानव बस्तियों की ओर आ जाते हैं। टोंटो प्रखंड के बांडीझारी गांव में 35 वर्षीय मंगल सिंह हेंब्रम की जंगली हाथी द्वारा कुचल दिए जाने से मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद बिरसिंहहातु गांव में 55 वर्षीय उर्दूप बहंदा और सदर प्रखंड के रोरो गांव में 57 वर्षीय विष्णु सुंडी की भी हाथी के हमले में जान चली गई। वहीं, बिरसिंहहातु गांव की दो महिलाएं मानी कुंटिया और सुखमति बहंदा गंभीर रूप से घायल हो गईं। दोनों को इलाज के लिए सदर अस्पताल चाईबासा में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है।

घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और हाथी को जंगल की ओर खदेड़ने का प्रयास शुरू कर दिया गया है। साथ ही ग्रामीणों से सतर्क रहने और सावधानी बरतने की अपील की जा रही है। हालांकि हाथी के दोबारा गांव की ओर लौट आने की आशंका से पूरे इलाके में भय का माहौल बना हुआ है।ग्रामीणों ने प्रशासन से सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने, हाथी प्रभावित क्षेत्रों में नियमित गश्त बढ़ाने और मृतकों के परिजनों को उचित मुआवजा देने की मांग की है। लगातार हो रही ऐसी घटनाओं ने एक बार फिर मानव-वन्यजीव संघर्ष को गंभीर मुद्दा बना दिया है।

## स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 की तैयारी तेज, अवैध बैनर-पोस्टर पर भी निगम बरत रही सख्ती

**रांची, एजेंसी।** साल 2026 की शुरुआत के साथ ही रांची नगर निगम ने शहर को गार्बेज फ्री सिटी बनाने और आगामी स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लक्ष्य को लेकर तैयारियां तेज कर दी हैं. इसी क्रम में शुक्रवार को अपर प्रशासक संजय कुमार की अध्यक्षता में निगम के पदाधिकारियों एवं कर्मियों की एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई. जिसमें स्वच्छ सर्वेक्षण से जुड़े सभी बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई.

इस बैठक में स्वच्छता कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए डिटेल्ड एक्शन प्लान तैयार करने पर जोर दिया गया. निर्णय लिया गया कि शहर के सभी 53 वार्डों में माइक्रो-लेवल पर कार्य सुनिश्चित करने के लिए कुल 10 विशेष टीमों का गठन किया जाएगा. प्रत्येक वार्ड में 4 से 5 आवासीय, व्यावसायिक एवं पर्यटन स्थलों (पॉकेट्स) का चयन कर वहां केंद्रित और त्वरित कार्रवाई की जाएगी.

अपर प्रशासक ने निर्देश दिया कि चयनित क्षेत्रों में नियमित सफाई, नागरिक सहभागिता, कचरा पृथक्करण तथा कचरा उठाव वाहनों की निर्बाध पहुंच सुनिश्चित की जाए. व्यावसायिक क्षेत्रों में दिन में दो बार कचरा उठाव के लिए अलग बीट प्लान लागू किया जाएगा. वहीं, जीवीपी मुक्त शहर के लक्ष्य को लेकर मार्केट यूनियनों के साथ समन्वय स्थापित कर चिन्हित स्थलों का सौंदर्यीकरण करते हुए उन्हें स्थायी रूप से समाप्त किया जाएगा.

बैठक में सिंगल यूज प्लास्टिक के विरुद्ध सख्त कार्रवाई, विद्यालयों में स्वच्छता जागरूकता अभियान, सभी सार्वजनिक शौचालयों की नियमित एवं विशेष सफाई तथा दृश्यष्ट (सूचना, शिक्षा एवं संचार) गतिविधियों को मजबूत करने पर भी विशेष बल दिया गया. नागरिकों को कचरा पृथक्करण, कचरा उठाव के समय, शिकायत एवं सुझाव के लिए क्यूआर कोड, टोल फ्री नंबर 1800-579-1225, स्मार्ट रांची ऐप और चैटबॉट नंबर 34-123-1235 की जानकारी उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया. अपर प्रशासक ने शहरवासियों से स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में रांची को शीर्ष स्थान दिलाने के लिए सक्रिय सहभागिता की अपील की. इसी दौरान नगर निगम ने शहर को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए अवैध बैनर, पोस्टर और फ्लैक्स के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई की. कचहरी रोड क्षेत्र में बिना अनुमति लगाए गए प्रचार सामग्री को जब्त किया गया और संबंधित व्यक्तियों को कड़ी चेतावनी दी गई.

उल्लेखनीय है कि पूर्व में इन पर 25,000 रुपए का जुर्माना भी लगाया जा चुका है. वहीं, कोकर चौक पर एक एजेंसी द्वारा बिना अनुमति लगाए जा रहे विज्ञापन स्ट्रक्चर को तत्काल रोकते हुए 24 घंटे के भीतर हटाने का निर्देश दिया गया है. नगर निगम ने स्पष्ट किया है कि भविष्य में भी इस तरह की अवैध गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी.

## हनुमान के सीक्वल को लेकर अफवाहों पर तेजा सज्जा ने लगाया विराम

साउथ के एक्टर तेजा सज्जा फिल्म हनुमान के सीक्वल को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में, ऐसी खबरें चल रही थीं कि एक्टर तेजा सज्जा ने 2024 की हिट फिल्म हनुमान के सीक्वल से किनारा कर लिया है। जय हनुमान के बारे में कोई अपडेट न होने के कारण कई लोगों ने इसे सच मान लिया। हालांकि, तेजा सज्जा ने इस बात से इनकार किया है कि उन्होंने इस प्रोजेक्ट से किनारा किया है।

सोशल मीडिया पर इस बात की चर्चा थी कि तेजा सज्जा हनुमान के सीक्वल का हिस्सा नहीं होंगे। खबरें यह भी थीं कि उन्होंने इस फिल्म से किनारा कर लिया। दावा किया गया कि लिमिटेड स्क्रीन टाइम और क्रिएटिव मतभेदों का हवाला देते हुए, उन्होंने खुद को प्रशांत वर्मा सिनेमैटिक यूनिवर्स से अलग किया। हालांकि तेजा सज्जा ने इस तरह की खबरों को सिरे से खारिज किया है। तेजा सज्जा ने बताया ये गलत खबरें हैं कि मैं जय हनुमान का हिस्सा नहीं हूं। उन्होंने बताया है कि वह अपने आप को इस प्रोजेक्ट से अलग नहीं कर रहे हैं। अप्रैल 2024 में तेजा सज्जा ने बताया था कि यह फिल्म भगवान हनुमान पर आधारित होगी।

उन्होंने जय हनुमान में अपने किरदार के बारे में बताते हुए कहा था मैं भी जय हनुमान का हिस्सा बनूंगा। फिल्म भगवान हनुमान पर आधारित होगी। उन्होंने दिसंबर 2024 में बताया था मैं सेट पर जाने का इंतजार कर रहा हूं। मैं इसके लिए उत्साहित हूं।

# खुद से छोटे एक्टर राजीव सिद्धार्थ को डेट कर रहीं हैं

नए साल का स्वागत हर कोई अपने-अपने तरीके से कर रहा है। अभिनेत्री कीर्ति कुल्हारी ने अपने नए साल का स्वागत बड़े ही खास अंदाज में किया है। एक्ट्रेस ने नए साल के मौके पर अपने रिलेशनशिप को रिवील किया है। उन्होंने अपने रिश्ते को आधिकारिक करते हुए अपने पार्टनर के साथ तस्वीरें भी साझा की हैं।

### अभिनेता राजीव सिद्धार्थ के साथ रिश्ते में हैं कीर्ति

नए साल के मौके पर 1 जनवरी की देर रात कीर्ति कुल्हारी ने अपने फैंस को नए साल की शुभकामनाएं देते हुए अपने रिलेशनशिप को ओपेन किया है। एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक रील शेयर की है, जिसमें कई अलग-अलग फोटोज हैं। इन फोटोज में कीर्ति कुल्हारी अभिनेता राजीव सिद्धार्थ के साथ नजर आ रही हैं। इस रील में राजीव और कीर्ति की कई रोमांटिक तस्वीरें भी हैं। इस रील के साथ ही कीर्ति ने राजीव सिद्धार्थ के साथ अपने रिश्ते को आधिकारिक कर दिया है। कीर्ति ने अपनी पोस्ट के कैप्शन में लिखा, 'एक तस्वीर हजार शब्दों के बराबर होती है। सभी को 2026 मुबारक हो।'

### राजीव से 11 महीने बड़ी हैं कीर्ति

आजकल किसी भी रिलेशनशिप के सामने आते ही पार्टनर्स के बीच उम्र का फासला जानने के लिए भी फैंस उत्साहित रहते हैं। इसी तरह राजीव सिद्धार्थ और कीर्ति कुल्हारी के बीच के उम्र के फासले को लेकर भी फैंस उत्साहित हैं। साल 1985 को जन्मीं कीर्ति कुल्हारी 40 साल की हैं। जबकि राजीव सिद्धार्थ कीर्ति से सिर्फ 11 महीने ही छोटे हैं। अप्रैल 1986 में जन्मे राजीव सिद्धार्थ अभी 39 साल के हैं। ऐसे में कीर्ति और राजीव के बीच उम्र का अधिक फासला नहीं है।

### 2016 में कीर्ति ने की थी साहिल सहगल से शादी

कीर्ति कुल्हारी ने इससे पहले अभिनेता साहिल सहगल से शादी की थी। दोनों ने साल 2016 में शादी की थी। लेकिन पांच साल तक शादी चलने के बाद साल 2021 में दोनों अलग हो गए थे।

### फोर मोर शॉट्स प्लीज में नजर आई थीं कीर्ति

वर्कफ्रंट की बात करें तो कीर्ति कुल्हारी आखिरी बार अपनी लोकप्रिय सीरीज 'फोर मोर शॉट्स प्लीज' के चौथे सीजन में नजर आई हैं। यह शो 19 दिसंबर को प्राइम वीडियो पर रिलीज स्ट्रीम हुआ था।

# गौरव खन्ना ने ट्रोलर्स को दिया करारा जवाब

बिग बॉस 19 के फिनाले के बाद जहां एक तरफ गौरव खन्ना के फैंस उनकी जीत का जश्न मना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया पर इसे लेकर बहस भी तेज हो गई। कुछ यूजर्स ने दावा किया कि टीवी इंडस्ट्री में पहले से पहचान और एक बड़े चैनल से जुड़ाव ने उन्हें ट्रॉफी तक पहुंचाया। लेकिन इन तमाम अटकलों पर अब खुद गौरव खन्ना ने खुलकर अपनी बात रखी है।

### गौरव खन्ना ने ट्रोलिंग पर की बात

पिछले कुछ दिनों से बिग बॉस की जीत को लेकर गौरव खन्ना को कुछ यूजर्स की ओर से ट्रोल किया जा रहा है। ऐसा कहा जा रहा है कि वो अपनी फेम की वजह से शो की ट्रॉफी अपने नाम कर पाए। इसे लेकर एक इंटरव्यू में गौरव खन्ना ने साफ शब्दों में कहा कि उनकी जीत किसी चैनल फेस या फेम का नतीजा नहीं, बल्कि दो दशक की लगातार मेहनत और अनुभव का परिणाम है। उनका कहना है कि लोग अक्सर सफलता के पीछे शॉर्टकट ढूंढते हैं, जबकि असलियत में कोई भी उपलब्धि वर्षों की तपस्या के बिना नहीं मिलती। उन्होंने याद दिलाया कि वह पिछले 15 वर्षों से किसी खास चैनल से जुड़े नहीं हैं और उनका करियर सिर्फ एक शो या पहचान तक सीमित नहीं रहा।

### गौरव ने अपनी जर्नी पर भी की बात

टीवी की दुनिया में लंबा वक्त बिताने के बाद बिग बॉस जैसे रियलिटी शो में उतरना गौरव के लिए आसान फैसला नहीं था। उन्होंने पहले दिन से यह तय कर लिया था कि वह इस शो को किसी से मुकाबला करने की जगह आत्ममंथन और खुद को बेहतर इंसान बनाने का जरिया बनाएंगे। गौरव के मुताबिक, बिग बॉस का घर सिर्फ कैमरों और कंट्रोवर्सी का खेल नहीं है, बल्कि यह मानसिक मजबूती और समझदारी की असली परीक्षा भी लेता है।

# अपनी आगामी फिल्म 'महाकाली' की तैयारियों में लगे हैं अक्षय खन्ना

अभिनेता अक्षय खन्ना इन दिनों लगातार चर्चाओं में बने हुए हैं। एक ओर जहां 'धुरंधर' में उनके अभिनय की जमकर तारीफ हो रही है और उनका डांस स्टेप वायरल है। वहीं दूसरी ओर 'दृश्यम 3' से बाहर होने के बाद मेकर्स ने उन पर गैर पेशेवर रवैये के आरोप लगाए हैं और उन्हें कानूनी नोटिस भेजा है। इसको लेकर एक्टर पर कुछ और लोगों ने भी अब आरोप लगाए हैं। हालांकि, अक्षय की तरफ से इन पर कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। इस बीच अब अक्षय अपनी आगामी फिल्म 'महाकाली' की तैयारियों में लगे हैं। अब फिल्म की शूटिंग की बीटीएस तस्वीरें भी सामने आई हैं। निर्देशक पूजा कोल्लुरु ने साल 2025 का शुक्रिया जताते हुए कुछ तस्वीरें साझा की हैं। इनमें हैदराबाद स्थित 'महाकाली' के सेट से भी कुछ तस्वीरें हैं। इनमें अक्षय खन्ना भी नजर आ रहे हैं। पूजा कोल्लुरु ने जो तस्वीरें साझा की हैं, उनमें 'महाकाली' के सेट से अक्षय खन्ना के साथ एक सेल्फी भी शामिल है। 'महाकाली' से अक्षय खन्ना तेलुगु सिनेमा में अपना डेब्यू कर रहे हैं। 'महाकाली' प्रशांत वर्मा सिनेमाटिक यूनिवर्स की अगली कड़ी है। फिल्म में अक्षय खन्ना गुरु शुक्राचार्य की भूमिका में नजर आएंगे।

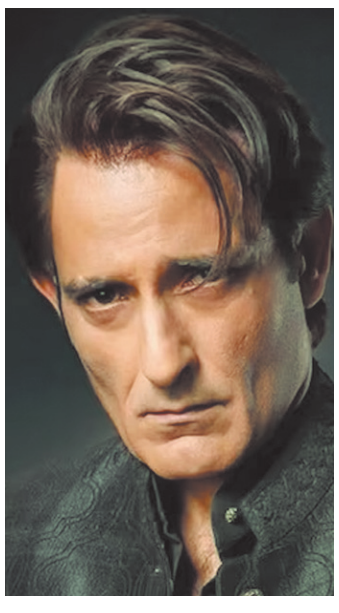

# पहली बार अक्षय के साथ स्क्रीन साझा करेंगी रानी मुखर्जी

बॉलीवुड की चर्चित फ्रेंचाइजी 'ओह माई गॉड' एक बार फिर बड़े स्तर पर वापसी करने की तैयारी में है। फ्रेंचाइजी की नई फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच पहले से ही उत्सुकता बनी हुई थी और अब इस प्रोजेक्ट से जुड़ी एक बड़ी जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस बार अक्षय कुमार के साथ रानी मुखर्जी मुख्य भूमिका में नजर आ सकती हैं। अगर यह खबर पुख्ता होती है, तो यह दोनों कलाकारों की पहली ऑन-स्क्रीन जोड़ी होगी, जिसे लेकर फिल्म इंडस्ट्री में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

### इसी साल शुरू होगी शूटिंग

पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक बताया जा रहा है कि ओह माई गॉड इस समय प्री-प्रोडक्शन स्टेज में है और फिल्म की शूटिंग 2026 के मई से शुरू होने की योजना है। पहले और दूसरे भाग की तरह इस बार भी निर्देशन की कमान अमित राय संभाल रहे हैं, जिन्होंने पिछली फिल्म में सामाजिक मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से पेश कर दर्शकों और समीक्षकों की सराहना बटोरी थी।

# कृति सेनन ने 'कॉकटेल 2' को लेकर कही बात

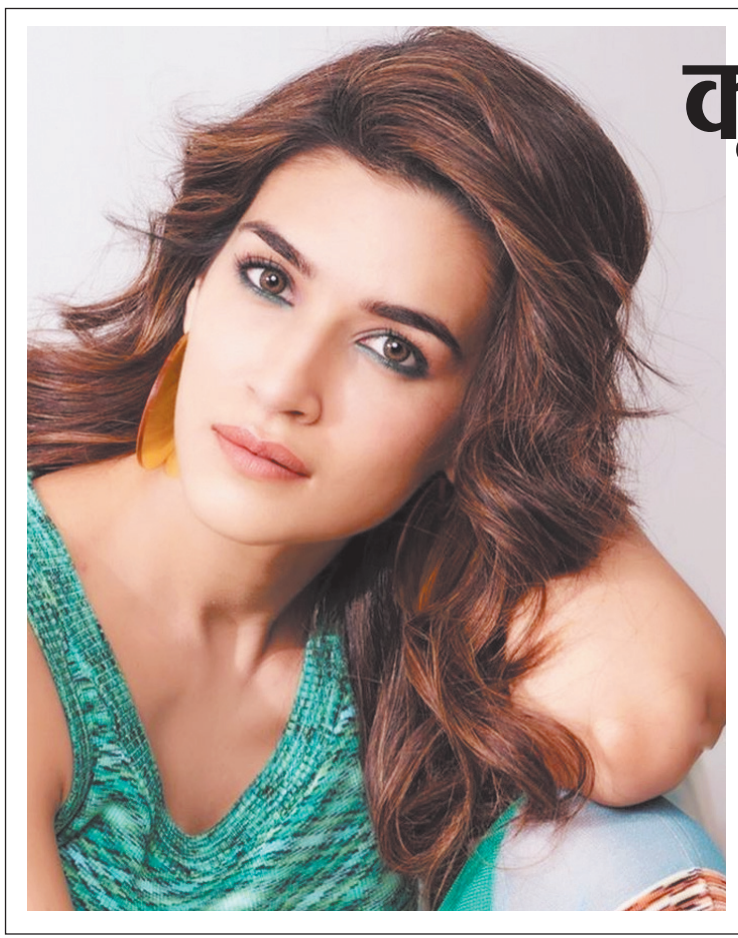

कृति सेनन बॉलीवुड में अपने करियर के 11 साल पूरे कर चुकी हैं। इन 11 साल में कृति कई बड़ी फिल्मों का हिस्सा रही हैं। साथ ही उन्होंने कई हिट फिल्में भी दी हैं। उनकी आखिरी रिलीज फिल्म 'तेरे इश्क में' भी बॉक्स ऑफिस पर सफल रही थी। वहीं फिल्म में उनके अभिनय की भी काफी तारीफ हुई। अब कृति नए साल में अपनी आगामी फिल्म 'कॉकटेल 2' के साथ प्रवेश कर रही हैं। यह उनकी 20वीं फिल्म भी है। इस मौके पर कृति ने 'कॉकटेल 2' को लेकर बात की और साथ ही बताया कि क्या फिल्मों की सफलता उनके ऊपर दबाव डालती है या नहीं।

### मैं किसी भी तरह का दबाव नहीं लेती

बातचीत के दौरान कृति ने बॉक्स ऑफिस नंबर के प्रेशर के बारे में बात की। एक फिल्म की सफलता क्या दूसरी फिल्म के बॉक्स ऑफिस नंबर के आंकड़ो को लेकर दबाव बनाती है? अभिनेत्री ने कहा कि वो अपने ऊपर किसी भी तरह का दबाव नहीं लेती है। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा दबाव नहीं लेती। हर फिल्म अलग होती है, आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हर फिल्म एक ही तरह के दर्शकों को आकर्षित करेगी। आगे 'कॉकटेल 2' को लेकर एक्ट्रेस ने कहा कि 'कॉकटेल 2' के दर्शक 'तेरे इश्क में' से बिल्कुल अलग हैं। आप बस कड़ी मेहनत और पूरी ईमानदारी से काम कर सकते हैं। आपको हर फिल्म में अपना सर्वश्रेष्ठ देना होता है। इसके अलावा बाकी सब हमारे हाथ में नहीं है, क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की सफलता को प्रभावित करने वाले कई और कारण भी होते हैं। इसलिए मैं वह दबाव नहीं लेना चाहती। मैं अपने फिल्म निर्माताओं पर भी वह दबाव नहीं डालती। बल्कि मैं बस इस प्रक्रिया का आनंद लेती हूं। मैं उत्साहित हूं।

इससे पहले एक इंटरव्यू में बात करते हुए कृति ने 'कॉकटेल 2' के बारे में बताया था कि 'कॉकटेल 2' बिल्कुल सही समय पर बनी। मुझे इसकी बहुत चाह थी। मैं एक रोमांटिक कॉमेडी की उस युवा, शहरी और मजेदार दुनिया में कदम रखना चाहती थी। बेशक यह एक सीक्वल है, लेकिन मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक अलग माहौल का सीक्वल है। कहानी पूरी तरह से अलग है, किरदार पूरी तरह से अलग हैं और उनकी पृष्ठभूमि भी पूरी तरह से अलग है।

कृति आखिरी बार आनंद एल राय द्वारा निर्देशित 'तेरे इश्क में' में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ धनुष प्रमुख भूमिका में नजर आए हैं। यह एक पैशनेट लव स्टोरी है, जिसमें कृति ने मुक्ति नाम का किरदार निभाया है। फिल्म में कृति के अभिनय की काफी तारीफ भी हुई थी और फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छा कारोबार किया है।

### शाहिद और रश्मिका के साथ नजर आएंगी कृति

होमी अदजानिया द्वारा निर्देशित 'कॉकटेल 2' में कृति सेनन के साथ शाहिद कपूर और रश्मिका मंदाना प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। यह 2012 में आई 'कॉकटेल' की सीक्वल है। इसमें सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डायना पेंटी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आई थीं। इस फिल्म को पसंद किया गया था।

## संक्षिप्त समाचार

### तमिलनाडु में सरकारी कर्मचारियों को मिलेगी पुरानी पेंशनः सीएम स्टालिन

**चेन्नई, एजेंसी।** सरकारी कर्मचारियों को लेकर तमिलनाडु की एमके स्टालिन सरकार ने बड़ा ऐलान किया है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने शनिवार को एक नई योजना के तहत सरकारी कर्मचारियों के लिए रिटायरमेंट के बाद सुनिश्चित पेंसन की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि इस योजना से पुरानी पेंशन योजना जैसे लाभ मिलेंगे। आखिरी वेतन का आधा पेंशन के रूप में मिलेगा सरकार ने कहा कि सरकारी कर्मचारियों को मिले अंतिम वेतन का 50 प्रतिशत हिस्सा सुनिश्चित पेंशन के रूप में दिया जाएगा। इसके लिए राज्य सरकार कर्मचारियों के 10 प्रतिशत योगदान के साथ ही पेंशन फंड में जरूरी अतिरिक्त धनराशि देगी। इस योजना के तहत पेंशनभोगियों के लिए सरकारी कर्मचारियों के समान ही हर छह महीने में महंगाई भत्ते को बढ़ाया जाएगा। पेंशनभोगियों की मृत्यु होने पर पेंशन राशि का 60 प्रतिशत हिस्सा मृतक के नामांकित व्यक्ति को पारिवारिक पेंशन के रूप में दिया जाएगा। अगर किसी कर्मचारी की सेवा के दौरान मृत्यु हो जाती है, तो सेवा की अवधि को ध्यान में रखते हुए अधिकतम 25 लाख रुपये तक दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि नई सुनिश्चित पेंशन योजना के लागू होने के बाद सेवानिवृत्त होने वाले सभी लोगों को न्यूनतम पेंशन प्रदान की जाएगी। तमिलनाडु सुनिश्चित पेंशन योजना के लागू होने से पहले अंशदायी पेंशन योजना के तहत सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले लोगों को विशेष अनुकंपा पेंशन दी जाएगी। टीएपीएस के लिए तमिलनाडु सरकार को पेंशन फंड में अतिरिक्त 13,000 करोड़ रुपये देने होंगे। साथ ही सालाना तौर पर टीएपीएस के कार्यान्वयन में सरकार के योगदान के रूप में लगभग 11,000 करोड़ रुपये का खर्च आएगा।

### अजित पवार की एनसीपी का शरद पवार की पार्टी में हो जाना चाहिए विलय

**मुंबई, एजेंसी।** शिवसेना-यूबीटी के नेता संजय राउत ने शनिवार को कहा कि अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी का शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी में विलय हो जाना चाहिए, क्योंकि पुणे और पिंपरी चिंचवड महानगर पालिका चुनावों के लिए दोनों गुटों ने हाथ मिला लिया है। राउत ने सवाल भी उठाया कि अजित पवार की ओर से भाजपा शासित पिंपरी चिंचवड महानगर पालिका में भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जाने के एक दिन बाद भी वह

महायुति सरकार में क्यों हैं। महायुति में भाजपा, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी शामिल हैं। संजय राउत ने कहा कि भाजपा और अजित पवार ने एक-दूसरे पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा, 'तो फिर आप सरकार में क्यों हैं? अजित पवार को शरद पवार के पास वापस आ जाना चाहिए। अब जब आपने पुणे और पिंपरी चिंचवड में गठबंधन कर लिया है, तो अजित पवार को भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार छोड़ देनी चाहिए और मूल एनसीपी में मिला देना चाहिए।' वर्ष 2023 में अजित पवार कई विधायकों के साथ भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति सरकार में शामिल हो गए थे, जिसे एनसीपी दो गुटों में विभाजित हो गई थी। संजय राउत ने कहा कि अजित पवार भाजपा की ओर से किए जा रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं और पवार परिवार एक साथ चुनाव लड़ रहा है। शिवसेना (यूबीटी) नेता ने कहा, 'ऐसा लगता है कि अजित पवार की दिशा बदल गई है। अगर ऐसा है, तो उन्हें भाजपा का साथ छोड़ देना चाहिए।'

# वाराणसी में एनकाउंटर; एक लाख के इनामी को गोली मारकर दबोचा

## कालोनाइजर की हत्या कर फरार था

**वाराणसी, एजेंसी।** वाराणसी में कॉलोनाइजर महेंद्र गौतम की हत्या में शामिल शूटर से पुलिस का एनकाउंटर हुआ है। शूटर के पैर में गोली मारकर उसे दबोच लिया गया है। सारनाथ की अरिहंत नगर कॉलोनी फेज-2 में पिछले साल 21 अगस्त को कालोनाइज की हत्या हुई थी। दबोचे गए शूटर पर एक लाख का इनाम घोषित किया गया था। डीसीपी वरुणा जोन प्रमोद कुमार ने बताया कि गिरफ्तार शूटर गाजीपुर के कोतवाली थाना क्षेत्र के सिमराफैज गांव निवासी अरविंद यादव उर्फ फौजी उर्फ कल्लू है।

बताया कि बदमाश के क्षेत्र में किसी वारदात को अंजाम दिए जाने की सूचना पर सारनाथ थाना प्रभारी पंकज त्रिपाठी और एसओजी प्रभारी गौरव सिंह टीम के साथ निरीक्षण कर रहे थे। सराय मोहाना में बदमाश मौजूद था। पुलिस को देखते ही बदमाश दोनों हाथों में असलहा लेकर फायरिंग करने लगा। जवाबी कार्रवाई में उसके पैर में गोली लगी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से दो असलहा, कारतूस बरामद किया गया है। उसके खिलाफ विभिन्न थानों में करीब दर्जन भर केस दर्ज हैं। सोनभद्र में पुलिस ने शनिवार की रात बिल्ली मारकुंडी खनन क्षेत्र में मुठभेड़ के दौरान गैंगरेप के तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। एक आरोपी को पैर में गोली लगी, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। 30 दिसंबर को आरोपियों ने दलित किशोरी के साथ

गैंगरेप किया था। क्षेत्राधिकारी ओबरा अमित कुमार ने बताया कि दलित किशोरी से गैंगरेप के मामले में पीड़िता की मां की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही थी। थाना प्रभारी ओबरा के नेतृत्व में दो विशेष पुलिस टीमों का गठन कर लगातार दबिश दी जा रही थी। शनिवार की रात को मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने बिल्ली मारकुंडी खदान क्षेत्र में घेराबंदी की। पुलिस ने दो आरोपी पप्पू उर्फ बिन्दू यादव पुत्र रवि यादव निवासी कनहरा ओबरा एवं अर्जुन डोम पुत्र स्व नन्हक डोम निवासी भलुआ टोला मलिन बस्ती थाना ओबरा को मौके से गिरफ्तार कर लिया। तीसरा आरोपी करन डोम पुत्र चन्द्रमड़ी डोम निवासी सेक्टर-10 लंका कॉलोनी ओबरा ने भागने का प्रयास करते हुए पुलिस टीम पर फायरिंग की। इस पर पुलिस टीम द्वारा आत्मरक्षार्थ में की गई जवाबी कार्रवाई में आरोपी के पैर में गोली लगी और वह घायल हो गया। उसे गिरफ्तार कर उसके कब्जे से तमंचा और कारतूस बरामद किया

## आदर्श रोड के तौर पर होगा कायाकल्प

# गाजियाबाद में 6 सड़कों पर मिलेगी फ्री कार पार्किंग

**गाजियाबाद , एजेंसी।** एनसीआर के शहर गाजियाबाद के इंदिरापुरम, वैशाली और कौशांबी की छह

प्रमुख सड़कों के कायाकल्प के बाद वाहन चालकों को निशुल्क पार्किंग की सुविधा भी मिलेगी। सीएम ग्रिड योजना के दूसरे चरण में 307 करोड़ रुपये की लागत से होने वाले इस कार्य में सड़क निर्माण के साथ व्यवस्थित पार्किंग को प्राथमिकता दी गई है। 15 माह में सभी सड़कें आदर्श के रूप में तैयार होंगी।

सीएम ग्रिड योजना के दूसरे चरण का पिछले महीने ही शिलान्यास हुआ था। योजना के तहत सड़कों को इस तरह विकसित किया जा रहा है कि ट्रैफिक सुचारू रहे और बेतरतीब पार्किंग से होने वाली जाम की समस्या खत्म हो सके। साइड फेंसिंग के स्थान पर पार्किंग के लिए अलग से जगह बनाई जाएगी। पार्किंग का डिजाइन ऐसा होगा कि पैदल यात्रियों को चलने में किसी तरह की परेशानी न हो। सड़क से ऊंचा और सुरक्षित पैदल पार पथ रहेगा, जिस पर वाहन नहीं चढ़ सकेंगे। अभी भी यहां सड़क किनारे वाहन खड़े रहते हैं, लेकिन अव्यवस्थित तरीके से वाहनों के खड़े होने और अतिक्रमण के कारण लोगों को सड़कों पर चलना पड़ता है। काम पूरा होने के बाद इन मार्गों पर अतिक्रमण नहीं होगा। यदि कोई सड़क पर कब्जे की कोशिश करता है तो उस पर तुरंत कार्रवाई होगी। सभी मार्ग चार लेन के होंगे। हरियाली और पथ प्रकाश की बेहतर व्यवस्था रहेगी। साइड एरिया में पार्किंग के साथ बैठने के लिए बेंच भी लगाई जाएंगी। सभी छह सड़कों की कुल लंबाई 16 किलोमीटर से अधिक है। इससे एक ओर जहां ट्रैफिक दबाव कम होगा, वहीं दूसरी ओर लोगों को सुरक्षित और सुविधाजनक पार्किंग की बड़ी राहत मिलेगी।

### मनाली में ताजा बर्फबारी, पर्यटकों की भारी भीड़

**मनाली , एजेंसी।** हिमाचल प्रदेश के मनाली में रविवार को ताजा बर्फबारी के बाद पर्यटकों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। वहीं राज्य के कई शहरों में तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से नीचे है। मौसम विभाग ने राज्य में 4 से 6 जनवरी के बीच निचले पहाड़ी और मैदानी जिलों के लिए घने कोहरे की चेतावनी जारी की है। मनाली में बर्फबारी का मजा लेने के लिए टूरिस्ट देश के अलग-अलग हिस्सों से पहुंच रहे हैं। मनाली में तापमान माइनस 5 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच चुका है। मनाली में इसबार टूरिस्ट भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। अटल टनल के पार भारी बर्फबारी ने टूरिस्ट को अपनी ओर खींचा। ठंड का कहर लगातार जारी है और मनाली में बादल छाए हुए हैं। मौसम विभाग ने राज्य के सात जिलों में अगले हफ्ते कुछ जगहों पर घने कोहरे के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, कुकुमसेरी में शनिवार को सबसे कम माइनस 7 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था। मौसम विभाग ने किन्नौर और लाहौल और स्पीति जिलों में 6 जनवरी को कुछ जगहों पर हल्की बर्फबारी का अनुमान लगाया है।

# अजय चौटाला ने दिए गए बयान को लेकर उठे विवाद पर दी अपनी सफाई

**चंडीगढ़, एजेंसी।** जननायक जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय चौटाला ने महेंद्रगढ़ में दिए गए बयान को लेकर उठे विवाद पर अपनी सफाई दी है। चौटाला ने कहा कि उन्होंने कोई विवादित या गलत बयान नहीं दिया है। भाजपा के मंत्री बेवजह उनके बयान पर आपत्ति जता रहे हैं और बिना वजह मुद्दा बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि अजय सिंह चौटाला ने कहा कि उन्होंने अपने बयान में सिर्फ पड़ोसी देशों में हुए हालातों का जिक्र किया है। दुनिया के कई देशों में ऐसा देखा गया है कि जब जनता पर अत्याचार बढ़ा, तब जनता ने शासकों के खिलाफ खड़े होकर बदलाव किया और तख्तापलट जैसी परिस्थितियां बनीं। उन्होंने कहा कि वह आज भी अपने उसी बयान पर कायम हैं और उसमें कुछ भी गलत नहीं है।

चौटाला ने कहा कि आज देश में भी हालात लगातार बिगड़ रहे हैं और अब युवाओं को संगठित होने की जरूरत है। देश में बदलाव लाने की ताकत सिर्फ युवाओं के पास है और आने वाले समय में युवा ही निर्णायक भूमिका निभाएंगे। अजय चौटाला ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार के कई मंत्री उनके बयान को लेकर पागल हो रहे हैं, जबकि असल मुद्दों पर कोई बात नहीं हो रही। उन्होंने कहा कि देश ने पहले भी बदलाव देखा है। आपातकाल के दौरान कांग्रेस सरकार ने लोगों का दमन किया था लेकिन उसी दौर में देश में क्रांति आई और बदलाव हुआ। आज

फिर देश को बदलाव की जरूरत है। अजय चौटाला ने आरएसएस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि आज देश की लगभग सभी संवैधानिक संस्थाओं पर आरएसएस का कब्जा हो चुका है। उन्होंने दावा किया कि शिक्षण संस्थानों को भी नहीं छोड़ा गया है।

### ओवैसी बोले- मोदी जी आतंकियों को उठाकर भारत लाओ

**मुंबई, एजेंसी।** अमेरिकी सेनाओं की ओर से वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मदुरो को पकड़कर यूएस ले जाने का मामला गरमाया हुआ है। भारत में भी इस पर काफी राजनीतिक प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने इसे लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चुनौती दे डाली। मुंबई में शनिवार को जनसभा को संबोधित करते हुए ओवैसी ने कहा, 'आज हमने सुना कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सेनाओं ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति मदुरो को पकड़ लिया और उन्हें उनके देश से अमेरिका ले गए। अगर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप वेनेजुएला के राष्ट्रपति को उनके अपने देश से अपहरण कर सकते हैं, तो आप भी पाकिस्तान जाकर 26/11 आतंकी हमलों के मास्टरमाइंड को भारत ला सकते हैं।' असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि मोदी जी हम आपको कह रहे हैं, आप भी पाकिस्तान में जाकर जो मुंबई की सड़कों पर साजिश करने वाले 26/11 के जालिम लोग हैं।

# न्यू आगरा में 14.6 लाख लोगों को बसाने का होगा इंतजाम, 12,200 हेक्टेयर जमीन पर बसेगा सुंदर शहर

**ग्रेटर नोएडा , एजेंसी।** यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण ने नए आगरा को विकसित करने का काम तेज कर दिया है। मास्टर प्लान को परीक्षण के लिए दिल्ली स्थित स्कूल ऑफ प्लॉनिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) भेजा गया है। उनसे इस पर सुझाव के साथ एक माह में रिपोर्ट मांगी गई है। सुझावों को शामिल कर मास्टर प्लान को अंतिम रूप दिया जाएगा।

प्राधिकरण के अधिकारी के मुताबिक, बोर्ड व प्रदेश सरकार की स्वीकृति के बाद इस योजना पर काम शुरू किया जाएगा। यमुना प्राधिकरण के फेज-दो में आगरा जिले के 58 गांव अधिसूचित हैं। इन गांवों की 12,200 हेक्टेयर जमीन पर न्यू आगरा अर्बन सेंटर विकसित किया जाएगा। इस नए शहर में 14.6 लाख लोगों के बसाने के लिए सभी मूलभूत सुविधाएं विकसित की जाएंगी। पर्यटन, उद्योग व वाणिज्यक सुविधाओं के विकास से लगभग 8.5 लाख लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। पर्यटन व हरित क्षेत्र पर विशेष जोर दिया जाएगा। प्रदूषण मुक्त उद्योगों को प्राथमिकता दी जाएगी।

अधिकारी के मुताबिक, न्यू आगरा का विकास चंडीगढ़ से प्रेरित होगा। इसके प्रस्तावित मास्टर प्लान में 2,501 हेक्टेयर क्षेत्र आवासीय होगा। यह कुल विकसित क्षेत्र का 27.7 फीसदी है। इसमें 14.6 लाख लोगों के रहने के लिए सुविधाएं विकसित होंगी। नए शहर को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए मैन्युफैक्रिरिंग, कृषि आधारित उद्योग, आईटी और आइटीईएस आधारित उद्योग को प्राथमिकता दी जाएगी। इसका क्षेत्रफल 1813 हेक्टेयर व 447 हेक्टेयर क्षेत्र मिश्रित उपयोग सेक्टर विकसित होंगे। वहीं 340 हेक्टेयर में व्यापारिक क्षेत्र होगा, जिसमें खुदरा दुकानें,

कार्यालय परिसर और व्यावसायिक केंद्र विकसित किए जाएंगे।

शैलेंद्र भाटिया, एसीईओ, यीडा, आगरा पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील और ऐतिहासिक है। न्यू आगरा के विकास पर इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा। मास्टर प्लान का स्कूल ऑफ प्लॉनिंग एंड आर्किटेक्चर से परीक्षण कराया जा रहा है। इसके बाद मास्टर प्लान पर आगे का काम शुरू किया जाएगा।

# जेल से बाहर आए पूर्व मुख्यमंत्री बघेल के बेटे, मिला ग्रैंड वेलकम, 170 दिन बाद रिहाई

**रायपुर, एजेंसी।** छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य शनिवार को जेल से बाहर आ गए। जेल के बाहर ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनका ग्रैंड वेलकम किया। चैतन्य के स्वागत के लिए ढोल-नगाड़े बजाए गए। बेटे को रिसीव करने के लिए खुद भूपेश बघले भी रायपुर सेंट्रल जेल पहुंचे। बेटे की रिहाई से पहले भुपेश बघेल ने कहा कि 'आज चैतन्य की रिहाई होने वाली है, ईडी ने मेरे बेटे के जन्मदिन पर उसे गिरफ्तार किया था और आज मेरे पोते के जन्मदिन पर मेरे बेटे को रिहाई मिल रही है, ये दिन हमारे लिए कई खुशियां लेकर आया है।' बिलासपुर हाई कोर्ट के जमानत मंजूर करने के बाद ही चैतन्य की रिहाई हुई है। जेल के बाहर मीडिया से बातचीत में चैतन्य ने कहा 'मुझे न्याय मिलने में थोड़ी देर हुई, लेकिन अंततः न्याय मिल ही गया। मुझे संविधान पर पूरा भरोसा है।' चैतन्य शराब घोटाला मामले में गिरफ्तार किए गए थे। चैतन्य को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 18 जुलाई को मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार किया था। खास बात ये है कि कोर्ट ने उन्हें जमानत शराब घोटाले में फाइनल चार्जशीट दाखिल होने के बाद दी। भ्रष्टाचार के इस मामले में ईडी को लगता है कि चैतन्य ने ही करीब 1000 करोड़ रुपये का लेन-देन अपने राजनीतिक प्रभाव के चलते खुद ही संभाला। ईडी का दावा- चैतन्य की अहम भूमिका ईडी का मानना है कि छत्तीसगढ़ शराब घोटाले में चैतन्य की अहम भूमिका रही और वे ही नेटवर्क को कंट्रोल किया करते थे। ईडी का ये भी कहना है कि सभी बड़े फैसले भी वे खुद ही लिया करते थे। भ्रष्टाचार के इस मामले में ईडी को लगता है कि चैतन्य ने ही करीब 1000 करोड़ रुपये का लेन-देन अपने राजनीतिक प्रभाव के चलते खुद ही संभाला।

जांच एजेंसियों का आरोप है कि चैतन्य को हिस्से के तौर पर 200 से 250 करोड़ रुपये मिले। एजेंसियों का मानना है कि पूरे घोटाले की कुल रकम 3200 से ज्यादा हो सकती है।

# नोएडा में 10 हजार फ्लैटों की रजिस्ट्री से रोक हटेगी, छोटे प्लॉटों की योजना में आसानी से होगा आवेदन

## सिटी के भूखंड-150 एससी 02 परियोजना पर लगी रोक हटाने का प्रस्ताव शनिवार को मंजूर कर लिया गया

**नोएडा , एजेंसी।** नोएडा प्राधिकरण की बोर्ड बैठक में स्पोर्ट्स सिटी के भूखंड-150 एससी 02 परियोजना पर लगी रोक हटाने का प्रस्ताव शनिवार को मंजूर कर लिया गया। रोक हटने से बिल्डर नक्शे पास करा सकेंगे। इससे 10 हजार फ्लैट की रजिस्ट्री की उम्मीद जग गई है।

बोर्ड बैठक में एक परियोजना को सशर्त अधिभोग प्रमाणपत्र जारी करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इसके बाद परियोजना के छह टावर (ए-1, ए-2, बी-1, बी-2 , बी-3 व सी-1) गोदरेज ब्रिक राइस के लिए अधिभोग प्रमाणपत्र जारी कर दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बाद प्राधिकरण ने यह फैसला लिया। प्राधिकरण ने बिल्डर पर निर्माण, सुरक्षा, खेल गतिविधियों, एनजीटी के नियम समेत 20 से ज्यादा शर्तें लगाई हैं। अधिकारियों का कहना है

कि अगर बिल्डरों ने खेल सुविधाएं विकसित कीं और बकाया राशि दी तो परियोजना का काम आगे बढ़ सकेगा। जिस भूखंड से बोर्ड ने रोक हटाई, वह लोटस ग्रीन बिल्डर को आवंटित थी। बिल्डर ने खेल सुविधाएं विकसित किए बिना भखंड के टुकड़े कर 24 बिल्डरों को बेचा। 2021 में प्रधिकरण ने स्पोर्ट्स सिटी की सेक्टर-78, 79, 150, 152 के प्रोजेक्ट के कामकाज को मंजूरी देने पर रोक लगा दी। नोएडा प्राधिकरण की बोर्ड बैठक में शनिवार को जिले के तीनों प्राधिकरणों की एक समान नीति (यूनिफाइड पॉलिसी) में संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। इससे 800 वर्गमीटर तक के भूखंडों और दुकानों की योजना में आवेदन करना आसान हो जाएगा। दादा-दादी, नाना-नानी से मिलने वाली संपत्तियों पर ट्रांसफर शुल्क भी नहीं देना होगा। अवस्थापना और औद्योगिक विकास आयुक्त दीपक कुमार की अध्यक्षता में नोएडा प्राधिकरण की 221वीं बोर्ड बैठक हुई। इसमें प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम, यमुना विकास प्राधिकरण के सीईओ राकेश कुमार सिंह, एसीईओ ग्रेटर नोएडा सुनिल कुमार सिंह मौजूद रहे। बैठक में 19 प्रस्तावों पर चर्चा की गई, जिसमें आठ को अनुमोदित किया गया। अधिकांश मामले शासन को भेजे गए। तीनों प्राधिकरणों में संपत्तियों के आवंटन प्रक्रिया में एकरूपता के लिए फरवरी 2025 में एक समान नीति लागू की गई थी। इसके बाद कई नियमों की जटिलता से परेशानी आने लगी। पिछले साल अक्टूबर में हुई बोर्ड बैठक में इस विषय को रखा गया। बोर्ड ने अध्ययन के बाद प्रस्ताव मांगा था, जिसको मंजूरी मिल गई। प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि सभी वाणिज्यिक संपत्तियों के आवंटन के लिए नियम एक कर दिए गए। ऐसे में 800 वर्ग मीटर से छोटे भूखंडों और दुकानों के लिए आवेदन करने में आयकर रिटर्न, पूंजी, लेनदेन का ब्योरा अनिवार्य कर दिया गया। इससे कारोबार शुरू करने वाले नए लोगों को दिक्कत आने लगी। इसे देखते हुए प्राधिकरण ने छोटे भूखंडों और दुकानों की योजना में आवेदन करने की यह बाध्यता हटाने का निर्णय लिया है। नए संशोधनों के साथ प्राधिकरण जल्द ही दुकानों और छोटे भूखंडों की योजना लाएगा। बोर्ड बैठक में बताया गया कि अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों का 57 परियोजनाओं में से 36 ने अबतक लाभ लिया है। नोएडा में सिटी लॉजिस्टिक विकसित करने और ट्रकों के बिना जाम में फंसे कंपनियों तक आसानी से पहुंचने के लिए योजना बनाई जाएगी।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें :
www.sonvarshavani.com



# नितीश रेड्डी के वनडे टीम में चयन पर भड़का पूर्व भारतीय बैटर

● **कहा- ऋतुराज गायकवाड़ के साथ हुई नाइंसाफी**



**नई दिल्ली, एजेंसी।** भारतीय क्रिकेट टीम व चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व बैटर एस बद्रीनाथ ने न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाली 3 मैचों की वनडे सीरीज के लिए भारत की वनडे टीम में नितीश कुमार रेड्डी को सेलेक्ट करने के लिए बीसीसीआई मेन्स सेलेक्शन कमेटी की आलोचना की है। उन्होंने लिस्ट ए क्रिकेट में शानदार रिकॉर्ड के बावजूद सीएसके के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ को टीम में शामिल नहीं किए जाने पर सवाल उठाए।

**नितीश रेड्डी को क्यों चुना गया** – बद्रीनाथ ने अपने यूट्यूब वीडियो में अपने विचार शेयर करते हुए कहा कि वनडे टीम में नितीश रेड्डी को क्यों चुना गया इसका कारण उन्हें समझ में नहीं आया वो भी तब जब भारत के पास पहले से ही टीम में अनुभवी ऑलराउंडर मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि ऋतुराज गायकवाड़ को टीम से बाहर किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है और उन्हें जब भी मौका मिला है अच्छा प्रदर्शन किया है। बद्रीनाथ ने कहा कि भारतीय वनडे टीम में दो ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा और वाशिंगटन सुंदर जब मौजूद हैं तब भी नीतीश कुमार रेड्डी को टीम में क्यों चुना गया ये बात उनकी समझ में नहीं आया। वे कहते हैं कि नितीश रेड्डी एक ऑलराउंडर है, लेकिन गेंदबाज़ी में उसकी हर जगह पिटाई हो रही है और ऋतुराज गायकवाड़ के साथ नाइंसाफी हुई है। नितीश-यशस्वी आउट, श्रेयस इन, रोहित-गिल ओपनर; न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए भारत की संभावित प्लेइंग 11 बद्रीनाथ ने इस फैसले पर सवाल उठाते हुए कहा कि ऋतुराज टीम में नहीं हैं और नितीश रेड्डी टीम में हैं ऐसा आखिर क्यों है। इसमें निश्चित रूप से कुछ गड़बड़ है।

# राहुल-पंत दोनों को मौका !

## एआई ने चुनी न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे के लिए भारत की प्लेइंग 11

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम 2026 में अपने अभियान की शुरुआत न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज से करेगी। 3 मैचों की सीरीज के लिए शनिवार (3 जनवरी) को भारतीय टीम का ऐलान हो गया। कप्तान शुभमन गिल और उप-कप्तान श्रेयस अय्यर की वापसी हुई। हालांकि, अय्यर का खेलना तय नहीं है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की मेडिकल टीम से हरी झंडी मिलने पर ही वह खेल पाएंगे। इसके अलावा ड्रॉप किए जाने के अटकलों के बीच ऋषभ पंत को बतौर दूसरे विकेटकीपर टीम में मौका मिला। जनसत्ता.कॉम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज के पहले मैच के लिए भारत की प्लेइंग 11 चुनने के लिए आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया। चैट जीपीटी ने भारत की प्लेइंग 11 में श्रेयस अय्यर के साथ केएल राहुल और ऋषभ पंत दोनों को मौका दिया। उसने सिर्फ एक स्पिन ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा को चुना।

### चैट जीपीटी द्वारा चुनी गई भारत की प्लेइंग 11

रोहित शर्मा, शुभमन गिल (कप्तान), विराट कोहली, श्रेयस अय्यर (उप-कप्तान), केएल राहुल (विकेटकीपर), ऋषभ पंत (विकेटकीपर/बल्लेबाज), रविंद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा/प्रसिद्ध कृष्णा।

# फुटबॉल जगत में शोक, बुल्गारिया के महान फुटबॉल खिलाड़ी और कोच का निधन



**सोफिया, एजेंसी।** बुल्गारिया के दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी और कोच दिमितार पेनेव का 80 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। बुल्गारियाई फुटबॉल यूनियन ने शनिवार को उनके निधन की पुष्टि की। पेनेव वही कोच थे जिनकी अगुआई में बुल्गारिया की राष्ट्रीय टीम ने 1994 फीफा विश्व कप में चौथा स्थान हासिल किया था, जो आज तक का उसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन माना जाता है।

**देश-विदेश से श्रद्धांजलि** – दिमितार पेनेव के निधन पर बुल्गारिया के फुटबॉल क्लबों, खिलाड़ियों और कोचों ने शोक व्यक्त किया। इसके साथ ही देश के निवर्तमान प्रधानमंत्री रोसेन ज़ेल्याज़कोव ने भी उन्हें श्रद्धांजलि दी। फुटबॉल जगत में उनके योगदान को याद करते हुए सभी ने उन्हें एक महान खिलाड़ी और प्रेरणादायी कोच बताया।

**क्रिस्टो स्टोइचकोव का भावुक संदेश** – बुल्गारिया के सबसे सफल फुटबॉल खिलाड़ियों में शुमार क्रिस्टो स्टोइचकोव ने फेसबुक पर भावुक पोस्ट साझा की। उन्होंने लिखा, 'वह व्यक्ति जिसने हमें दुनिया में चौथा स्थान दिलाया। वह व्यक्ति जिसने हममें से दर्जनों लोगों को इंसान और एथलीट के रूप में गढ़ा। शांति से आराम करें, बॉस। आपको कभी नहीं भुलाया जाएगा।'

**शानदार खिलाड़ी करियर** – दिमितार पेनेव ने अपने खेल करियर में सीएसकेए सोफिया के लिए 13 वर्षों तक खेला और उन्हें बुल्गारिया के शीर्ष सेंटर-बैक खिलाड़ियों में गिना जाता था। उन्होंने 1966, 1970 और 1974 के फीफा विश्व कप में बुल्गारिया का प्रतिनिधित्व किया। पेनेव ने कुल 90 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले और दो बार 'बुल्गारियाई फुटबॉलर ऑफ द ईयर' का सम्मान हासिल किया।

**कोच के रूप में भी बेमिसाल सफर** – खिलाड़ी के बाद कोच के रूप में भी दिमितार पेनेव का करियर बेहद सफल रहा। वह 2012 तक कोचिंग में सक्रिय रहे। इस दौरान उन्होंने तीन बुल्गारियाई लीग खिताब, चार बुल्गारियाई कप और एक बुल्गारियाई सुपर कप जीता। साल 2019 में वह सलाहकार के रूप में एक बार फिर सीएसकेए सोफिया क्लब से जुड़े थे।

# टी-20 वर्ल्ड कप के लिए भारत नहीं आएगी बांग्लादेशी टीम, आईपीएल विवाद के बीच बीसीबी का फैसला

**नई दिल्ली, एजेंसी।** बांग्लादेश की टीम आईसीसी मेन्स टी20 वर्ल्ड कप 2026 खेलने के लिए भारत नहीं जाएगी. बांग्लादेश के खेल सलाहकार आसिफ नजरुल ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इस बात की पुष्टि की है. नजरुल ने कहा कि बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने बैठक के बाद इस बात का फैसला लिया है. अब इंतजार इस बात का है कि इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल का इस मुद्दे पर क्या रुख होता है क्योंकि इस बड़े इवेंट के लिए शेड्यूल वगैरह तो आईसीसी ही तैयार करती है. आसिफ नजरुल ने फेसबुक पर लिखा, 'बांग्लादेश विश्व कप खेलने के लिए भारत नहीं जाएगा. बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने आज (4 जनवरी) यह फैसला लिया है. हम इस फैसले का स्वागत करते हैं, जो इंडियन क्रिकेट बोर्ड की आक्रामक सांप्रदायिक नीतियों के जवाब में लिया गया है. बीसीबी का ये फैसला बांग्लादेशी गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान को इंडियन प्रीमियर लीग से बाहर करने के बाद लिया गया है. भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने कोलकाता नाइट राइडर्स को निर्देश दिया था कि वो मुस्ताफिजुर रहमान को अपनी टीम से रिलीज कर दे. केकेआर ने बीसीसीआई के निर्देशों का पालन करते हुए मुस्ताफिजुर को रिलीज कर दिया था.

**ऑस्ट्रेलिया-इंग्लैंडः**

# रूट और ब्रूक के 154 रन जोड़ने के बाद सिडनी टेस्ट में अचानक रुका खेल, हो गया ऐसा

**नई दिल्ली, एजेंसी।** सिडनी टेस्ट में पहले दिन का खेल अचानक रोक दिया गया. समय से पहले ही टी-ब्रेक ले लिया गया. ऐसा तब हुआ जब इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट और हैरी ब्रूक विकेट पर जमे थे. अपनी पारी को बड़े स्कोर में बदलने की ओर दोनों बढ़ चले थे और जब तक खेल रुका तब तक साथ मिलकर इंग्लैंड के स्कोर बोर्ड में 154 रन जोड़ भी चुके थे. अब सवाल है कि सिडनी टेस्ट में खेल को अचानक रोका क्यों गया? इस सवाल का जवाब है खराब रोशनी और बारिश.

**खराब रोशनी और बारिश ने रोका खेल** – सिडनी टेस्ट के पहले दिन के पहले सेशन का खेल शानदार चला. पहले सेशन में ऑस्ट्रेलिया को 3 सफलता हाथ लगी. लेकिन, दूसरे सेशन यानी लंच के बाद का खेल पूरी तरह से इंग्लैंड की झोली में जाता दिखा. जो रूट और हैरी ब्रूक दोनों जिम्मेदारी से अपनी इनिंग को अंजाम दे रहे थे. लेकिन, अचानक ही खेल को खराब रोशनी की वजह से रोक दिया गया. बारिश की आशंका को देखते हुए पिच और ग्राउंड को कवर कर दिया गया. बाद में ये आशंका हकीकत में भी बदल गई. सिडनी में तेज बारिश होने लगी.

**रूट और ब्रूक के 154 रन जोड़ने के बाद रुका खेल** – सिडनी टेस्ट में जिस वक्त खराब रोशनी के चलते खेल रुका, जो रूट 103 गेंदों पर 72 रन बनाकर खेल रहे थे. यानी वो अपनी 67 हाफ सेंचुरी टेस्ट में जड़ चुके थे. वहीं हैरी ब्रूक 92 गेंदों पर 78 रन बनाकर खेल रहे थे. बड़ी बात ये है कि सिडनी टेस्ट में इंग्लैंड की ढहती पारी को संभालने वाले ये दोनों खिलाड़ी काउंटी क्रिकेट में यॉर्कशर के लिए भी साथ खेलते है.

## क्रिकेट इतिहास

# जब 21 साल के बल्लेबाज ने 6 गेंदों में बना दिए 48 रन! जानिए कैसे

**नई दिल्ली, एजेंसी।** क्रिकेट के मैदान पर जब कभी 'एक ओवर में क्या-क्या हो सकता है' की बात होगी, तो अफगानिस्तान के युवा बल्लेबाज सेदिकुल्लाह अटल का नाम जरूर लिया जाएगा. महज 21 साल की उम्र में अटल ने ऐसा कारनामा कर दिखाया, जो दो साल बाद भी अटूट रिकॉर्ड के तौर पर कायम है. एक ही ओवर में 48 रन बनाना और उसमें 7 छक्के जड़ देना आज भी क्रिकेट फैंस को हैरान कर देता है. यह ऐतिहासिक पल काबुल प्रीमियर लीग के एक मुकाबले में देखने को मिला, जब शाहीन हंटर्स और अबासिन डिफेंडर्स आमने-सामने थे. 19वें ओवर तक शाहीन हंटर्स की हालत ज्यादा मजबूत नहीं थी. टीम 6 विकेट खोकर 158 रन पर थी और दबाव साफ दिख रहा था. क्रीज पर कप्तान सेदिकुल्लाह अटल टिके हुए थे, लेकिन मैच अभी भी बराबरी का लग रहा था. इसी ओवर में गेंदबाजी के लिए आए बाएं हाथ के स्पिनर आमिर जजई. पहली ही गेंद नो-बॉल रही और अटल ने उसे सीधा स्टैंड्स में भेज दिया. इसके बाद गेंदबाज का कंट्रोल पूरी तरह टूट गया. लगातार वाइड गेंदें, फ्री हिट और फिर एक के बाद एक गगनचुंबी छक्के. उस एक ओवर में कुल 48 रन बने. अटल ने सात छक्के जड़े और इसी दौरान सिर्फ 48 गेंदों में शतक भी जड़ दिया. यह किसी भी मान्यता प्राप्त टूर्नामेंट में एक ओवर में सबसे ज्यादा रन बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बन गया. आमिर जजई के लिए यह ओवर किसी बुरे सपने से कम नहीं था. उन्होंने अपने चार ओवर में 79 रन लुटा दिए. अटल की तूफानी बल्लेबाजी के दम पर शाहीन हंटर्स ने 6 विकेट पर 213 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया. जवाब में अबासिन डिफेंडर्स की टीम दबाव में बिखर गई और सिर्फ 121 रन पर ऑलआउट हो गई. हंटर्स ने यह मुकाबला 92 रनों से अपने नाम किया. इस मैच में अटल 56 गेंदों में नाबाद 118 रन बनाकर लौटे. उनकी पारी में 7 चौके और 10 छक्के शामिल थे. काबुल के पास लोगर से आने वाले इस बाएं हाथ के बल्लेबाज ने 2023-24 में अफगानिस्तान के लिए तीनों फॉर्मेट में डेब्यू किया. अब तक वह टेस्ट, वनडे और टी20 इंटरनेशनल खेल चुके हैं और सीमित ओवरों में अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से पहचान बना चुके हैं.

## खतरे में आया सचिन तेंदुलकर का विश्व रिकॉर्ड

# रूट ने रचा इतिहास, सिडनी में किया कारनामा




**सिडनी, एजेंसी।** इंग्लैंड के स्टार बल्लेबाज जो रूट ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच में अपनी फॉर्म का लोहा मनवाते हुए एक और शानदार अर्धशतक जड़ा है। इस पारी के साथ ही रूट ने क्रिकेट जगत के महानतम बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के एक बड़े वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर कदम बढ़ा दिए हैं। जो रूट अब टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक अर्धशतक लगाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं।

### शिवनरेन चंद्रपॉल को छोड़ा पीछे

जो रूट के टेस्ट करियर का यह 67वां अर्धशतक है। इस उपलब्धि के साथ उन्होंने वेस्टइंडीज के दिग्गज शिवनरेन चंद्रपॉल को पछाड़ दिया है। उनके नाम कुल 66 अर्धशतक थे। अब वह सचिन तेंदुलकर के 68 अर्धशतकों के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी करने से मात्र एक कदम दूर हैं। क्रिकेट विशेषज्ञों का मानना है कि जिस लय में रूट बल्लेबाजी कर रहे हैं, वह इसी मैच की दूसरी पारी में इस रिकॉर्ड की बराबरी कर सकते हैं।

### संकट में हैरी ब्रूक के साथ संभाली इंग्लैंड की पारी

सिडनी टेस्ट में इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया, लेकिन टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। जैक क्रॉली, बेन डकेट और जैकब बेथल के सस्ते में आउट होने के बाद इंग्लैंड की टीम मुश्किल में थी। ऐसे समय में जो रूट और हैरी ब्रूक ने मोर्चा संभाला और चौथे विकेट के लिए एक महत्वपूर्ण शतकीय साझेदारी की। दोनों खिलाड़ियों ने अपने-अपने अर्धशतक पूरे कर टीम को सम्मानजनक स्थिति में पहुंचाया।

# डेविड वॉर्नर ने बिग बैश लीग में ठोका तूफानी शतक विराट कोहली के इस महारिकॉर्ड की कर डाली बराबरी



**नई दिल्ली, एजेंसी।** बिग बैश लीग 2025-26 का 21वां मुकाबला सिडनी थंडर और होबार्ट हरिकेन्स के बीच बीते 3 जनवरी को सिडनी में खेला गया। यह एक हाई स्कोरिंग मुकाबला रहा, जिसको होबार्ट ने 6 विकेट से अपने नाम कर लिया। भले ही यह मुकाबला सिडनी थंडर हार गई। लेकिन, उनके कप्तान डेविड वॉर्नर ने इस मैच में बड़ा कारनामा किया और भारत के स्टार और अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली के एक रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। 39 साल के डेविड वॉर्नर ने होबार्ट हरिकेन्स के खिलाफ अपनी तूफानी बल्लेबाजी से पुरानी यादें ताजा कर दीं। वॉर्नर ने दमदार शतक ठोका। वॉर्नर ने पारी का आगाज किया और 200 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 65 गेंद में 130 रन ठोक डाले। उन्होंने अपनी पारी में 11 चौके और 9 छक्के लगाए। इस शतक के साथ ही वॉर्नर ने विराट कोहली के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। दरअसल, यह वॉर्नर का टी20 में 9वां शतक था। विराट कोहली और साउथ अफ्रीका के राइली रूसो के नाम भी टी20 फॉर्मेट में 9-9 सेंचुरी हैं।

# अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से उस्मान ख्वाजा का संन्यास, ऑस्ट्रेलियाई पीएम ने साझा किया भावुक संदेश



**नई दिल्ली, एजेंसी।** ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी ओपनर बल्लेबाज़ उस्मान ख्वाजा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया है। 39 वर्षीय बाएं हाथ के बल्लेबाज़ ने बताया कि इंग्लैंड के खिलाफ सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में खेला जा रहा पांचवां एशेज टेस्ट उनके करियर का आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच होगा। इस मौके पर ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज़ ने ख्वाजा को लेकर एक खास और भावुक संदेश साझा किया।

### प्रधानमंत्री का 'ऑफ द फील्ड' संदेश

प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज़ ने सोशल मीडिया पर ख्वाजा की तारीफ करते हुए लिखा कि उन्होंने न सिर्फ मैदान पर बल्कि मैदान के बाहर भी ऑस्ट्रेलिया के लिए बहुत कुछ किया है। अल्बनीज ने कहा, 'उस्मान, आपने मैदान पर ऑस्ट्रेलिया के लिए जो किया और मैदान के बाहर ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए जो मायने रखा, उसके लिए धन्यवाद। आप अपने रिकॉर्ड, अपनी विरासत और आने वाली पीढ़ियों के लिए जो उदाहरण आपने पेश किया है, उस पर गर्व कर सकते हैं।'

### 87 टेस्ट का शानदार सफर

इस्लामाबाद में जन्मे उस्मान ख्वाजा ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 87 टेस्ट मैच खेले। अपने टेस्ट करियर में उन्होंने 157 पारियों में 6206 रन बनाए, उनका औसत 43.39 रहा। इस दौरान उनके नाम 16 शतक और 28 अर्धशतक दर्ज हैं। ख्वाजा लंबे समय से ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम की मजबूत कड़ी रहे हैं।

### सिडनी टेस्ट से पहले किया संन्यास

ख्वाजा ने सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में मीडिया से बातचीत के दौरान अपने संन्यास की पुष्टि की। उनका यह फैसला एशेज सीरीज के निर्णायक टेस्ट से ठीक पहले सामने आया, जिसने क्रिकेट जगत को भावुक कर दिया।पांचवें एशेज टेस्ट के पहले दिन स्टंप तक इंग्लैंड ने 45 ओवर में 3 विकेट पर 211 रन बना लिए। जो रूट और हैरी ब्रूक चौथे विकेट के लिए नाबाद 154 रन की साझेदारी की। रूट 72 रन और ब्रूक 78 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं। इससे पहले जैक क्रॉली और बेन डकेट ने 35 रन की ओपनिंग साझेदारी की। ऑस्ट्रेलिया की ओर से मिचेल स्टार्क, स्कॉट बोलैंड और माइकल नेसर ने एक-एक विकेट लिया।

## संक्षिप्त समाचार

### व्यवसायी रोहित सिंह का निधन

**आरा।** व्यवसायी एवं होटल पार्क व्यू के मालिक जनार्दन सिंह के पुत्र रोहित सिंह का शनिवार को आकस्मिक निधन हो गया। वे हरि जी के हाता के निवासी थे। मौत का कारण फिलहाल स्पष्ट नही है। बताया जा रहा, वह अपने घर में अचानक से गिर पड़े। अस्पताल में डॉक्टर ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। उनके निधन पर गणमान्य लोगों ने शोक संवेदना व्यक्त किया है विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने उनके आवास पर पहुंच कर श्रद्धांजलि व्यक्त किया। कहा- रोहित का सामाजिक व्यक्तित्व का था। विधायक के साथ ई. धीरेन्द्र सिंह, संजय कुमार सिंह, शैलेश सिंह गुड्डू थे। कुंवर सेना के अध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह उनके आवास पर जाकर सांत्वना दिया। कहा- रोहित युवा के साथ सफल व्यवसायी थे। पूर्व सांसद भारतीय जनता पार्टी नेत्री मीना सिंह ने कहा, रोहित का निधन को अति दुखदायी है। बिस्कोमान सह एनसीसीएफ के अध्यक्ष एवं नेफेड के निदेशक मंडल के सदस्य, भाजपा नेता विशाल सिंह ने कहा कि एक व्यवहार कुशल, मृदुभाषी एवं नेकदिल इंसान थे। भाजपा नेता अशोक कुमार शर्मा ने कहा, यह सामाजिक क्षति है। सांसद सुदामा प्रसाद शोक व्यक्त किया और श्रद्धांजलि दिया। कहा-रोहित सिंह एक अत्यंत मिलनसार और मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका असमय निधन परिवार और व्यवसाय जगत सहित पूरे समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। संभावना स्कूल की प्राचार्य अर्चना सिंह ने दुखद व्यक्त किया है।

### 25 लीटर देसी शराब बरामद, 1 गिरफ्तार

**कोईलवर।** गीधा थाने की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए थाना क्षेत्र के मटियारा गांव स्थित एक बगीचे से 25 लीटर देसी शराब बरामद की है। इस दौरान शराब कारोबार में संलिप्त एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।गिरफ्तार आरोपी धर्मेंद्र पासवान है। वह मटियारा गांव पुलिस मुनि का पुत्र है।थानाध्यक्ष टिंकू कुमार ने बताया कि शराब की अवैध बिक्री और भंडारण की सूचना मिलने पर त्वरित कार्रवाई की गई। छापेमारी के दौरान 25 लीटर देसी शराब बरामद की गई और मौके से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया।

### चोरी की बाइक के साथ बदमाश गिरफ्तार, जेल

**आरा।** नवादा थाना की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर चोरी के बाइक के साथ चोरी करने के आप में एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी बिहिया थाना क्षेत्र के बेलवनिया गांव के निवासी गोहाडी नट का पुत्र कमलेश नट है। नवादा थाना का थानाध्यक्ष विपिन बिहारी ने बताया कि 15 अगस्त 2025 को थाना क्षेत्र के आरा निबंधन कार्यालय के पास से कमलेश नट ने एक बाइक की चोरी कर ली थी। घटना के बाद बाइक के स्वामी उदवतनगर थाना क्षेत्र के कुसमी टोला गांव के निवासी हरेंद्र सम्राट के पुत्र दीपक सम्राट ने नवादा थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई। आवेदन में दीपक सम्राट ने लिखा था कि मैं किसी काम से निबंधन कार्यालय में आया था। निबंधन कार्यालय के बाहर बहुत गाड़ी खड़ी थी, मैं भी अपनी गाड़ी वहीं खड़ी कर निबंधन कार्यालय में चला गया। कुछ समय के बाद काम का निपटारा होने पर जब मैं बाहर आया तो देखा कि जहां मेरी गाड़ी खड़ी थी वहां मेरी गाड़ी नहीं है। काफी इधर-उधर खोजबीन किया लेकिन कहीं पता नहीं चला। इसके बाद पुलिस ने केस दर्ज कर गाड़ी चोरी करने के आरोपी कमलेश नट को चोरी की गई बाइक के साथ बिहिया थाना क्षेत्र के बेलवनिया गांव से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ करने के बाद उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

### जीरो टिलेज से करें गेहूं की खेती

**केसठ।** कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण आत्मा के तत्वावधान में शनिवार को रामपुर गांव में जीरो टिलेज गेहूं विषय पर किसान पाठशाला का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सहायक तकनीकी प्रबंधक नवानगर अंकुर राज एवं प्रखंड तकनीकी प्रबंधक केसठ डॉ प्रफुल्ल कुमार ने प्रशिक्षण दिया। पाठशाला में किसानों ने भाग लिया। जिसमें मुख्य रूप से किसानों को बताया गया कि जीरो टिलेज गेहूं की खेती एक आधुनिक और फायदेमंद विधि है। जिसमें पिछली फसल के अवशेष खेत में छोड़कर बिना जुताई के सीधे बीज बोए जाते हैं। इससे समय तथा पैसा की बचत होती है। साथ ही नमी बनी रहती है। मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है, और उत्पादन में वृद्धि होती है। जो किसानों के लिए बेहद फायदेमंद और लाभकारी है। तथा पर्यावरण को भी फायदा पहुंचती है। यह विधि जीरो टिलेज नामक मशीन से की जाती है। जो बुवाई और खाद डालने का काम एक साथ करती है। जिससे मजदूरों की बचत होती है। इस क्रम में किसानों के बीच जीरो टिलेज विधि क्या है जिस पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि इस तकनीक में खेत की जुताई नहीं की जाती है, धान कटाई के बाद बचे ठूंठों को खेत में ही रहने दिया जाता है।

### केंद्रीय स्वास्थ्य टीम ने बगवां आयुष्मान आरोग्य मंदिर का किया मूल्यांकन

**गड़हनी।** स्थानीय प्रखंड गड़हनी के आयुष्मान आरोग्य मंदिर बगवां का शनिवार को केंद्रीय स्वास्थ्य टीम ने मूल्यांकन किया। मूल्यांकन में स्वास्थ्य केंद्र का रख-रखाव, नियमित टीकाकरण, दवा वितरण, फाइलेरिया, टीवी, अग्निफायर, शौचालय सहित स्वास्थ्य विभाग की सभी योजनाओं का सुबह 10 बजे से लेकर शाम 4 बजे तक मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन बगवां आयुष्मान आरोग्य मंदिर के सीएचओ से किया गया है। ये मूल्यांकन ऑनलाइन किया मोबाइल के माध्यम से किया गया।

मूल्यांकन जिले के कई आयुष्मान आरोग्य मंदिर का एक एक कर किया जाएगा। उसके बाद जिस आयुष्मान आरोग्य मंदिर के द्वारा मूल्यांकन में सही जवाब व कार्य करने पर जिसका नम्बर अच्छा रहेगा इसको पुरस्कार से पुरस्कृति किया जाएगा। इस मौके पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुनील महेंद्र कपूर, स्वास्थ्य प्रबंधक अनिल कुमार, बीसीएम प्रकाश कुमार रजक, लेखपाल रोहन कुमार, पंकज कुमार सहित कई सीएचओ, एएनएम, आशा व स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

### 'एसपी साहब हमारी सास को मार दिया गया'

**बक्सर।** बक्सर के मुफस्सिल थाना में एसपी शुभम आर्य ने जनता दरबार लगाया। इस दौरान दर्जनों मामले सामने आए, जिनमें भूमि विवाद से संबंधित शिकायतें अधिक थीं। एक गंभीर मामले में, अखौरीपुर गोला की पूनम देवी ने अपनी सास की मौत के मामले में पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाया। एसपी ने मामले की गंभीरता को देखते हुए संबंधित जांच अधिकारी (IO) से स्पष्टीकरण मांगा और पुलिसकर्मी की लापरवाही स्वीकार की। पूनम देवी ने एसपी को बताया कि उनकी सास की हत्या कर दी गई थी, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। एसपी शुभम आर्य ने जब संबंधित आईओ से जानकारी ली, तो पता चला कि यह मामला अखौरीपुर गोला स्थित वार्ड 13 का है। मार्च 2025 में, गली में कचरा फैलाने को लेकर दो पक्षों के बीच मारपीट हुई थी। इस घटना में एक पक्ष से वार्ड पार्षद सहित तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घायलों में वार्ड पार्षद छोटे लाला बीन की 65 वर्षीय माता रजनी देवी की हालत बेहद गंभीर थी। उन्हें पहले बक्सर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से बेहतर इलाज के लिए बनारस ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया। रजनी देवी का चार महीने तक आईसीयू में इलाज चला, जिसके बाद उनकी मौत हो गई। पीड़ित पक्ष का आरोप है कि इस मामले के जांच अधिकारी (IO) ने शुरू से ही लापरवाही बरती। घटना के 10 महीने बाद भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका। पुलिस ने आरोपी के घर पर कुर्की की कार्रवाई का इश्तहार भी चिपकाया था, लेकिन आरोपी जमानत लेने में सफल रहे। पीड़ित परिवार ने पुलिस पर पैसे लेकर मामले में गंभीरता न दिखाने का भी आरोप लगाया। इस पर एसपी शुभम आर्य ने संबंधित आईओ को कड़ी फटकार लगाई। उन्होंने बक्सर डीएसपी गौरव पाण्डेय को मामले में स्पष्टीकरण मांगने का निर्देश दिया है। एसपी ने इस मामले में जांच अधिकारी की लापरवाही को स्वीकार किया। जनता दरबार में सबसे पहले सामूहिक समस्याओं पर चर्चा की गई, जिसमें अतिक्रमण और शराब से जुड़े मुद्दे प्रमुख रूप से सामने आए।फरियादियों ने शराबबंदी के बावजूद गांवों में शराब की उपलब्धता पर सवाल उठाए।

## बक्सर में डिलीवरी के दौरान महिला की मौत

# निजी अस्पताल में आशा की सलाह पर भर्ती परिजन ने लापरवाही का लगाया आरोप

निज संवाददाता। बक्सर

बक्सर नगर थाना क्षेत्र के नया बाजार स्थित एक निजी अस्पताल में शनिवार को डिलीवरी के दौरान 24 वर्षीय एक महिला की मौत हो गई। मृतका की पहचान गुड़िया देवी, पत्नी मनोज कुमार राम के रूप में हुई है। इस घटना के बाद आक्रोशित परिजनों और स्थानीय लोगों ने अस्पताल को घेरकर हंगामा किया। सूचना मिलने पर नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है। परिजनों के अनुसार, 1 जनवरी को गुड़िया देवी को प्रसव पीड़ा होने पर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वहां एक दिन के इलाज के बावजूद उसकी हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ। परिजनों ने आरोप लगाया कि अस्पताल में इलाज और स्टाफ के व्यवहार से असंतुष्ट होकर उन्होंने बाहर डिलीवरी कराने का फैसला किया। मृतका के पति मनोज कुमार राम ने बताया कि सदर अस्पताल में मौजूद एक आशा कार्यकर्ता की सलाह पर शनिवार सुबह उन्हें नया बाजार स्थित बनारसी अस्पताल ले जाया गया।

**30 हजार में किया गया ऑपरेशनः** मनोज कुमार के अनुसार, निजी अस्पताल में इलाज शुरू करने से पहले 30 हजार रुपए जमा कराए गए और कागजी औपचारिकताएं पूरी कर ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के बाद बच्चा सुरक्षित पैदा हुआ, लेकिन महिला की हालत गंभीर बताई गई। परिजनों का आरोप है कि इसके बाद अस्पताल प्रबंधन ने महिला को रेफर करने की बात कही, लेकिन रेफर से संबंधित कोई लिखित दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराया गया। परिजनों का दावा है कि उस समय तक महिला की मौत हो चुकी थी।

**ऑपरेशन के दौरान महिला की मौतः** मृतका की मां ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि ऑपरेशन के दौरान ही उनकी बेटी की मौत हो गई थी। उन्होंने दावा किया कि इसके बाद डॉक्टर अस्पताल छोड़कर चले गए और परिजनों को सही जानकारी नहीं दी गई। उन्होंने पूरे मामले को चिकित्सकीय लापरवाही बताते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। वहीं, मौके पर मौजूद अस्पताल के एक स्टाफ ने बताया कि ऑपरेशन सदर अस्पताल से जुड़े डॉक्टरों द्वारा किया गया था। यह भी सामने आ रहा है कि अस्पताल का संचालन भी सदर अस्पताल के कर्मी द्वारा ही किया जा रहा है। इससे सदर अस्पताल की भूमिका भी संदेह के घेरे में आ गई है। घटना की जानकारी मिलते ही वार्ड पार्षद राजकुमार राय उर्फ झब्बू राय मौके पर पहुंचे और पूरे मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग की। देर रात तक सैकड़ों लोग अस्पताल के बाहर डटे रहे।

## आरा में नाबालिग लड़की से छेड़खानी, विरोध करने पर मारपीट

परिवार के 3 सदस्य घायल, 2 आरोपियों को पुलिस ने पकड़ा

निज संवाददाता। आरा

भोजपुर में नाबालिग किशोरी से छेड़खानी और विरोध करने पर परिजनों के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। पीड़िता के पिता ने आठ लोगों के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। घटना मुफस्सिल थाना क्षेत्र के हसनपुरा गांव की है। जानकारी के अनुसार 16 साल की लड़की घर से शौच के लिए जा रही थी। इसी दौरान गांव के ही एक युवक ने सड़क पर उसका हाथ पकड़ लिया और छेड़खानी करने लगा। विरोध करने पर गाली-गलौज करना लगा। किसी तरह किशोरी वहां से बचकर अपने घर पहुंची। परिजनों को जानकारी दी। इसके बाद पिता, चाचा और चचेरे भाई शिकायत लेकर आरोपी के घर पर पहुंचे। वहां पहले से मौजूद नामजद आरोपियों ने मारपीट शुरू कर गी। लाठी-डंडे से घेरकर मारा। मारपीट में परिवार के तीन सदस्य घायल हो गए।

**पुलिस ने सख्त कार्रवाई की बात कही है:** सूचना मिलने पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई तरते हुए 2 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। जिसकी पहचान हसनपुरा गांव निवासी बिंदु यादव और उसके पुत्र गोपाल कुमार के तौर पर हुई है। मुफस्सिल थाना के प्रभारी थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार ने बताया कि किशोरी के पिता के बयान के आधार पर पोक्सो अधिनियम सहित छेड़खानी और मारपीट की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई है। फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है। दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

# 'अकेले मिलोगे, ट्रक चढ़ा देंगे,3 महीने में बेल मिलती है'

निज संवाददाता। बक्सर

रील बनाकर पुलिस को दी धमकी, गिरफ्तार, बोला- चालान कटा था, एक दिन मार देता

'होश ठिकाने लगा देंगे। याद रखना तुम। अकेले में मिलोगे ना, ट्रक चढ़ा देंगे। 3 महीने में ही बेल हो जाती है।' सोशल मीडिया पर इन दिनों इस डायलॉग के साथ पुलिस वाले को धमकी देने की एक रील तेजी से वायरल हो रहा है। रील्स में देखा जा सकता है कि, एक ट्रक में ड्राइवर ड्राइविंग सीट पर बैठा है। वहीं सड़क पर वर्दी में एक पुलिस वाला खड़ा है। वो पुलिस वाले को जान से मारने की खुलेआम धमकी देता है। धमकी के बाद उसने कंधे में लाठी लिए और मूछों पर ताव देते हुए फोटो भी लगाई है।

**गिरफ्तारी के दौरान पुलिस को रौंदने की कोशिश कीः** आरोपी ड्राइवर का नाम गोविंद यादव है। ये यूपी के मऊ का रहने वाला है। वो रील में बिहार पुलिस के एक जवान को धमका रहा था। रील वायरल होने के बाद पुलिस ने एक्शन लिया और एक टीम बनाकर गोविंद की कुंडली खंगालनी शुरू की।

पता चला गोविंद यूपी से बक्सर ट्रक लेकर आता है। इसका बाद पुलिस ने 3 जनवरी 2026 को बक्सर गोलंबर के पास से आरोपी को उसके ट्रक के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। जब पुलिस उसे गिरफ्तार करने पहुंची तो उसने ट्रक की स्पीड को तेज कर दिया। पुलिस की माने तो वो वर्दीवालों पर ट्रक चढ़ा कर भागना चाहता था। लेकिन पुलिस ने उसे चारों तरफ से घेर लिया और उसे गिरफ्तार कर लिया है।

**पुलिस वाले को गाड़ी से रौंदना चाहता थाः** पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद गोविंद यादव ने बताया कि, कुछ दिनों पहले उसकी गाड़ी का चालान कटा था। वो इससे काफी नाराज था। इसी गुस्से की वजह से उसने पुलिस वाले का वीडियो बनाकर उसे वायरल किया। आरोपी ने यह कबूल किया कि उसकी थी कि किसी दिन चालान काटने वाले पुलिस वाले के ऊपर ट्रक चढ़ा दूंगा।

## आरा के अलग-अलग इलाकों में 5 घंटे तक शटडाउन बरजा फीडर-जापानी पीएसएस से सप्लाई बाधित रहेगी

निज संवाददाता। आरा

आरा में आज(रविवार) अलग-अलग इलाकों में 5 घंटे तक बिजली कटेगी। मेंटेनेंस वर्क को लेकर सुबह 11 बजे से शाम 4 तक बजे तक 11 केवी बरजा फीडर से सप्लाई ठप रहेगी। जापानी PSS से फीडर संख्या 3 से सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक बिजली नहीं रहेगी। बिजली विभाग के मुताबिक पावरगंज (गोढना रोड) PSS से भी 4 घंटे तक शटडाउन रहेगा। इस दौरान पेड़ों की छंटाई की जाएगी।

साथ ही क्षेत्र में जर्जर तार और पोल की मरम्मती की जाएगी। ताकि उपभोक्ताओं को बिजली से संबंधित कोई भी समस्या उत्पन्न न हो। सहायक विद्युत अभियंता सौरभ कुमार ने अपील करते हुए कहा कि उपभोक्ताओं के लिए अलर्ट जारी किया गया है। बिजली से जुड़ा कार्य समय से निपटा लें। पानी स्टोर करके रख लें। असुविधा के लिए खेद है। मेंटेनेंस वर्क पूरा होते ही बिजली सप्लाई चालू कर दी जाएगी।

**इन इलाकों में कटेगी बिजलीः** सेमरिया, टेनुआ, अगरसंडा, बेहरा, पुरषोत्तमपुर, पावट, इजरी, सलेमपुर, सलेमपुर बरजा, हेमतपुर, बाघीपाकड, बसंतपुर, भदैया, बाघाकोल, सुन्दरपुर बारजा के आसपास बिजली बाधित रहेगी। आरा शहरी फीडर सं0-3 के संकट मोचन नगर, वशिष्ठ नगर, वशिष्ठपुरी, गौतम नगर, कश्यप नगर, चंदवा मोड़, लक्ष्मीनगर, हाउसिंग, चंदवा गांव, चंदवा सूर्य मंदिर, रामनगर, गिरजा मोड़, अवधपुरी, न्यू पुलिस लाइन के पास सप्लाई प्रभावित रहेगी।

# बक्सर में गौ तस्करी का प्रयास फेल, ग्रामीणों ने एक तस्कर को पकड़ा, पुलिस ने मॉब लिंचिंग से बचाया

निज संवाददाता। बक्सर

बक्सर के बडका राजपुर क्षेत्र में ग्रामीणों की सतर्कता से गौ तस्करी का एक बड़ा प्रयास विफल हो गया। ग्रामीणों ने पिकअप वाहन में गौवंश ले जा रहे दो तस्करों को पकड़ लिया, हालांकि एक तस्कर मौके से फरार हो गया। गाड़ी से तीन गायें और एक बछड़ा बरामद किया गया। इन्हें अमानवीय तरीके से वाहन में ठूंस-ठूंस कर लादा गया था, जिससे कई गायें गंभीर रूप से घायल हो गईं। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए। गौवंश की दयनीय स्थिति देखकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश फैल गया और माहौल तनावपूर्ण हो गया।

**पशु तस्कर मॉब लिंचिंग का शिकार होते-होते बचाः** स्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि पकड़ा गया पशु तस्कर मॉब लिंचिंग का शिकार होते-होते बचा। सूचना मिलने पर तिलकराय हाता ओपी की पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आक्रोशित भीड़ से आरोपी को सुरक्षित निकालकर हिरासत में ले लिया। गिरफ्तार तस्कर की पहचान ब्रम्हानंद पासवान के रूप में हुई है। दूसरा आरोपी पुलिस को चकमा देकर फरार होने में सफल रहा। पुलिस ने पिकअप वाहन को जब्त कर लिया है।

**बक्सर स्थित आदर्श गौशाला भेज दिया गयाः** बरामद सभी गायों और बछड़े को प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर देखभाल के लिए बक्सर स्थित आदर्श गौशाला भेज दिया गया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि गौवंश की हालत बेहद गंभीर थी और समय पर कार्रवाई न होने पर उनकी जान भी जा सकती थी। इस घटना के बाद ग्रामीणों ने गश्ती पुलिस की भूमिका पर भी गंभीर सवाल उठाए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि कुछ पुलिसकर्मी पशु तस्करों को अपने क्षेत्र से सुरक्षित निकालने के लिए एस्कॉर्ट करते हैं।

**संबंध में कई बार थाना प्रभारी को सूचना दी गईः** ग्रामीणों का यह भी कहना है कि इस संबंध में कई बार थाना प्रभारी को सूचना दी गई, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उनका मानना है कि यदि प्रशासन पहले ही सख्त कदम उठाता, तो ऐसी घटनाओं को रोका जा सकता था।

**पशु क्रूरता अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की जा रहीः** मामले को लेकर तिलकराय हाता ओपी की पुलिस पदाधिकारी पूजा कुमारी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी ब्रम्हानंद पासवान के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की जा रही है। फरार आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि गौ तस्करी और पशु क्रूरता से जुड़े मामलों में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। घटना के बाद पूरे क्षेत्र में चर्चा का माहौल है और ग्रामीण प्रशासन से पशु तस्करी पर सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

## एसबी कॉलेज में एंजेल चकमा की हत्या के विरोध में सभा

निज संवाददाता। आरा

अरुणाचल प्रदेश के एंजेल चकमा की नस्लीय भेदभाव के कारण हुई निर्मम हत्या के विरोध में शनिवार को एस.बी. कॉलेज, आरा में छात्र संगठन आइसा की ओर से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में छात्र-छात्राओं ने शामिल होकर मृतक को श्रद्धांजलि अर्पित की और न्याय की मांग की। श्रद्धांजलि सभा का संचालन आइसा एस.बी. कॉलेज इकाई के सचिव साहिल अरोड़ा ने किया। जिला सहसचिव रौशन कुशवाहा ने कहा कि एंजेल चकमा की हत्या देश के लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों पर सीधा हमला है। यह केवल एक छात्र की हत्या नहीं है, बल्कि जाति, नस्ल, दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ बढ़ती नफरत और सांप्रदायिक हिंसा का भयावह परिणाम है। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान सरकारों की उदासीनता और चुप्पी ऐसे अपराधियों का मनोबल बढ़ा रही है, जिससे समाज में भय और असुरक्षा का माहौल बनता जा रहा है। रौशन कुशवाहा ने कहा कि बार-बार सांप्रदायिक और नस्लीय हमलों की घटनाएं सामने आ रही हैं, लेकिन न तो त्वरित कार्रवाई हो रही है और न ही दोषियों को कड़ी सजा मिल रही है। जब अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण मिलता है और पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता, तब हिंसा को बढ़ावा मिलता है।

आइसा जिला सहसचिव जयशंकर प्रसाद ने कहा कि 24 वर्षीय एंजेल चकमा त्रिपुरा के निवासी थे और उनके पिता सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) में जवान हैं, जो मणिपुर बॉर्डर पर देश की सेवा में तैनात हैं। उन्होंने कहा कि यह बेहद शर्मनाक है कि जो परिवार देश की सुरक्षा में लगा है, उसी देश में उनके बेटे को नस्लीय गालियां देकर बेरहमी से पीटा गया। उन्होंने बताया कि गंभीर रूप से घायल एंजेल चकमा 17 दिनों तक जीवन और मृत्यु से संघर्ष करने के बाद 26 दिसंबर 2025 को चल बसे। इस घटना की आइसा ने कड़ी निंदा करते हुए हिमाचल प्रदेश और केंद्र सरकार से मुख्य आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी और कठोरतम सजा की मांग की। सभा के दौरान मांगों के रूप में एंजेल चकमा की हत्या की निष्पक्ष, समयबद्ध और स्वतंत्र न्यायिक जांच, सभी दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी, पीड़ित परिवार को मुआवजा व सुरक्षा तथा सांप्रदायिक और नस्लीय हिंसा रोकने के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की गई।

# गोद में लहूलुहान तोते को लेकर युवक पहुंचा अस्पताल, इलाज के लिए लगाई गुहार

निज संवाददाता। आरा

बड़े अस्पतालों में आमतौर पर इंसानों की पीड़ा, इलाज और जिंदगी बचाने की जद्दोजहद देखने को मिलती है, लेकिन शनिवार को आरा शहर के मॉडल सदर अस्पताल में एक ऐसा दृश्य सामने आया, जिसने वहां मौजूद हर व्यक्ति को भावुक कर दिया। अस्पताल परिसर में उस समय सबकी नजरें ठहर गईं, जब एक युवक किसी इंसान को नहीं, बल्कि अपने पालतू तोते को गोद में उठाए इलाज के लिए पहुंचा। युवक की गोद में लहूलुहान तोता था। उसका थोड़ टूट गया था, जिससे लगातार खून बह रहा था। दर्द से तड़पते उस बेजुबान पक्षी को सीने से लगाए युवक की आंखों में गहरी बेचैनी और चिंता साफ झलक रही थी। वह बार-बार डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ से अपने तोते को बचाने की गुहार लगाता रहा। घायल तोते को लेकर अस्पताल पहुंचे युवक की पहचान घोड़ादाई गांव निवासी राजेंद्र सिंह के बेटे निलेश कुमार के रूप में हुई है। निलेश अपने पिता के साथ लंबे समय से इस तोते को पाल रहे हैं। वर्तमान में उनका परिवार आरा शहर के टाउन थाना क्षेत्र अंतर्गत शांति नगर मोहल्ले में रहता है। परिवार के अनुसार तोता उनके घर का हिस्सा बन चुका है और सभी उसे परिवार के सदस्य की तरह मानते हैं।

**डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ भी हैरानः** बताया गया कि तोता अचानक किसी वजह से घायल हो गया। थोड़ टूटने के कारण खून बहने लगा। यह देखकर निलेश घबरा गया और बिना समय गंवाए सीधे उसे सदर अस्पताल लेकर पहुंच गया। अस्पताल में यह दृश्य देखकर पहले तो डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ भी हैरान रह गए। इंसानों की भीड़ और आपात स्थितियों के बीच एक पक्षी के इलाज के लिए आया यह फरियाद सबको सोचने पर मजबूर कर गई।

**नर्सिंग स्टाफ ने भी मानवता का परिचय दियाः** निलेश की आंखों में अपने तोते के लिए जो ममता और दर्द था, उसने माहौल को भावुक बना दिया। युवक की हालत और तोते की स्थिति को देखते हुए नर्सिंग स्टाफ ने भी मानवता का परिचय दिया। प्राथमिक इलाज कर तोते के जख्म से बह रहे खून को रोका गया। इलाज के दौरान निलेश लगातार अपने तोते को सहलाता रहा, मानो वह कोई बेजुबान पक्षी नहीं, बल्कि घर का छोटा बच्चा हो।